ज़रीर बीबी

[हास्य रस प्रधान मनोरंजक उपन्यास]

ले० मिर्ज़ा अज़ीमबेग चग़ताई

अनुवादक

श्री व्यथितहृदय

प्रकाशकः—

छात्र-हितकारी पुस्तकमाला
दारागंज, प्रयाग

थम संस्करण] मई १९४० [मूल्य

प्रकाशक

बा० केदारनाथ गुप्त, एम० ए०,

प्रोप्राइटर—छात्र हितकारी पुस्तकमाला,

दारागंज, प्रयाग

मुद्रक

श्री रघुनाथप्रसाद वर्मा

नागरी प्रेस, दारागंज,

प्रयाग ।

भूमिका

मिर्ज़ा अज़ीम बेग चग़ताई का 'कोलतार' नामक हास्य-रस का उपन्यास जो अभी हाल ही में हमारे यहाँ से प्रकाशित हो चुका है; पाठकों तथा समालोचकों को इतना सुन्दर और सुरुचि-पूर्ण प्रतीत हुआ है कि सभी ने उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। आज हम उन्हीं लेखक का यह दूसरा हास्यरस का उपन्यास प्रकाशित करके पाठकों के सामने उपस्थित करते हैं। आशा है सहृदय पाठक कोलतार की तरह इसे भी पसन्द करेंगे। साथ ही पाठकों ने यदि इसे अपनाया तो यथा समय हम शीघ्र ही चग़ताई साहब के अन्य उपन्यास भी प्रकाशित कर उनकी सेवा में उपस्थित करेंगे।

—प्रकाशक

सूची

ग़रीब बीबी

पहला परिच्छेद

हमारी शरारतें

आज हम पाठकों को अपनी शरारतों का कुछ खुलासा सा हाल सुनाते हैं। कुछ अधिक दिन नहीं बीते, जब हमारे पिता ‥पुर में थे, तब हम सातवें दर्जे में पढ़ते थे, और सरकारी ‥गले में ठंडी सड़क पर रहते थे। इतवार का दिन था। सवेरे ‥ड़के ही हमारे बँगले पर दो-तीन दोस्त आ पहुँचे, जिनसे तै हो गया था कि नदी के किनारे ककड़ी खाने चलेंगे। हम लोग सबेरे सबेरे बँगले से निकले। जैसे ही बाहर निकले, कोई साहब सड़क के किनारे बैठे हुये पेशाब कर रहे थे। इसलिये सबसे पहले यह काम किया गया कि एकदम से उनके दोनों कन्धों को पकड़ कर उन्हें ज़मीन पर बिलकुल चित लिटा दिया और भाग कर यह गया, वह गया। गालियाँ तो नहीं मालूम कितनी दी थीं; किन्तु दूर से यह अवश्य देखा था, कि वे नल पर नहा रहे हैं। थोड़ा आगे बढ़े तो एक साहब बाइसिकिल पर जा रहे थे। इस लिये हम उचक कर पीछे कील पर खड़े हो गये थे। भलेमानुस हँसने लगे। हम निराश हो कर थोड़ी देर में उतर पड़े। एक दूसरे साहब मिले। उनकी साइकिल पर जब हम खड़े हुये, तब वे बहुत गुस्सा हुये। इस तरह फ़िर हमें चपत मार कर भागना पड़ा। एक और 'साइकिल

सवार' साहब तार के एक खम्भे के पास खड़े हो कर सिगरेट सुलगा रहे थे। उनके पास पहुँच कर हमने कहा, 'हज़रत, ज़रा दियासलाई की मेहरबानी कीजियेगा।' उन्होंने जब दियासलाई दी, तब हमने कहा, 'ज़रा सिगरेट दीजियेगा।' उन्होंने कहा, ऐसे उल्लू कहीं और रहते हैं। हमने दियासलाई जेब में रक्खी, और कहा, अच्छा न दीजिये। वे हमारे पीछे दौड़ः किन्तु "लाहौल बिला कूवत" कहाँ हम, कहाँ वे। हम लोग बहुत आगे निकल गये, और वे लौट गये। थोड़ी देर बाद जब हमने मुड़ कर देखा, तब वे हज़रत साइसिल पर धीरे धीरे चले आ रहे हैं। हम एक किनारे के पेड़ की ओट में छिप गये कि कहीं देख न लें। हमने देखा, कि उनके मुँह के सिगरेट के साथ जैसे ही साइकिल सामने आई, हाथ बढ़ा कर उनके मुँह से सिगरेट छीन लिया। उन्होंने जब देखा, तब झुक कर सलाम किया। वे बे-बिके हुये की तरह हमारे पीछे साइकिल रख कर दौड़े। उधर हमारे एक दोस्त ने क्या किया, कि उनकी साइकिल लेकर यह गया, वह गया। वे हमें छोड़ कर उस ओर लपके। जब हमने यह देखा, तब हम रुक गये। हमारे साथी ने कुछ दूर जाकर साइकिल ज़मीन पर रख दी, किन्तु एक छेद उसके ट्यूब में कर दिया। हम अपने दोस्तों से दूसरी सड़क पर जाकर मिल गये। दाहिने हाथ की ओर देखते क्या हैं, कि एक बहुत बड़ा मैदान दूर तक चला गया है। एक आदमी लोटा लिये हुये मैदान के बीच में चला जा रहा था। मालूम होता था, कि वह पाखाने जा रहा है। जिस बँगले

से वह आया था, वह बहुत दूर था, और नल भी वहाँ से बहुत दूर था। हम शीघ्र सड़क छोड़ कर दौड़ते हुये उसके पास पहुँचे। उसे पुकारते जाते थे, 'कि भाई ज़रा बात सुन लो।' हम हाँफते-काँपते हुये उसके पास पहुँचे। उसकी सूरत-शकल देख कर भय मालूम हुआ: क्योंकि वह तगड़ा-मज़बूत जवान था। किन्तु हम भी जान पर खेल गये कि हमारी मिहनत बेकार न जाये! उलटी-सीधी दो-एक बातें करके लोटे में हाथ मार कर गिरा दिया और यह गया, वह गया! वह बड़े जोर से हमारी ओर दौड़ा, किन्तु हमारी खुश-क़िस्मती कहिये, कि उस शक्ति ने उसको रोक लिया, जिससे रुस्तम भी हार मान गया होगा। हमने जब मुड़कर देखा तब वे हज़रत बिलकुल हारे हुये से थे। फिर तो हमने उसको मारे ईंटों के परीशान कर दिया। तात्पर्य यह कि इस काम को पूरा करके कुछ दूर गये होंगे कि देखा कि एक पहलवान साहब तह-बन्द बाँधे चले जा रहे थे। उनके पैर इस प्रकार पड़ रहे थे कि हमारे मुँह में पानी भर आया, कि काश, हम इनसे भी कुछ मनो-रंजन करते, और कम से कम इनकी मज़बूत पेंडुलियों में पैर अड़ाकर इन्हें गिराते। हमारे साथियों ने कहा कि यह हमें अवश्य मारेगा। हम इसकी सलाह नहीं देते। हमने कहा, चाहे जान जाये या रहे, हम इसको अवश्य एक टङ्गड़ी देंगे। हमारे साथी घबड़ा कर अलग हो गये, किन्तु हमने खुदा का नाम लेकर पीछे से जाकर उनके पैर में पैर इस प्रकार अड़ाया, कि वे घुटनों के बल गिरे। वहीं से पहलवान साहब जूता लेकर उठे,

और उठते-उठते उन्होंने जूता फेंक कर मारा, जो हमारी पीठ में लगा। हमने बेवकूफी की, जो मुड़कर देखा। क्योंकि आनन-फानन में हम पकड़ लिये गये, और पहलवान साहब ने मुझे एक तमाचा ऐसा मारा कि यदि हम अपने हाथ पर न रोकते तो कदाचित हमारा मुँह फिर जाता। दूसरा पड़ने ही को था, कि हमारे साथी ने उनकी सोने के काम की टोपी उनके सिर से उचक ली। वे हमें छोड़ कर उधर दौड़े, और हमारे साथी ने उनकी टोपी फेंक कर अपनी जान बचाई। बहुत उल्टा-सीधा चक्कर देकर रास्ता काटा। हम चले जा रहे थे कि एक साहब ने हमको एक दूकान से पुकारा, 'मियाँ शाहज़ादे ! ज़रा बात तो सुन जाओ।' हम जब पहुँचे, तब उन्होंने एक चिट्ठी सामने रक्खी कि यह बड़ी ज़रूरी चिट्ठी है, ज़रा पढ़ दो। हमारी तो जान ही जल उठी। हम ज़रा दूकान से हट कर चिट्ठी को फाड़कर अपने साथियों सहित ऐसे भगे, कि गालियों की मधुर और प्रिय आवाज़ भी कानों में न पहुँच सकी। कुछ और आगे पहुँचे तो देखा, कि दो आदमी आपस में लड़ रहे हैं। चूँकि हमें मंजूर नहीं था कि उनमें लड़ाई हो, हम भी लड़ाई में शामिल हुये, और बिलकुल न्याय से काम लिया कि दोनों को ढेलों से मारना शुरू किया। फल यह हुआ कि दोनों लड़ना बन्द करके हम पर हमला कर बैठे, किन्तु हम भला कहाँ हाथ आते थे। दूर से देखा कि दोनों में मेल हो गया था। क्योंकि दोनों साथ साथ चले जा रहे थे। प्यास बहुत लग रही थी। एक नल पर पहुँच कर हमने पानी

पिया। पास ही एक किताब वाले ने एक बड़ी चटाई बिछा कर दूकान लगाई थी। हमने जब ध्यान से देखा, तब मालूम हुआ कि नल से जो पानी बह कर बरबाद हो रहा है, बड़ी आसानी से एक कच्ची मुँडेर तोड़ कर इस तरह काम में लाया जा सकता है, कि वह इन किताब बेंचने वाले साहब की दूकान को तर-बतर कर दे, फौरन इसे काम में लाया गया; और हमें इसमें वह मजा आया कि कह नहीं सकता। किताब बेंचने वाले साहब अपनी किताबों को बचाने के लिये इस बुरी तरह कूद-फाँद रहे थे, कि हम कह नहीं सकते। कुछ आगे बढ़ कर हमने देखा, कि एक साक़ी साहब बहुत बड़ा हुक्क़ा लिये चले आ रहे हैं। चिलम के सिर पर मानों बे-चँदवे की टर्किश कैप रक्खी थी, और कोयले के चोटी तक भरे हुये ख़ूब दहक रहे थे। हम लोग सलाम बन्दगी करके आगे बढ़े और हुक्क़ा गुड़-गुड़ाने लगे। हमारे दूसर साथी हुक्क़े की तारीफ़ करने में लगे हुये थे; और साक़ी साहब को बातों में लगाये हुये थे। हमने आँख से इशारा किया, और एक लम्बी साँस लेकर अपने दोनों फेफड़ों की ताक़त को लगाकर ज़ोर से जब हुक्क़े को फूँका तब पानी चिलम के भीतर पहुँचा, उधर साक़ी साहब कोयलों के बुझने की आवाज़ से चिलम की ओर आकर्षित हुये ही थे, कि हम सिर पर पैर रखकर भागे। न मालूम कितनी गालियाँ सुनी। कुछ और दूर जाकर हमने पतंगबाज़ी देखी और कुछ डोर भी लूटी, जो फेंक फाँक दी। कुछ ही दूर गये थे, कि सामने से

मिस विलियम अपनी साइकिल पर आती हुई दिखाई पड़ी। यह एक लड़की थी, जो मिशन स्कूल में पढ़ती थी और हमसे बहुत डरती थी। क्योंकि हम मौक़े बे मौक़े जब कभी उसको दूर से आते हुये देखते, तब अपनी साइकिल की हवा निकाल कर खड़े हो जाते और साइकिल रोक कर उसका पम्प लेकर बड़ी देर लगाकर हवा भरते। हमने उसे इतना तङ्ग किया था, कि उसको हर जगह रोकते थे। नौबत यहाँ तक पहुँची कि एक दिन हम पकड़ कर उसके बाप के बँगले पर ले जाये गये; किन्तु वहाँ बजाय सज़ा मिलने के मेरी आव-भगत हुई, और केक खाने की नौबत आई। इस पेशी का फल यह हुआ कि मिस साहब उलटी डाँटी गईं और हमसे कहा गया कि तुम आवश्यकता पड़ने पर इनसे पम्प माँग कर साइकिल में हवा भर लिया करो। मिस साहब ने हमसे मेल इन शर्तों के साथ किया था कि वे हमको देखते ही साइकिल से इकन्नी सड़क पर डाल देती थीं, और हम केवल सलाम ही पर संतोष करते थे। हालांकि हमारे पास साइकिल नहीं थी, किन्तु हमने आगे आकर रोकना चाहा। फौरन् इकन्नी वसूल करके फौजी सलाम करके साइकिल को जाने दिया। इससे छुट्टी पाई थी, कि सामने से दो गोरे आते हुये दिखाई पड़े। वे अभी दूर ही थे कि हमने निश्चय कर लिया कि चाहे कुछ ही क्यों न हो, हम इनसे अवश्य उलझेंगे। वे जब पास आगये, तब हम स्वीकार करते हैं, कि हम डर गये और कुछ न कर सके; किंतु

थोड़ी देर के बाद जोश आया, और अपना रास्ता छोड़कर गोरों का पीछा किया। खुलासा यह कि कोई विशेष शरारत करने की हिम्मत न पड़ी। विवश होकर हमने पीछे से उन पर धूलि फेंकने ही पर सन्तोष किया और सिर पर पैर रखकर भाग आये।

खुदा खुदा करके, न मालूम कितने चक्कर काटकर, अन्त में नदी के किनारे पहुँचे। यहाँ कुछ लोग हमारा रास्ता देख रहे थे। ककड़ी के खेत, नदी के बीचो बीच, एक द्वीप में थे, और वहाँ जाने के लिये किसी नेक-महाजन ने एक नाव दान में दे दी थी। यह नाव बड़ी सी थी, और उसके दोनों किनारों पर रस्से बंधे हुये थे। एक रस्सा इस किनारे के खूंटे से बँधा हुआ था, और दूसरा रस्सा नदी के उस पार। हम लोग नाव में सवार हो गये। रस्से का दूसरा सिरा घसीट कर उस पार खेत पर पहुँचे। खेत पर पहुँच कर हमने पैसे की चार ककड़ियाँ ठहराईं, किन्तु शर्त यह तै की कि कड़ुवी होंगी तो फेंक देंगे, और दूसरी लेंगे। अतः बहुत सी मीठी ककड़ियाँ काट-काटकर फेंक दीं, और उनके बदले में दूसरी लीं; किन्तु चलते समय जब हिसाब हो चुका, तब ज़मीन से उन ककड़ियों को भी उठा-उठा कर खा गये और इस प्रकार हमें पैसे की चार की जगह पर पैसे की पांच ककड़ियाँ पड़ीं। यहाँ किनारे पर साधु भी रहते थे। और हमने बहुत सफाई से, एक बहुत अच्छे ढङ्ग का चिमटा अर्थात् आग उठाने का हस्त-कवच चुराया; और उसको कोट में

छिपा कर ले आये। लौटते समय हम लोग जब नाव पर पहुँचे, तब वह उस पार थी; 'और कुछ लोग उस पर बैठना ही चाहते थे। हम शीघ्र दौड़े और रस्सा खींचना शुरू किया। यह हमारी हद दर्जे की बदतमीज़ी समझी गई, और वे लोग गुस्से में आकर उधर से खींचने लगे; किन्तु इस रस्साकशी में हमारी जीत हुई और हम नाव पर बैठ गये। चूँकि हम इन लोगों को सज़ा देना चाहते थे, अतएव हमने रस्सा घसीट कर इस किनारे का खूँटा उखाड़ दिया, जिसका पता उनको तब लगा, जब हम ज़रा दूर से खड़े होकर तमाशा देख रहे थे कि ये लोग अब उस पार नहीं जा सकते। तात्पर्य यह कि बीसों आदमी उस पार जाने को खड़े थे; और खूँटा उखड़ जाने के कारण न जा सकते थे। यहाँ से दोस्तों की सलाह हुई कि चलो बे फसली बेदाना अमरूद के बग़ीचे में चलें, और खुलासा यह कि दो मील का सफर तै किया और बग़ीचे में पहुँच गये। बग़ीचा बहुत बड़ा था और हमने निश्चय किया कि इस पर चारों ओर से हमला करना चाहिये। अत: दो-दो, तीन-तीन की टोलियाँ बन गईं; और चारों ओर से किनारे के पेड़ों पर बिना किसी बनावट के चढ़ गये, और अमरूद तोड़ना और फेंकना शुरू कर दिये। बग़ीचे के माली की निगाह पहले हमारे ऊपर पड़ी, और वह दौड़ा। सामने वाली पार्टी ने जब देखा कि उसने मुझे देख लिया है, तब उन्होंने बड़े ज़ोरों के साथ लकड़ी से कच्चे-पक्के अमरूद झाड़ना शुरू कर दिये, और शोर मचा कर उसे अपनी ओर

आकर्षित किया। उसने देखा कि उस ओर अधिक नुकसान हो रहा है, वह उस ओर भागा, और इस ओर हम उसके पीछे-पीछे उसकी झोपड़ी पर हमला कर बैठे और जो कुछ पाया, लूट लिया। मिट्टी के घड़े फोड़ डाले, और हुक्क़ा फेंक दिया। तात्पर्य यह कि बहुत नुक़सान हुआ। वे लोग पेड़ से उतर कर भागे। जब देखा कि माली नहीं मानता, तब दूसरी पार्टी की ओर संकेत किया, कि देखो, वे अधिक नुक़सान कर रहे हैं। उसने जब मुड़कर देखा, तब बुरा हाल था। हमारी पार्टी के जवाँमर्द लकड़ियों से मार-मार कर पेड़ों को बिछाये देते थे। वह अभागा उस ओर दौड़ा कि उस पार्टी ने फिर अपनी जगह ले ली। खुलासा यह कि वह इतनी ही देर में हाँफ कर थक कर बैठ गया, और कहने लगा ख़ूब खाओ। हमने उसके कथन को पूरा किया, और आनन्द से खाकर लौट आये। लौटते समय हमें एक खेत के किनारे नारियल का एक हुक्क़ा रखा हुआ मिला। जिसका हुक़्क़ा था, वह कुछ थोड़ी दूर पर कुँये के पास था। हमने झट हुक्क़ा उठा लिया। अब मज़े में उस समय तक उससे मनोरंजन करते रहे, जब तक कि उसने काम दिया। फिर फेंक दिया। वहाँ से वापसी में हमको एक पेड़ मिला, जिस पर कच्चे कैंत लगे हुये थे। सलाह हुई कि इनको तोड़ना चाहिये। फिर क्या था? सैकड़ों-हज़ारों कैंत गिरा दिये। इतने में एक आदमी आगया। उसने बुरा भला कहा। तब हमने उसको उसी साधु वाले चिमटे से मारना

शुरू किया। हमारे साथियों ने हमारा हाथ बँटाया, और उसको वेतरह लकड़ियों से मारना शुरू किया। खुलासा यह कि उसको उधेड़ कर गिरा दिया, किन्तु मारना बन्द न किया। उसका सौभाग्य था, जो सामने से चार-पाँच आदमी हमको लट्ठ लिये, शोर-गुल मचाते हुये आते दिखाई पड़े। हम वहाँ से तीर की तरह भागे। हमारा बहुत कुछ पीछा किया गया किन्तु बेकार। वापसी में किसी नई शरारत का अवसर न मिला। अलावा इसके, कि एक खोंचे वाले की मिठाई इस प्रकार बरबाद की, कि उसके पास की नाली में इतने ज़ोर से पत्थर मारा, कि तमाम छींटे उड़कर उसके और उसके खोंचे पर पड़े। धीरे-धीरे वहाँ से ऊलन मिल कम्पनी के पास होते हुये, और मामूली शरारतें करते हुये हम यंगमैन असोशियेशन क्लब पहुँचे। वहाँ क्या देखते हैं कि फुटबाल का एक मैच हो रहा है; और बहुत ज्यादा भीड़ है। ज़ोरों से मैच हो रहा था। हमारे सभी साथी अलग हो गये थे। केवल वे ही रह गये थे, जो हमारे बँगले से हमारे साथ चले थे। हम भी थके हुये थे। अतएव मैच में जी न लगता था। बहुत तरकीबें सोचीं, कि क्या करें, किन्तु कुछ समझ में न आया। विवश होकर समय बिताने के लिये वहाँ पहुँचे, जहाँ अनगिनती साइकिलों की भीड़ थी, और सेफ्टीपिन निकाल कर पंचर करना शुरू कर दिये। खुलासा यह कि एक एक साइकिल बेकाम कर दी। इससे छुट्टी पाये ही थे, कि सोचा कि मैच खतम करना चाहिये। फुटबाल मैदान से बाहर

भी आकर गिरता था, और लड़के दौड़कर उठाकर खिलाड़ियों को वापस कर देते थे। हमने भी एक बार सेवा के इस काम को पूरा किया, किन्तु धीरे से अपने सेफ़टीपिन की नोक उसमें गड़ा दी। कठिनाई से दो किक लगे होंगे, कि दूसरा फुटबाल जो मौजूद रहता है, माँगा गया। उसका भी हमने वही हाल किया। चलिये छुट्टी हुई, दूसरा फुटबाल ही न रहा। मैच गड़बड़ होगया, किन्तु साथ ही हमारे ऊपर सन्देह-सा किया गया। हमने अच्छा समझा कि वहाँ से खिसक चलें। मैच तितर-बितर होगया, और वास्तविक आनन्द तो तब आया, जब बाइसिकिल वाले अपनी बाइसिकिल पर चढ़ कर शीघ्र ही उतरने के लिये लाचार हुये। अजीब मजा आ रहा था, सब लोग कह रहे थे, कि यह कौन शैतान था, जिसने फुटबाल को भी बिगाड़ा और बाइसिकिलों को भी। मैच से लौटकर हम अपने बँगले में जाने ही वाले थे, कि हमने देखा कि सामने के परेड के मैदान में दो साँड़ लड़ रहें हैं। यह मैदान चारों ओर से एक नीची दीवाल से घिरा हुआ है, जिस पर सीकचे लगे हुये हैं। हम उस पर खड़े होकर तमाशा देखने लगे, किन्तु कुछ लोग भीतर खड़े होकर तमाशा देख रहे थे। दूसरों के साथ ही उनमें एक मिठाई वाला भी था। साँड़ो में ऐसी रेल-पेल हुई कि खोंचे वाला दीवाल और साँड़ो के बीच में इस तरह आगया, कि उसको दीवाल पर खोंचा कन्धे पर रख कर इस प्रकार बैठना पड़ा, कि खोंचा हमारे सामने दस्तर खान की तरह लग

गया। हमने भी खूब खाया। खोंचा वाला देख रहा था, किन्तु कुछ कर न सकता था। क्योंकि शोर गुल और हुल्लड़ अधिक था, अफसोस, कि हमारी हँसी ने हमको अधिक न खाने दिया, और लड़ाई खतम होने से पहले ही हम भाग गये। चिराग़ जल गये थे कि इतने में एक साहब आये। उन्होंने कहा कि चलो खिलौनों का मेला देख आयें, जो याद नहीं कि किस मंदिर के हाते में होता था। हमने पहले तो इन्कार किया, लेकिन फिर जाना पड़ा। परेड के मैदान से होते हुये उसके दूसरे फाटक पर निकले। देखा कि एक आदमी कपड़े की दूकान लगाये हुए है। इस दूकान की दीवालें उसने चादरें तान कर कपड़े ही की बनाई थीं, और कपड़े ही की छत बनाई थी। हम उसके पीछे के होकर निकले, कि हमको एक छोटा सा ठेला दिखाई पड़ा, जिस पर इन कपड़ों को वह घर से लाद कर लाया था। हमने शीघ्र ठेले को दूर ले जा कर ज़ोर से दौड़ा कर दूकान की पीठ में इतने ज़ोर से रेला, कि वह कपड़े की दीवाल को तोड़ता हुआ दूकान के भीतर इस तरह घुस गया. कि सारी दूकान गिर गई। भीतर से दो आदमियों के चीखने की आवाज़ आई। किन्तु हम भाग गये। अब हम ट्राम की पटरी-पटरी जा रहे थे। सोचा कि लाओ ट्राम की पटरी पर ईंट रक्खें, देखें क्या होता है। फ़ौरन रख दी, और अस्पताल के पीछे की ओर खड़े होकर तमाशा देखने लगे। इतने में एक ट्राम ज़ोर से आई और ईंट पर आकर बड़े झटके

से रुकी। ट्राम वाले ने शोर मचाया और एक सिपाही दौड़ा हुआ आया। लोगों ने इधर-उधर देखा और एक शैतान ने न जाने हम लोगों की ओर कुछ सन्देह से—उँगुली उठाई, या इसलिये, कि हमलोग अस्पताल की दीवाल फाँदकर भागे, और हमारे पीछे कानिसटेबुल दौड़ा। हम अस्पताल के कम्पाउण्ड में अँधेरे में बे-तहाशा भागे और बदक़िस्मती से ठोकर खाकर गिरे और पकड़े गये। कानिसटेबुल ने बुरी तरह हमको घसीटा और डाँटा और पकड़ कर ले चला, किन्तु हम भला कब हिलने-डुलने वाले थे। वहीं पसर गये। वह हमारा नाम और पता पूछता था और हम बता कर शीघ्र छूट सकते थे। किन्तु इसमें डर था कि घर पर मरम्मत होगी।

अतः हमने न बताया। इतने में हमारी फौज आगई और हमने इतमिनान से देखा कि हमारा साथी पीछे से कानिस-टेबिल पर हमला कर बैठा, और साफा झटक कर चलता बना। कानिसटेबुल का उस ओर मुँह करना था कि हमने झटका देकर हाथ छुड़ाया और यह गया, वह गया। हमारा साथी भी थोड़ी दूर चल कर हमें मिला। वह साफा फेंक कर आया था। हम लोग सीधे अपने मन्दिर की ओर चले। रास्ते में देखा कि एक खोंचे वाले ने एक नौजवान मज़दूर को पकड़ रखा है, और हुज्जत हो रही है। हम झट आ पहुँचे, और उसमें मुनासिब दखल दिया। हमने खोंचे वाले को बड़ी बुरी तरह डाँटा कि हमारे नौकर को छोडो, क्यों पकड़े हो, यह हमारा आदमी

है। उसने कहा कि मुझको उससे पाँच आने पैसे लेने हैं। हमने झट कहा, इसके ज़िम्मेवार हम हैं, इसको छोड़ दो। वह छूटते ही भागा, और इधर हम भी चल दिये। मन्दिर के हाते में पहुँचे। बड़े ज़ोर से मेला लगा हुआ था। वह धकापेल थी कि खुदा की पनाह। सबसे पहले यह निश्चय हुआ कि कचालू और सोंठ के बताशे खाये जायँ। अतः ख़ूब उससे शौक़ किया। इसके बाद उसी जगह बैठ कर मिठाई की ठहरी। हम रुपया लेकर एक साथी के साथ मिठाई लेने के लिये गये, और बाकी दो को वहीं छोड़ा। हर दूकान पर पहुँच कर हर प्रकार की मिठाई चक्खी और वह भी इस तरह कि अन्त में उन्होंने चखाने से इनकार कर दिया। हमने बंगाली मिठाई पसन्द की। यद्यपि हमारे साथी काश्मीरी ब्राह्मण थे, किन्तु दूकानदार हम दोनों को भंगी समझता था, और उसने कहा, अलग खड़े हो। हमको बुरा मालूम हुआ। उसने हमारी माँग के मुताबिक सेर भर मिठाई तौली, और हाथ में न देकर हमसे कहने लगा, 'हाथ फैलाओ, हमने हाथ फैला दिये', उसने दूर ही से मिठाई का दोना हमारे हाथ पर छोड़ा। हमने झट हाथ ढीले कर दिये, और मिठाई का दोना नीचे गिर पड़ा। हम झट गरज कर दूकानदार पर बरस पड़े, और उधर वह दूकान से नीचे उतर पड़ा, कि अपने पूरे दाम ले लूँगा। पूरा फसाद खड़ा हो गया। किन्तु हमें न दाम देने थे, न दिये। दूसरी जगह से मिठाई खरीदी, और खाकर पान वाले की दूकान पर पहुँचे। यह पीन

की दूकान भी देखने योग्य थी। पान वाला मुख्य दरवाज़े के बाईं ओर आदमी के क़द की ऊँचाई पर एक मचान बाँध कर बैठा था, और उसने दूकान को ऐसा सजाया था कि, लोग उसी दूकान पर टूटे पड़ते थे। पानवाले साहब अपने आप को न जाने क्या समझे हुये थे। दूकान पर बीसों रङ्ग-विरङ्ग की बोतलें और सजावट का सामान, बड़ी ऊँचाई तक चुना हुआ चला गया था। कपड़े की छत लगाई थी, जिसमें छोटे छोटे फानूस लटके हुये थे। बहुत सी तसवीरें चारों ओर लगी थीं। पानवाड़ी साहब के हाथ में एक छड़ी थी, जिसे वे हर ऐरे-गैरे लड़के को रसीद करते थे, जो उनके मचान के खम्भे के पास आ जाता था। हमको यह बहुत बुरा मालूम हुआ, और हमने उनसे कहा कि ऐसा क्यों करते हो, तो उन्होंने कहा, कि साहब समय नहीं था। यह बाँस का मोटा खंभा, जिस पर कि मचान रुका हुआ है, ज़मीन पर योंही रुका हुआ है, और मुझे डर है, कि कहीं धक्का लग कर सारी दूकान की दूकान नीचे न आ पड़े। हमने कहा कि यह तो ज़मीन में गड़ा हुआ है, भला कैसे गिरेगा? उन्होंने कहा कि साहब गड्ढा खोदने का समय ही नहीं मिला। यह योंही रक्खा हुआ है, और फिर खूबी यह कि मचान के तख्ते में बँधा भी नहीं है, इसलिये मुझको बहुत डर है।

अब पान खाकर हमने जब दोस्तों से सलाह की, कि भाई, बोलो क्या राय है? इस पान वाले की दूकान क्यों न गिराई जाय? तब इस पर हमारे किसी साथी ने हामी न भरी।

दूकान क्या थी, पूरा ताजिया था। मचान पर आराम और टाट वाट के इतने सामान थे, कि तिल धरने की जगह नहीं थी, और भीड़ यहाँ इतनी थी कि पकड़ा जाना निश्चय था; किन्तु हमने कहा कि चाहे कुछ भी हो, हम इस काम को अवश्य करेंगे। हमारे साथियों ने कानों पर हाथ रक्खे। हमने भागने का रास्ता इत्यादि बड़े ध्यान से देखा, और घूम-फिरकर उस जगह पहुँचे, जहाँ हाते की छोटी सी कच्ची दीवाल थी। यह जगह अलग-सी थी। हमने साथियों के साथ दो-तीन घंटे सैर की, और फिर अपने काम की ओर ध्यान दिया। घूमते-फिरते दूकान के पास आकर हमने हिम्मत करके भीड़ के दबाव में खम्भे से लग कर जब डण्डे को घसीटा, तब एक ज़ोर का शोर-गुल हुआ, और दूकान छत के सजावट के सामान, पान वाले, और बोतलों के साथ नीचे आ पड़ी। कत्थे और चूने की कुल्लियाँ सब एक हो गईं, और गज़ब यह हुआ, कि वह बरतन भी गिरा, जिसमें पान वाला पैसे रखता जा रहा था। पैसे जब भीड़ में गिरे, लोगों ने हाथ लगाना शुरू कर दिया। हमको इस में भागने का अवसर मिल गया, और इस शोर-गुल में हम अपने दोस्तों सहित दीवाल फाँद कर गली में कूद कर इस बुरी तरह भागे, कि न जाने कहाँ आकर निकले! हमको पकड़े जाने का बहुत ही डर था, क्योंकि दरवाजे पर जो कानिसटेबुल था, उसने हमको शरारत करते हुये कदाचित् देख लिया, और आश्चर्य नहीं कि हम पकड़ लिये जाते, यदि कहीं दूकान न लुटने लगी होती!

रात काफी हो गई थी। और हम, नहीं मालूम किस जगह थे, जहाँ हद से अधिक सन्नाटा था। लोग जगह-जगह चारपाइयों पर सड़क के किनारे सो रहे थे। एक लाला एक बीच मोड़ पर नंगे बदन पलंग पर इस तरह तोंद फैलाये लेटे हुये थे, कि हमको लाचार होकर अपना सिगरेट, जो खतम होने के क़रीब था, उनके पेट पर रख देना पड़ा। वे ऐसे तड़प कर पेट पीटते हुये उठे, कि हमको आनन्द ही आ गया और हम भाग कर दूसरी जगह पहुँचे। कुछ आगे पहुँच कर हमने एक चारपाई सोने वाले के सहित उलटी, और घर लौटने से पहले हमने एक और नंगे बदन सोने वाले के पेट पर जलता हुआ सिगरेट रख कर बहुत अच्छा तमाशा देखा। अधिक रात बीते घर लौटे। चूँकि सबेरे हम घर से छुट्टी माँगकर नहीं गये थे, इसलिये दूसरे दिन केवल यही जुर्म हमारे ऊपर लगाया गया कि, दिन भर क्यों गायब रहे ? इसके बदले में हमारा दिन का खाना बन्द किया गया, और हमें विवश होकर अपने पंडित दोस्त के यहाँ खाना खाना पड़ा।

दूसरा परिच्छेद

शरीर लड़की

हम एन्ट्रेन्स में पढ़ रहे थे और एक कौमी स्कूल के बोर्डिंग में रहते थे। बोर्डिंग से कुछ ही दूर पर एक मकान था जो बोर्डिंग से स्कूल और हाकी खेलने के फील्ड में जाने के रास्ते में पड़ता था। इस मकान में एक सय्यद साहब रहते थे, जो कचहरी में नौकर थे। सड़क से कुछ हट कर मकान की एक खिड़की थी जिसमें लोहे के छड़ लगे थे और किवाड़ भी लगे थे। ये किवाड़ हमेशा बन्द रहते थे। एक दिन की बात है कि हम उस खिड़की के नीचे खड़े होकर अपने एक दोस्त से बातें कर रहे थे, कि हमको खिड़की के उस ओर कुछ आहट मालूम हुई। हमने ध्यान से देखा तो एक सूराख से एक आँख का भाग दिखाई पड़ा। ऐसा मालूम होता था कि कोई झाँक रहा है। हम भी उस ओर देखने लगे कि आँख उस सूराख के सामने से छिप गई। हमको जो शरारत सूझी, तो हमने गली को सूनी पाकर अपने दोस्त का सहारा लेकर उसी सूराख से अपनी भी आँख लगा दी, किन्तु अब वहाँ वह आँख न थी। सूराख में से मकान के भीतर का भाग साफ-साफ दिखाई पड़ा। यह खिड़की

दालान में थी। दालान के बीच में एक नवजवान लड़की खड़ी उस सूराख की ओर देख रही थी। यह लड़की ऐसी थी कि हमको बहुत अच्छी मालूम हुई और हम उसको देख रहे थे। ऐसा मालूम होता था, कि उसने समझ लिया कि हम सूराख में से झाँक रहे हैं। अतः वह सामने से हट गई। हम प्रतीक्षा कर रहे थे कि फिर सामने आये। आँख खोले हुये देख ही रहे थे कि उसी छोटे सूराख पर किसी ने मुट्ठी भर कर धूल झोंक दी, जो सब की सब आँख में पड़ी और हम बेचैन होकर गिर पड़े। हमारे दोस्त जो चश्मा लगाये हुये थे, उन्होंने जब पंजों के बल खड़े होकर देखा, तब उनके साथ भी यही व्यवहार हुआ, और उन्होंने देख लिया कि यह शरारत उसी लड़की की थी; किन्तु चूँकि वह चश्मा लगाये हुये थे, अतः उनकी आँख के भीतर कुछ न पड़ा। हमारी आँख दिन भर गड़ती रही, और हमसे क्लास में पढ़ा न गया। यद्यपि उस शरीर लड़की पर बहुत ही क्रोध आ रहा था, किन्तु साथ ही हमको वह पसन्द भी थी, और विशेषतया उसका वह स्वाभाविक ढंग।

लौटते समय हमने फिर झाँका। और उसने फिर हमारी आँख में मिट्टी डालने की कोशिश की, किन्तु हम सावधान थे और बच गये। ऐसा मालूम होता था कि स्कूल की घंटी की आवाज़ सुनकर वह खिड़की के पास आगई थी। अब भविष्य के लिये हमने दैनिक नियम बना लिया, कि अवश्य अवश्य सूराख में से झाँकते, और आँख में धूल डलवाते। जब यह

प्रतिदिन का नियम होगया, तब हमने केवल इसीलिये तीन आने का चश्मा खरीद लिया, किन्तु उसको इस बात का पता लग गया। क्योंकि एक दिन उस चुलबुली ने हमारी आँख में छतरी की लोहे की लम्बी सलाख इस तरह भोंक दी, कि हम अन्धे होते-होते बचे और हमारे चश्मे का शीशा फूट गया। किन्तु हम भी बाज़ न आये। उसने हमारे इस हठ को देखकर एक दिन धीरे से जैसे निज से कहा, "आँखें फोड़े बिना न मानूँगी।" हमने क्रोध में आकर कहा कि "हम तुमको देखने से बाज़ न आयेंगे।" इस लड़की से यह हमारी पहली बात-चीत हुई।

२

हमारे घर से हलुये का पारसल आया हुआ था, और हम जेब में डाले हुये दिन भर खाते रहे। नियमानुसार हमने आकर झाँका और उसने हमारी आँख में धूल झोंकी। हमने जवाब में कहा, "ले हलुआ खा।" यह कहकर हलुये का टुकड़ा, जो मुलायम था, सूराख के ऊपर रख कर ज़ोर से दबा दिया। सूराख बिलकुल गोल न था, किन्तु कम से कम और ज्यादे से ज्यादा दुअन्नी बराबर था। अतः काफी हलुआ पहुँच गया। हम थोड़ी देर बाद चले आये। नहीं पता, उसने हलुआ खाया या नहीं।

दूसरे दिन जब हम पहुँचे, और झाँककर देखा तब कोई न था। हमने खिड़की पर हाथ मारा तो क्या देखा, कि लपकी

हुई आ रही है, और झट से उसने मुट्ठी भर राख जमीन से उठाई। हम भी होशियार हो गये, और वार खाली गया। शीघ्र ही हमको सूराख से कोई सफेद चीज़ पतली सी निकलती हुई मालूम हुई। हमने पकड़ कर जो घसीटा, तो खोये की लम्बी-लम्बी बत्ती सी थी। हमने झट चक्खा और उसको पेड़े के स्वाद का पाया। हमने कहा, इससे अच्छा तो हमारा हलुआ ही था।" लड़की ने कहा, "किसने बनाया था।" हमने झट कहा, हमारी अम्माजान ने बनाया था। घर से आया था।" तीन दिन बाद फिर उसी सूराख से एक दिन उसी ढङ्ग की खोये की लम्बी सी बत्ती निकली, और हमने लेकर झट मुँह में रख ली। दो ही तीन दाँत चलाये होंगे, कि गले का भीतरी भाग तक कड़ुआ होगया, और हमको थूकना पड़ा। उस चुलबुली लड़की ने उसमें कुनैन मिलाकर बेवकूफ बना दिया। कुछ दिनों तक इसी प्रकार नई-नई भेटों का हेर फेर होता रहा। किन्तु उस जालिम की आंख में धूल डालने की आदत न गई। एक दिन जब हम आये, तब खिड़की की कुन्डी खुली, और किवाड़ थोड़ा सा खुला, और उसके बीच में से खीर का एक प्याला बाहर निकला। हमने झट ले लिया, और चखते हुये बोर्डिंग चले आये। हमारी इस अनोखी दोस्ती का पता किसी को न था और काफी दिन तक इसी तरह हमारा मिलना-जुलना जारी रहा। एक दिन हमने पूछा, "क्या तुम्हारे घर में कोई नहीं है?" तो उसने कहा, बस, बीमार माँ के अलावा कोई

नहीं है।" हम अपना नाम पहले ही उसको बता चुके थे, किन्तु उसने अपना नाम हमें न बताया था। कुछ दिनों बाद हमारे घर से मेवे का हलुआ आया, और हमने सोचा, कि हम उसको अवश्य खिलायेंगे। अतः हमने उससे खिड़की खुलवाकर एक कागज़ में लपेट कर रख दिया, जिसे उसने खुशी के साथ स्वीकार कर लिया।

३

हमारा उससे पान के लिये बड़ा तक़ाजा रहता था। एक दिन उसने कहा कि 'हम तुमको पान खिलायेंगे।' अतः वादे के मुताबिक उसने खिड़की खोली। सामने हमको कुछ दिखाई न पड़ा। हमने भीतर हाथ फैला दिया, और उसने हाथ पर पान रख दिया। हमने सलाम करके खा लिया, कि इतने में उसने कहा, कि "इलायची खाइयेगा।" हमने 'नेकी और पूछ पूछ" कहकर हाथ फिर भीतर डाल दिया, किन्तु इस बार उस ज़ालिम ने हमारी हथेली पर एक दहकता हुआ अंगार रख दिया। हम व्याकुल होगये, और तड़प उठे, और हाथ झट बाहर निकाल कर झटका। उसका हँसी के मारे बुरा हाल था, और यहाँ तकलीफ के मारे आँसू निकल पड़े। क्योंकि वह ऐसा दहकता हुआ था, कि हथेली के चमड़े से चिपट कर रह गया था, और दो-तीन झटके देने पर गिरा था। दो दिन हम क्रोध के मारे न आये, किन्तु तीसरे दिन हमारा क्रोध जाता रहा।

हम फिर आये, तो उस शरीर लड़की ने हमसे फिर कहा, कि "इलायची खाइयेगा।" किन्तु इस बार हमको गुस्सा न आ कर हँसी आई। काफी दिन तक हमारी मुलाकात इसी प्रकार जारी रही; किन्तु कभी हमने इस प्रकार की हँसी-दिल्लगी को छोड़कर और कोई बात न की, और न उसको कोई पत्र लिखा। हाँ, यह अवश्य रोज़ लगभग कहते थे कि, "तू हमारी कौन है।" चूँकि उसका उसके पास कोई उचित जवाब न था, इसलिये वह कभी कुछ कह देती थी, और कभी कछ कह देती। किन्तु प्रायः यह कहा करती थी, कि तेरी बहन हूँ, जिसका हम तीव्र विरोध करके कहते कि बहन नहीं, बल्कि कुछ और हो।

एक दिन हमारी सहेली ने हमसे कहा, कि "देखो तुम्हारे साथी भी कितने कमीने हैं।" यह कहते हुये उसने कागज़ की एक बत्ती सूराख से बाहर की। हमने उसको लेकर पढ़ा तो हमको बड़ा रञ्ज हुआ। यह हमारे स्कूल के एक लड़के का पत्र था, जिसमें दुनिया भर का प्रेम का हाल और रुपये-पैसे के लालच के किस्से लिखे हुये थे। हमने कहा कि हम इसके हरगिज जिम्मेदार नहीं। उसने कहा, "यदि कहो तो मैं इसको कुछ सजा दूँ और उल्लू बनाऊँ।" हमने सहमति दी। हमसे उसने कहा, कि तुम मेरी ओर से अपना अक्षर बदल कर एक पत्र लिख लाओ। उस पत्र में दूसरी बातों के अलावा यह अवश्य लिखना, कि यदि आप मुझको इस समय दस रुपये कर्ज दे सकेंगे, तो कृतज्ञ हूँगी।" हम बोर्डिङ्ग आये और हमने बहुत ही

विचार पूर्ण शब्दों में पत्र के लिये कृतज्ञता प्रकट करते हुये दस रुपये की आवश्यकता प्रकट की, और नीचे नाम इत्यादि लिखने वाली का न लिखा। बल्कि केवल 'लफ्ज़ फक़त' लिख दिया। हमने जाकर पत्र सूराख से अपनी साथिनी को दिया। उसने पढ़कर बहुत पसन्द किया, और कहा, कि इसको दरवाजे की चौखट के पास ईंट से दबाकर रख दो, जैसा कि उन्होंने अपने पत्र में लिखा था। उन्होंने चालाकी, या बेवकूफी से अपना नाम नहीं लिखा था; किन्तु पत्र की इबारत से पता चलता था, कि हमारे साथी हैं। क्योंकि बोर्डिङ्ग और स्कूल की चर्चा थी। हम इस फिक्र में थे कि किसी प्रकार हमको नाम मालूम हो तो अच्छा है, और इसीलिये हमने वह पत्र अपने पास रख लिया कि कदाचित् लिखावट से हम नाम का कुछ पता लगाने में सफल हो जायें।

तीसरे दिन हमारे दोस्त ने हमको खिड़की से दस रुपये का नोट दिया, और कहा, कि "उल्लू फँस गया।" हमने कहा, हमको नोट नहीं चाहिये। इसका जवाब हमको यह मिला, कि इसको रख लो, मैं नहीं रक्खूंगी। हमने नोट रख लिया, और परिणामतः हमने और हमारे दोस्त ने बड़े आनन्द से महीने भर तक मेवे खाये।

इस बीच में हमने कोशिश करके यह भी पता लगाया कि हमारी सहेली के बेवकूफ प्रेमी कौन हैं। हमने उनको अपनी शरीर सहेली से षडयन्त्र करके इस बुरी तरह लूटा कि वे बोर्डिङ्ग

के बहुत से लड़कों के कर्ज़दार हो गये और इस तरह कि प्रेम को विदा करने पर लाचार हो गये।

(४)

हालाँकि इस लड़की की और हमारी बड़ी गहरी दोस्ती हो गई थी, किन्तु वह हमारे साथ शरारत करने से न चूकती थी। एक दिन तो उसने हमारी उँगुली में, जो हमने शरारतवश सूराख में डाल दी थी, ऐसा काटा कि उसमें दांतों के निशान बन गये, और वह सूज गई, और फिर यह जुल्म ढाया, कि तीसरे दिन जब हम नाराज़ होकर फिर लौटकर उस जालिम को उँगुली दिखाने आये, तब उसने उसमें इस प्रकार सुई भोंक दी, कि हमने ज़ोर से जो हाथ झटका, तो सुई की नोक उँगली में टूट कर रह गई। हम जल कर लौट आये और वह पहले ही की भाँति हँसती हुई चली गई। हमारी उँगुली में सख्त दर्द हुआ, और शाम तक सूज आई। रात भर हम तड़पते रहे, और उस ज़ालिम को दुआयें देते रहे। तीसरे दिन ऐसा बुरा हाल हुआ, कि उँगली बिलकुल फोड़ा हो गई। एक दिन हम इसी बीच में गये, और अपना हाल सुनाया, किन्तु उसके दिल पर कुछ असर न हुआ। उसने यही कहा, कि "अच्छा हुआ।" नौबत यहाँ तक पहुँची, कि हमारी उँगुली पक गई और चीरी जाने को हुई। अस्पताल जाते समय हम यह कहते गये कि तू ने हमारी उँगुली का यह हाल कर दिया है। हम कभी अब तेरे पास न आयेंगे और यह कहकर उँगुली खोल कर जो दिखाई, तो वह घबड़ाई, और

कहने लगी, कि 'माफ़ करना, मुझको नहीं मालूम था कि तुम्हारी उँगुली का यह हाल है।" किन्तु हम यह कह कर चले आये कि "हम अब तुम्हारे पास न आयेंगे।"

खुलासा यह, कि हमारी उँगुली पन्द्रह बीस दिन में अच्छी हुई, और इस बीच में हम खिड़की के पास तक न गये। दो एक बार जब हम उधर से निकले, तब उसने हमको आकर्षित करने के लिये खिड़की पर हाथ भी मारा; किन्तु हम चूँकि वास्तव में नाराज़ थे, हमने कुछ भी परवाह न की। एक दिन हम जा रहे थे कि सूराख में से कागज़ की बत्ती दिखाई पड़ी। हम लेते हुये चले गये। यह पहला पत्र था, जो उसने मुझको लिखा या। इसमें आदाब-अलकाब इत्यादि कुछ भी न थे। केवल यह लिखा था, कि माफ कर दो। भविष्य में सुई कभी इस प्रकार न चुभोऊँगी कि उँगुली पके, बल्कि धीरे से चुभोऊँगी।" हमको शरारत से भरी हुई इस दरख़्वास्त को पढ़ कर हँसी आ गई। खुलासा हाल यह कि हम पहुँचे, और अपनी उँगुली, उस शैतान को दिखाने के लिये, सूराख में डाली। उसने देख-भाल कर फिर सुई उसमें चुभोदी। किन्तु वादे के मुताबिक इस तरह धीरे से चुभोई, कि हमको अधिक कष्ट न हुआ। किन्तु उसकी शरारत का क़ायल हो जाना पड़ा। हमारी और उसकी दोस्ती की हद बस, यहीं तक थी कि हम अपने घर के क़िस्से, जब वह पूछती, तब बताया करते, या वह स्वयं अपने घर की बातें बताया करती। खिड़की, चूँकि ऐसे स्थान में थी, जो सड़क से कुछ अलग स्थित था, और सुनसान

सी जगह थी, अतएव हमें हमेशा काफ़ी मौका मिलता था कि खूब बातें करें। बाप की चूँकि इकलौती लड़की थी, इसलिये बाप उसको बहुत प्यार करता था और वह अधिकतर अपने बाप ही के क़िस्से सुनाया करती थी।

हमारे इम्तहान का समय क़रीब आया, तो हमारे लिये उसने बद-दुआयें माँगी, जिससे कि हम फेल होकर यहीं रहें। अन्त में वह दिन आया कि हम इम्तहान देकर जाँये, और पास होने पर कदाचित् इस शहर में कभी न आँयें। हमने उसको जब 'खुदा हाफिज़' कहा, तब उसने प्रभावित होकर हमसे केवल इतना कहा, कि "हमारी शरारतों को भूल जाना। किन्तु हमको न भूलना।" हम चले गये, किन्तु हमको यह वाक्य याद रहा।

५

जब हम पास हो गये, तब अलीगढ़ जाने का निश्चय हुआ। कालिज में दाखिले से पन्द्रह दिन पहले ही हम चल दिये। क्यों कि हमको हेडमास्टर साहब से सार्टीफिकेट लेना था, कि हम बड़े अच्छे खिलाड़ी हैं, और होनहार और अच्छी चाल-ढाल के लड़के हैं। जिस दिन हम आये, उसी दिन खिड़की के पास पहुँचे और खिड़की पर हाथ मार कर अपने दोस्त को बुला कर सलाम किया। हमारी सखी बहुत प्रसन्न हुई और उसने कहा, कि इतने दिन बाद आये हो, जरा उँगुली तो लाओ, जिससे मैं तुमको सज़ा दूँ।" हमने उँगुली सूराख में डाल दी, किन्तु चूँकि उसके पास उस समय सुई इत्यादि न थी, उसने केवल चुटकी पर सन्तोष

किया। थोड़ी देर तक बातें करते रहे। चलते समय उसने हमसे विचित्र ढङ्ग से यह कहा, कि मैंने आज तक तुमसे किसी काम के लिये नहीं कहा, किन्तु अब मेरा एक काम है।" मैंने कहा, "वह क्या" तो उसने कहा, "शाम को आना।" हम पहुँचे तो उसने सूराख में से एक रुक्क़ा दिया। हमने जब रुक्के को पढ़ा, तब उसमें संक्षेप रूप में यह लिखा था, कि "जज साहब की कचहरी में, जहाँ उसके बाप काम करते हैं, जाकर चुपके से किसी प्रकार मुंशी हामीद अली को देख आओ और मुझको स्पष्ट बताओ कि वे कैसे आदमी हैं।" हम कुछ पूछे, उसके पहले ही वह खिड़की से जा चुकी थी, जो हमको बहुत ही विचित्र मालूम हुआ। क्योंकि हम जब तक चले न जाते, वह कभी नहीं जाती थी। हम विचित्र हैरानी में थे, कि "इलाही, माजरा क्या है।" पहली बार हमने अब कमज़ोरी अनुभव की।

दूसरे दिन हम जजी कचहरी पहुँचे और पता लगा कर मालूम किया, कि ये हज़रत मुंशी हामिद अली कौन हैं? अजीब रङ्ग-ढङ्ग के आदमी थे। हमने देखा कि मानों चिड़ी का बादशाह बैठा है, जिसकी दाढ़ी बुरे प्रकार के खिजाब के कारण विभिन्न रङ्ग उपस्थित कर रही है। चेहरे पर झुर्रियाँ ऐसी पड़ी हैं, कि प्याज़ का भ्रम होता है। हम दरवाजे पर खड़े देख ही रहे थे कि ये हजरत खाँसते हुये बाहर निकले, और हमारी जानकारी में इतनी और वृद्धि हुई कि इन हज़रत को दमे की बीमारी भी है। हम देखभाल कर चले आये, और ये सब बातें अपनी प्यारी सखी

को बताकर कारण पूछा। शरारत भरी बातें न करके वह चुप थी। हम आश्चर्य में थे, कि उसने हमसे कहा, कि "मुझको तुम इस मुसीबत से बचाओ।" हमको सन्देह तो पहले ही हो गया था, कि कुछ दाल में काला है। अब हम वास्तविक बात समझ गये। हालाँकि हमको कोई कारण न था, कि दुख हो; किन्तु न जाने क्यों हम अपने आप अधिक चिन्तित हो गये, और हमने भी हँसी-दिल्लगी को विदा करके बहुत ही गम्भीरता से पूछा, कि "क्या सभी बातें तै हो चुकी हैं।" इस पर उसने कहा, कि "तारीख तक नियत हो गई है, और अब केवल डेढ़ महीना रह गया है।" हम वचन देकर आये कि यदि हमारी जान में जान है, तो हम तुमको इस मुसीबत से बचायेंगे; किन्तु चलते समय शरारत के उद्देश्य से हमने इतना अवश्य कह [illegible]या, कि "चिड़ी के बादशाह तुमको सलाम कहते थे।" किन्तु व[illegible] तो मज़ाक ही विदा हो गया था।

हम घर आये तो विचित्र उधेड़ बुन में थे। बु[illegible] काम न करती थी कि आखिर क्या करें। एक अनजान शहर, [illegible]हाँ हम विद्यार्थी की हैसियत से रहते थे, और न किसी को पह[illegible]ान[illegible] थे। दूसरी बार जब हम मिलने आये, तब हमने स्वीकार किया कि हमारी बुद्धि काम नहीं करती कि किस प्रकार मदद करें। तीसरे दिन परेशान होकर हमने यह सलाह दी कि तुम अपने बाप से क्यों न साफ साफ किसी से कहलवा दो। किन्तु यह कहना भी मानों ज़ुल्म था। उसने कहा, कि मैं मरना अच्छा समझती हूँ।" उसने

चलते समय हमसे यह कहा कि "तुम यदि कुछ न कर सको तो इतना अवश्य कर देना कि जब जाने लगो, तब मुझको बाज़ार से ज़हर ला देना।" मैं सन्नाटे में आ गया, कि इलाही, क्या करूँ, जो उसको इस मुसीबत से निकालूँ। जब हमारे जाने में थोड़े ही दिन रह गये, तब हमको एक उपाय सूझा।

६

हमने अपना सबसे अच्छा सूट निकाला, और कालर और टाई से दुरुस्त होकर जन्टिलमैन बन कर दूसरे ही दिन सवेरे जज साहब, मिस्टर क्लार्क, के पास पहुँचे। जज साहब ने नाश्ते के बाद बुलाया। हम बड़े क़ायदे के साथ सलाम करके बैठ गये, और हमने जज साहब से कहा कि हम आपके पास एक ऐसे काम से आये हैं, जो आप को करना पड़ेगा और आपका कर्त्तव्य है।" जज साहब ने आश्चर्य में आकर पूछा, तो हमने उनसे यह कहा, कि "आपके दफ्तर में कोई मुन्शी हामिद अली हैं। आप उनको जानते हैं।" जज साहब ने कहा, "हम जानते हैं," और उनका हुलिया बताया। हमने कहा, "वे हज़रत आप ही के दफ्तर के सय्यद ज़ामिन अली की पन्द्रह वर्षीया लड़की से शादी करना चाहते हैं। आपको यह शादी, हर प्रकार से अपना प्रभाव डालकर रुकवा देनी चाहिये।" जज साहब ने आश्चर्य में आकर हम से पूछा, कि "तुम कौन हो, जो इस सम्बन्ध में दख़ल देते हो, इसका जवाब हमने यह दिया कि हेड मास्टर

साहब का दिया हुआ चाल-चलन का सार्टीफिकेट पेश किया और फिर कहा, हम इस मामिले में पड़ने वाले कोई भी नहीं। किन्तु सिर्फ क़ौम की बुरी हालत को देखते हुये हम आपके पास आये हैं। जज साहब ने हमारी पीठ ठोंकी और हमसे कहा, "कल हमारे पास आना।"

मुंशी हामिद अली साहब, चूँकि छः महीने बादही पेन्शन पाने वाले थे, और स्वयं दूल्हा की हैसियत रखते थे, अतएव उन्होंने तो जज साहब को साफ जवाब दे दिया, कि "साहब ! इस मामिले से आपको क्या मतलब ?" किन्तु सय्यद ज़ामिन अली साहब जो उम्र में अपने निर्वाचित दामाद से बहुत छोटे थे, और उनको अभी बहुत दिन तक नौकरी करनी थी और जज साहब के ज़रा क़लम हिला देने से बर्खास्त हो सकते थे, लाचार हो गये। बड़ी बुरी तरह डाँटे गये। जज साहब ने उनसे साफ कह दिया कि यदि तुमने शादी कर दी तो मैं तुमको एक क़लम बर्खास्त कर दूंगा। सय्यद साहब ने यह उज्र किया कि साहब मैं लड़की की शादी जल्द करना चाहता हूँ, क्योंकि वह जवान होगई है, और यह सम्बन्ध मैं केवल इस लिये कर रहा हूँ कि लड़की आराम से रहेगी। क्योंकि मुन्शी हामिद अली साहब के पास जायदादें हैं, और दूसरी जगह मुझको कोई दिखाई नहीं पड़ती। जज साहब ने उसका जवाब दिया कि "हम तुम्हारी लड़की की शादी करा देंगे।"

दूसरे दिन हम जज साहब के बँगले पर हाजिर हुये, और

यह सुनकर हमारी प्रसन्नता की सीमा न रही कि हमारे मन की मुराद पूरी हुई। जज साहब ने फिर स्वयं ही हँस कर पूछा कि "तुम उस लड़की के साथ शादी करने के लिये तैयार हो या नहीं। न जाने क्यों, हमारा दिल धड़कने लगा। हमने कुछ रुक कर कहा कि साहब हम अभी पढ़ते हैं। हमारे बाप भी नहीं हैं, और हम ग़रीब आदमी हैं। जब जज साहब को मालूम हुआ, कि हमारे स्वर्गीय पिता अच्छे सरकारी पद पर नौकर थे, और पेन्शन लेने से पहले ही मर गये और हम अपने बाप के अकेले लड़के हैं, तब जज साहब ने कहा कि "तुम नौकरी क्यों नहीं कर लेते।" हमने कहा, "हम नौकरी करेंगे, या जो कुछ भी करेंगे, अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद करेंगे; किन्तु वैसे हमको इस लड़की से शादी करने में कोई इन्कार नहीं। हमको केवल यही चिन्ता है, कि छोटी सी जायदाद की आमदनी से हमारी और हमारी माँ ही की गुज़र कठिनाई से हो रही है, बीबी को कहाँ से खिलायेंगे।" इसका जवाब जज साहब ने दिया कि तुमको इससे कुछ बहस नहीं। केवल यह बताओ कि "तुम लड़की से शादी करने को तैयार हो या नहीं।" हमने स्वीकार किया। जज साहब ने हमको रात में बँगले पर बुलाया। वहाँ हम जब पहुँचे, तब सय्यद साहब पहले ही से मौजूद थे। सय्यद साहब की खिदमत में जज साहब ने हमको पेश करके कहा, "कि 'बोलो यह लड़का तुमको पसन्द है, या नहीं।' सय्यद साहब की भला मजाल थी कि चूँ भी करते। हम ज़बरन व कहरन

पसन्द किये गये। हम से जज साहब ने कहा, तुम जाओ। अतः हम हाँफते-काँपते लौट कर सीधे खिड़की के पास आये और हमने सवेरे जो खुशखबरी सुनाई थी, उसे प्रमाणित करते हुये कहा कि "अब हम तुम से शादी करने वाले हो रहे हैं।" उसने इसको मज़ाक ही समझा, और जवाब में यह कहा, कि 'कदाचित् तुम्हारी शामत आने वाली है।" इस पर हमने कहा. कि "लगभग बहुत जल्द हम स्वयं तुम्हारी उल्टी शामत बुलाने वाले हैं।" हमने बहुत कुछ गम्भीर होकर कहा कि हम दिल्लगी नहीं करते, बल्कि वास्तव में हमारी शादी तुम से निश्चित् होगई है; किन्तु उसे विश्वास न हुआ। क्योंकि न तो वह झेंपी और न उसने शरारत से भरी हुई बातें बन्द कीं।

७

हम बोर्डिंग हो में ठहरे हुये थे कि हमारे पास हमारे कृपालु हेडमास्टर साहब आये, जिनको जज साहब ने बुलाया था, और वे उनसे मिलकर आ रहे थे। जब बातचीत हुई, तब हमने उनसे साफ कह दिया कि बिनाअपनी बुजुर्ग माँ से मिले हुये और उसकी इच्छा के कुछ नहीं कर सकते। किन्तु दूसरे ही दिन हेडमास्टर साहब ने हमारे स्वर्गीय पिता के एक दोस्त को, जो यहाँ डिप्टी कलक्टर थे, ला खड़ा किया, और उन्होंने उसी दिन कुछ गड़बड़ करके ऐसा तार दिया कि हमारी अम्मा जान दूसरे ही दिन उनके घर पर मौजूद थीं और दूल्हा बनाये जाने की

तैयारियाँ हो रही थीं। इनसे और हमारी अम्मा जान से कहा गया कि इस विवाह के करने में हमारे भविष्य की अच्छाइयाँ हैं।

चौथे दिन हमारा निकाह उस शरीर लड़की से हो गया और निश्चय यह हुआ कि विदाई तब होगी जब हम पढ़ाई खतम कर लेंगे। हम को मालूम हुआ कि जज साहब ने हमारी बीवी से चचा और भतीजी का सम्बन्ध जोड़ कर उसको बीस रुपया माहवार देने का विचार किया है। हमारी प्रतिष्ठा इस बात को कभी भी स्वीकार न करती; किन्तु चूँकि यह मामला हमारे ससुर साहब और जज साहब के बीच का था, अतः हम कुछ न बोले।

अब ज़रा विचार तो कीजिये कि निकाह के बाद जब हम खिड़की के पास पहुँचे, तब जवाब नदारद। बहुत कुछ हाथ मारा, खटखटाया, किन्तु बे फायदा। हम झखमार कर चले गये और चलते समय भी हमारी विवाहिता बीवी हमसे बात करने न आई।

किन्तु यह बेरहमी और खामोशी अधिक दिनों तक न रही। हम खिड़की बजाने के लिये चुपके से छुट्टियों में अलीगढ़ से भाग-भाग कर आते थे और अपनी शरीर बीवी से मिल कर चले भी जाते थे। हमारे ससुर साहब या किसी दूसरे को पता भी न चलता था। हमारी बीवी की शरारतें उसी प्रकार जारी हो गईं। हम कभी न भूलेंगे कि कैसी-कैसी खुशामदें करवाती थी। तब कहीं, और वह भी उँगुली में अच्छी तरह सुई

झोंकने के बाद अपनी चुलबुलाती सूरत की बस एक झलक दिखाती थी।

पढ़ाई खतम होने पर विदाई हो, इसकी जगह पर हमारी अम्मा जान हमारी बीवी को डेढ़ साल बाद ही घर ले आईं। जब हमसे हमारी बीवी की पहली मुलाकात हुई, तब भी वह शरारत से बाज़ न आई। हम जब कमरे में पहुँचे, तब क्या देखते हैं कि लैम्प जल रहा है, और हमारी बीवी अपने आप को अच्छी तरह कपड़ों में लपेटे, और सिर मुँह सब छिपाये पलङ्ग पर बैठी है। हमने अपनी प्यारी बीवी के कन्धे हर हाथ रखकर हिलाकर कहा, "बन्दा परवर, सलाम अलेकुम, कहिये, मिजाज तो अच्छा है।"

यह कहते हुये हमने रजाई घसीट कर अलग कर दी, किन्तु वह न बोली, और शर्म और लज्जा की सीमा बन गई। फिर हमने हंसी के उद्देश्य से कहा, "कहिये आपकी वे शरारतें क्या हुईं। क्या घर छोड़ आईं?" यह कह कर जब हमने जवाब न पाया, तब हम पलँग पर बैठ गये, और हमने कहा, लाओ, अपनी चुलबुली बीवी को ज़रा गले तो लगायें।" यह कह कर हमने उस शरीर को गले से लगाया ही था, कि रान में उसने ऐसी निष्ठुरता से सुई चुभोई कि हम व्याकुल होकर उछल ही तो पड़े। फिर इसके बाद उसने मुझसे मजाक़ न किया और यह सुई का अन्तिम मज़ाक़ था।

हमारी इस शरीर के साथ ख़ूब निभी और आनन्द से निभ रही है, और यह केवल उसी का फल है, कि हमारी बीवी के नकली चचा अर्थात् जज साहब ने हमको पढ़ाई खतम करने के बाद ही ऐसी नौकरी दिलवा दी, कि अब हम चैन करते हैं।

चूँकि हमारी कोर्टशिप की कहानी लोगों को मनोरंजक मालूम हुई, अतः हमने भी उसे बहुत ही संक्षेप के साथ पाठकों को भेंट की है।

—※०※—

तीसरा परिच्छेद

ग़लत फ़हमी

१

हम बीबी से सवेरे यह कह कर गये थे कि नौ-दस बजे तक लौट कर आ जायँगे, किन्तु मछली का शिकार भी क्या बेकार चीज़ है। नौ बजे की जगह पर, गर्मियों की कड़ी धूप में, बारह बजे के बाद घर पहुँचे। शिकार में हमें उतनी ही सफलता मिली, जितनी आमतौर से मछली के शिकारियों को मिला करती है। हैरान भी हुये, और कुछ न मिला। भूखे, प्यासे, जलते-भुनते घर पहुँचे। नहा-धोकर कमरे में जब पहुँचे, तब नौकरानी ने कहा—बेगम साहिबा आपका इन्तज़ार करते करते अभी सोई हैं।' हम झट दूसरे कमरे में गये और खाना खाया। हाथ धोकर सिगरेट सुलगाया और सीधे कमरे में पहुँचे। हमें ऐसा मालूम हुआ कि हम स्वर्ग में आगये। तीन ओर खस की टट्टियाँ लगी हुई थीं, और बिजली का पंखा ज़ोरों से चल रहा था। हमारी शरीर बीबी सो रही थी। हमने ध्यान से उसके पवित्र चेहरे को देखा। कुछ सोचा। सामने दवात रक्खी थी। कुछ और ख़्याल आया। अतः क़लम को उल्टी ओर से डुबो कर चेहरे को भयानक बना

दिया, और उसके बाद हम भी अपने पलँग पर पड़ कर सो रहे। थके माँदे तो थे ही। ऐसे सोये कि तन-बदन का ख्याल न रहा।

कुछ देर के बाद हमने मुँह पर ठंडक सा अनुभव किया। आंख खुली तो बेगम साहिबा को शरारत करते हुये पाया। अर्थात् बर्फ का टुकड़ा लेकर हमारे मुँह पर मल रही थीं। अपनी मूछों का उनको पता भी न था। ज़रा सोचिये, यह पाक और भयानक चेहरा, और उस पर यह शरारत। हमें बेकाबू हँसी आई, जिसे हमने अच्छी तरह शाबाशी दी। उठ कर हमने दरवाज़ा खोला। शाम होने को क़रीब थी। इतने में एक नौकरानी आई, और उसने जब अपनी स्वामिनी के भयानक चेहरे को देखा तब हँसती हुई भागी।

"क्यों हँसती है!" हमारी बेगम साहिबा ने नाराज़ होकर पूछा। किन्तु वह लौट कर न आई। ग़ुस्से में मूँछें विचित्र बहार दे रही थीं।

इतने में दूसरी नौकरानी आई और दरवाज़े पर पैर रखते ही उसने कहा:—

"क्या आप मुझे बुलाती हैं?" यह कह कर उसने भी अपनी स्वामिनी का डरावना चेहरा देखा, और वह भी हँसी को रोकती हुई बाहर निकल गई।

हमारी बीवी ने कहा, "आज मालूम होता है, इनकी शामत आई है।"

हमने कहा, "आज हमें भी डर लग रहा है।" वह कुछ न समझीं और हमने इस हँसी में सम्मिलित होना व्यर्थ समझा और उठ कर बाहर चल दिये।

(२)

घंटे भर बाद जब हम घर में आये, तब मालूम हुआ कि बेगम साहिबा नहाकर निकली हैं और आइने वाली मेज़ पर कंघी कर रही हैं। हम कमरे के दरवाज़े पर खड़े हो गये। हमने देखा कि आदमी के क़द के बराबर के आइने में देख देखकर पंखे की हवा से बाल सुखाये जा रहे हैं। बाल उड़ उड़ कर हमारे लिये विचित्र भाव पैदा कर रहे थे, और हम उस सौन्दर्य के प्रेमी बने हुये थे कि आइने में हमारी आँखें चार हुईं। मुड़ कर हमारी ओर देखा, किन्तु शीघ्र ही फिर मुँह मोड़ लिया कि क़रीब पहुँचे, और जैसे ही आँख से आँख मिली, तो क्रोध से भरी आँखें हमारी ओर डालीं, और ज्यों ही मुसकुराहट आई, तो उसको दबा कर और मस्तक पर शिकन डालकर चिड़चिड़ाहट के साथ कहा, 'इस प्रकार की हरकतें हमें पसन्द नहीं हैं।

हमने कहा, "क्यों, क्या हुआ ?',

"ऐसे मज़ाक़ से क्या फ़ायदा कि सभी नौकरानियाँ हँसती फिरें।"

"हमने कोई मज़ाक़ नहीं किया।" हमने खुशामद से कहा।

"तो फिर यह आखिर क्या था ?"

'आज हम अस्तुरा लेकर आदत के मुताबिक बैठे थे, तब तुमने ही तो कहा था, कि हमें मूँछें बहुत पसन्द हैं। हमने दिल में सोचा कि हमें तो पसन्द नहीं। क्योंकि हम प्रतिदिन उनको साफ़ कर डालते हैं। किन्तु चूंकि हमारी बीबी को पसन्द हैं, तो लाओ ज़रा उसकी मूँछें ही बना दें।"

यह सुनकर गुस्सा रफूचक्कर हो गया, और बीवी ने हमारी शरारत को पसन्द करते हुये हँसकर कहा, "तो हमारा यह मतलब कब था......मूँछें तुम रक्खो।"

हमने खुशामद के साथ कहा, "लाहौल विला कूह, "तुमने यदि पहले ही बता दिया होता, तो हम यह ग़लती ही क्यों करते?"

इधर उधर मतलब की दो-तीन बातों के बाद हमने अपनी बीवी को एक गिलास अनार का शर्बत पिलाया, और वह भी अपने हाथ से, और मज़दूरी वसूल करने के बाद हमने कहा, "क्यों दोस्त, हमारा एक काम कर दोगे?"

"फिर तुमने उसी मरदानी बोली से मुझे सम्बोधित किया, क्या काम है?"

"हमारे एक हिन्दू दोस्त आ रहे हैं, उनके खाने का प्रबन्ध। प्रबन्ध खास, और यह कि अपने हाथ की कोई चीज़ उनको अवश्य खिलाना। ये भी वैसे ही दोस्त हैं कि जिनसे रात भर बातें की जानी चाहिये।"

"आखिर तुम यह रात भर क्या बातें करते हो?" बीवी ने खोदकर पूछा।

"उनसे तो अधिकतर तुम्हारी शरारतों की बातें करेंगे।"—हमने हँस कर कहा।

"यह ग़लत है। तुम बदचलन आदमियों से मिलते हो। आखिर, बताओ तो सही, कि गुलाबचन्द से तुमको क्यों इतना प्रेम है? वह आदमी, जो बाज़ारू औरतों में तुम्हें ले जाये, कभी भी मिलने के योग्य नहीं।"

"हम ठीक कहते हैं कि यह जो आ रहे हैं, उनसे तुम्हारी, या उनकी अपनी बीवी की बातें करने के अलावा और कुछ भी नहीं करेंगे। तुम स्वयं जानती हो कि यदि तुमसे हमें झूठ ही बोलना होता तो हम तुमसे कहते ही क्यों?"

वे बोलीं, "यह तो हम जानती हैं कि यदि तुम किसी रण्डी के यहाँ जावोगे, तो हमसे अवश्य कह दोगे और यह भी मालूम है कि यार-दोस्तों के साथ ज़बरदस्ती चले जाते हो, किन्तु आखिर उसका परिणाम क्या होगा—बीबी ने कुछ दृढ़ता के साथ कहा।

"कुछ नहीं, परिणाम क्या हो सकता है। तुम स्वयं जानती हो कि मैं तुम्हारा हूँ। चाहे मैं दिन रात बाज़ारू औरतों में ही रहूँ, तब भी कोई अन्तर न होगा।" इतना कहकर मैंने बीबी की ओर ध्यान से देखा और फिर कहाः—

"अच्छा जैसा कहोगी, वैसा ही करेंगे। किन्तु इन दोस्त का हम हद से ज्यादा आदर-सत्कार चाहते हैं।"

३

रात का खाना हमने बाहर दोस्त के साथ कमरे में खाया। खाना खाकर हम अपने दोस्त सरदार सुन्दरसिंह से बैठे हुये बातें कर रहे थे। बिजली की रोशनी, चूँकि तेज़ थी, अतः हम कमरे के उस दरवाजे के पास बैठे हुये थे, जो सड़क की ओर खुलता था। इस कमरे के बीच के दरवाज़े के सामने ही एक बड़ी आलमारी रक्खी थी, जिसमें आदमी के क़द के बराबर का आइना लगा हुआ था।

सहसा एक नौकरानी आई और उसने सिर डाल कर झाँका ही था कि झट लौट गई। हम चूँकि सरदार साहब से बातें करने में लगे हुये थे, अतः उस ओर ध्यान न दिया। नौकर को बुलाकर पान लाने के लिये कहा और फिर बातों में लग गये।

× × ×

अब ज़रा भीतर का हाल सुनिये:—

बीबी ने पान बना कर नौकरानी के हाथ भेजे थे, कि इतने में वह हाफती काँपती दौड़ी हुई आई। पान की थाली रख कर बोली 'बेगम साहिबा, गज़ब हो गया।'

"क्यों, क्या हुआ?"—बीबी ने घबड़ा कर पूछा।

उसने कहा, "मैं जब पान लेकर पहुँची, तब मुझको कोई दिखाई पड़ा। मैंने सोचा कि कमरे में होगा। कमरे के दरवाज़े पर पहुँची ही थी, कि बेगम साहिबा, बस क्या बताऊँ, कि क्या देखा।"

"अरी कम्बख़्त, आख़िर क्या देखा।"

"कमरे में कोई औरत खड़ी थी। बस, मैं उल्टे पैरों ही भागी।"

"झूठी, कम्बख्त, पागल है। औरत भला कहाँ से आई?"

"यदि विश्वास न पड़े, तो किसी दूसरे को भेज कर दिखा लीजिये।"

बीबी ने शीघ्र दूसरी नौकरानी को भेजा। वह भी उसी प्रकार दौड़ी आई और उसकी बात को सही बताया। सूरत-शकल या कपड़े के बारे में कुछ विवरण हमारी बीबी को मालूम न हो सका। क्योंकि दोनों औरतें शीघ्र ही एक झलक दिखाकर भाग आई थीं।

उधर हम इस प्रकार बातों में लगे थे कि कुछ खबर न थी। दूसरी औरत जब फिर उसी प्रकार झाँक कर चली गई, तब हमने नौकर को बुलाया कि पान लाओ।

नौकर पान लेने चला कि नौकरानी ने रास्ते ही में उसको पकड़ा कि चलो, बेगम साहिबा बुलाती हैं। बेचारा नौकर क़समें खारहा था कि बेगम साहिबा कोई औरत नहीं है, किन्तु बेगम

साहिबा को कैसे विश्वास होता, जब कि दो आँख देखी गवाहियाँ मौजूद हों। खुलासा यह कि हम बुलाये गये।

हम सरदार साहब से इजाजत लेकर गये, तो बीबी को अलग टहलती हुई पाया। हमने आदत के मुताबिक कन्धे पर हाथ रख कर कहा कि "दोस्त क्या है?"

कोई जवाब न देकर वे रुक गई। हमने देखा तो चेहरा उदास और चिन्तित था। पहले इसके कि हम कुछ कहें, हमारा हाथ पकड़कर कहा, "मैंने कौन सा अपराध किया है? मुझसे क्यों नाराज़ हो गये?" यह कह कर हमारी छाती पर सिर रखकर सिसकियाँ भरने लगीं। हम इसके लिये बिलकुल तैयार न थे। घबड़ाकर हमने कलेजे से लगाकर कहा,—"ख़ुदा के लिये कुछ कहो तो।"

उसने आँसू पोंछते हुये कहा, "बाहर कमरे में यह औरत कौन बैठी है?"

हमें हँसी आई और हमने आश्चर्य-चकित होकर कहा, "तुम क्या बक रही हो?"

"मैं बक नहीं रही हूँ, बल्कि सच कह रही हूँ।" बीबी ने जोर देकर कहा।

"मालूम होता है, तुम्हारा दिमाग़ ठीक काम नहीं कर रहा है।"

"मेरा दिमाग़ बिल्कुल ठीक काम कर रहा है।"

हमारी बुद्धि चकरा गई थी, किन्तु हमने मुसकुराकर कहा, "मान लो यदि बैठी भी है तो तुम्हारी बला से।"

"खुदा के लिये कोई नुक़सान नहीं। जिसमें तुम खुश, उसमें मैं खुश, और मेरा खुदा खुश। जाओ, शौक़ से रात भर बाहर रहो। किन्तु मेरे दिल पर जो चोट लगी, वह इस बात पर कि आखिर बहाना करने से क्या फायदा? पहले ही कह देते कि एक दोस्त रण्डी सहित आयेंगे, और मैं रात भर बाहर रहूँगा।" ये शब्द बीबी ने दर्दीले स्वर में कहे।

"आखिर तुम्हें यह......" इतना ही हम कहने पाये थे, कि बीच ही में बात काट दिया, और फिर उसी प्रकार कहा:—"मैं उन औरतों में नहीं हूँ, जो अपने शौहर को ख्वाहमख्वाह तंग करें। मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि तुम मेरे ही हो। चाहे बुरे आदमियों में बैठो, चाहे नेक आदमियों में। मैं यदि तुमको रोकूँगी, तो और उपायों से रोकूँगी, न कि लड़कर। किन्तु दुख तो मुझे अपने भाग्य पर होता है कि तुमने मेरी इज्ज़त न की। मुझको बेवकूफ समझा, और मुझसे सचसच न कहा। यह तो तुम्हारे दोस्त की रण्डी है। यदि कहीं खुदा न करे, तुम्हारी बुलाई होती तो क्या मैं उसकी या तुम्हारी सेवा न करती। खुदा न करे कि ऐसा हो, किन्तु यदि खुदा के लिये ऐसा हुआ, तो तुम मुझे स्थिर-चित्त पावोगे।" इतना कहने ही पाई थी, कि उसकी आवाज़ विचारों के आवेग से घुट गई और फिर सिसकियाँ लेकर रोना शुरू किया।

हम अधिक हैरानी में थे, कि इलाही, माजरा क्या है? बीबी को हमने गले लगा लिया और चुमकारा, और सीधे बात

पर ले गये। वहाँ जब हमने सब क़िस्सा सुना, तब दंग रह गये और दोनों नौकरानियों को बुलाया, और हाल पूछने के बाद उनको जाने का हुक्म देकर बीबी से कहा—"मालूम होता है, तुम्हारी नौकरानियाँ झूठ नहीं बोलती हैं, किन्तु उनको कुछ धोखा हुआ है। हम तुमसे झूठ कभी भी नहीं बोले। और न बोलेंगे। हम सच कहते हैं, और तुम विश्वास करो कि कोई औरत कमरे में नहीं है। कदाचित् उन्होंने किसी औरत को कहीं और देखा है।"

"मेरा मज़हब, दीन, और ईमान सब तुम्हीं हो। खुदा के वास्ते, जो तुम कहो, वह सच है। मुझको पूरा विश्वास है कि वहाँ कोई औरत नहीं। केवल इस सबब से कि तुम ऐसा कहते हो।" बीबी ने प्रगट रूप से यह खुश होकर कहा।

हम सरदार साहब के पास आये, और असाधारण देर का कारण बताया। हमारी बुद्धि काम न करती थी कि इलाही, औरतों के दिमाग में यह क्या खलल आ गया, जो उनकी आँखों के सामने रण्डी की कल्पित तसवीर आगई, बड़ी रात तक हम सरदार साहब से बातें करते रहे। विचार तो हमारा यही था कि हम बाहर ही सोयें। किन्तु रात की घटना के कारण हमने सोचा, कि हम अपनी बीबी से बातें करलें तो अच्छा है।

४

हम छत पर पहुँचे तो बीबी को सोती हुई पाया। यह असम्भव था कि हममें कोई एक दूसरे को सोते देख पाये, और कुछ शरारत न करे। क्योंकि इस मामले में हमारी बीबी का दिल हर समय तैयार रहता था। हमने बिलकुल निश्चय कर लिया कि बीबी का मज़ाक उड़ाया जाय, अतः हमने पानी की दो-तीन बूँदें नाक में जब डालीं, तब बीबी हँसती, खाँसती और छींकती हुई उठीं। बीबी ने कहा कि एक नौकरानी फिर गई थी, और फिर आकर उसने यही कहा था कि औरत कमरे में है।

"तो फिर तुमने क्या किया ?" हमने आश्चर्य से पूछा।

"मैं करती क्या ? खूब डाँटा कि तू झूठी है। किन्तु समझ में नहीं आता कि आखिर दोनों ने सलाह करके ऐसी झूठी बात क्यों गढ़ी ? मुझसे तुमने कह दिया, बस काफी है। यदि मैं स्वयं भी आँखों से देख लूँ, तो भी तुम्हें झूठा न समझूँगी।"

हमने प्रभावित होकर बीबी से केवल इतना कहा कि "तुम बड़ी अच्छी हो।" हम दोनों कुछ देर तक यही बातें करते रहे कि आखिर इन नौकरानियों को क्या सूझी, जो ऐसी बेजड़ की बात कह दी और फिर उस पर अटल हैं। बीबी उनको निकालने को कहती थीं, किन्तु हमारा विचार यह अवश्य था कि वे किसी गलत फहमी में पड़ी हुई हैं।

× × ×

सरदार सुन्दर सिंह खूबसूरत जवान नहीं, बल्कि बहुत ही सुन्दर आकर्षक जवान थे। खुदा की शान है कि बुद्धि कुछ काम न करती थी कि उनको भी कैसा सौन्दर्य मिला था। लोगों की समझ ही में न आता था कि इनमें स्त्री-सौन्दर्य की वास्तविकता अन्तर्हित है, या पुरुष-सौन्दर्य की। गोरा चमकता हुआ रंग, शरीर बहुत ही कोमल और इकहरा। क़द बहुत ही मुनासिब। आँखें, नाक, ओठ, दाँत, मतलब कि पूरा चेहरा इस तरह हलका और खूबसूरत कि जो देखता तारीफ करता। इन सभी बातों के अलावा कमर तक रेशम की भाँति मुलायम बाल उनके सौन्दर्य-संसार को परिपूर्ण करते थे, किन्तु उनकी दाढ़ी! खुदा की पनाह, माशा अल्लाह! डेढ़ बालिश्त की दाढ़ी नहीं, बल्कि दाढ़ा था। यही एक ऐसी चीज़ थी जो उनके सौन्दर्य-संसार को दबाने और पराजित करने की असफल कोशिश करती थी। क्योंकि सब की मिली हुई राय यही थी कि इस तरह लम्बी दाढ़ी को भी इस उद्देश्य में कुछ भी सफलता नहीं प्राप्त होती। वे अपनी दाढ़ी लपेट कर रेशमी डोरे से इस प्रकार बाँध लेते थे, कि यही मालूम होता था कि मामूली छोटी-छोटी दाढ़ी है। केवल उनकी दाढ़ी ही एक ऐसी चीज़ थी जो उनको एक खूबसूरत मर्द बना देती थी। फिर भी स्त्री-सौन्दर्य की वास्तविकता, जैसा कि हम कह चुके हैं, अन्तर्हित ही रहती थी। क्योंकि आपस के यार दोस्त उनके स्त्री-सौन्दर्य की इतनी तारीफ़ करते थे, कि वे झेंप जाते

थे, और कहा करते थे, कि यदि कहीं मेरे दाढ़ी न होती तो मुझसे यार-दोस्तों के मज़ाक का जवाब ही देते न बन पड़ता।

× × ×

सबेरे हमारी आँख कुछ देर से खुली। उठकर हम बाहर पहुँचे। सरदार साहब नहाने के कमरे में थे। हम बरामदे में एक कुर्सी पर बैठे हुये थ, कि सरदार साहब नहा कर मुसकुराते हुये निकले। डेढ़ बालिश्त की दाढ़ी इस खूबसूरत चेहरे पर विचित्र बहार दे रही थी। एक सफेद धोती साड़ी की भाँति बाँधे हुये थे और आधी ओढ़े हुये थे, जिससे सारा शरीर हाथों की कुहनियों तक और सिर के अलावा खुला हुआ था। उनके लम्बे और रेशमी बाल कमर तक लटक रहे थे। हमारी कुर्सी ही के पास मेज़ थी, जिस पर आइना रक्खा था। वे कुर्सी के बराबर आइने के सामने खड़े होकर बाल पोंछने लगे और कहने लगे कि "तुम अपनी बीबी से कब मुलाक़ात करावोगे।"

हमने हँसते हुये और उनके बालों से खेलते हुये कहा, जो हमारे सामने ही लटक रहे थे, कि—"सरदार साहब हमारा तो यह विचार था कि आपसे कल ही मुलाक़ात करा दें, किन्तु अभाग्य वश यह विचार बदल देना पड़ा, और अब कदाचित् मुलाक़ात बिलकुल न करा सकें।"

"भई! यह क्यों?" सरदार साहब ने अपने रेशमी बाल झटकते हुये विचित्र अदा के साथ कहा।

"रात की घटना आपको मालूम है। आपको अनुमान हो

क्या होगा कि हमारी बीबी ने भी कैसा संदिग्ध हृदय पाया है।"

"तो आखिर इससे क्या मतलब?" सरदार साहब ने मुसुकुराते हुये कहा।

"अजी हजरत, सभी नौकरानियाँ यही कह रही हैं कि आपकी दाढ़ी नकली है, और हमें शक है कि हमारी बीबी कहीं आपसे जलने न लगे। अतः अच्छा है कि मुलाक़ात न हो।"

सरदार साहब ने एक क़हक़हा लगा कर कहा, "शुक्रिया, तसलीम, तसलीम, भई! मेरी इस तरह बड़ी तो दाढ़ी है। बात तो यह है कि इस दाढ़ी पर तुम्हारा कोई जुमला ठीक ही नहीं बैठ सकता।"

हमने हाथ में बाल लेते हुये कहा—"सूरत और शकल और इन्हें कहाँ ले जावोगे।"

इतना ही कहा था कि नौकर आया और उसने हमसे कहा, कि आपको भीतर किसी बहुत ही जरूरी काम से बुलाया है। हम शीघ्र उठकर आये। मालूम हुआ कि ऊपर हैं। वहाँ जब पहुँचे, तब सबसे पहले दोनों नौकरानियाँ आँखें फाड़े व्याकुल परीशान मिलीं। इलाही, खैर तो है। हमने दिल ही दिल में कहा और कमरे में पहुँचे। क्या देखते हैं, कि बीबी साहिबा तकिये में मुँह छिपाये पड़ी हैं। पैरों की आहट पाकर जो सिर उठाया तो हम देखते ही दंग रह गये। रंज और दुख से चेहरा लाल हो रहा था और आँखों से आँसू निकल रहे थे। हम अधिक परी-

शान हुये और पास बैठ कर हमने कन्धे प हाथ रख कर दुखी होकर कहा, "मेरी जान तुम्हें क्या हुआ ? कुशल तो है।"

रोते हुये बीबी ने जवाब दिया, "मालूम होता है कि मेरे दिन अब क़रीब आगये।"

बेचैन होकर हमने फिर कहा, "कुशल तो है। आखिर क्या हुआ ?"

"तुम्हारा विश्वास जब मेरे ऊपर से उठ गया तब मैं क्यों कर जीवित रह सकती हूँ। यदि किसी बाज़ारू औरत से तुम मिलो और मुझसे कह दो तो ख़ैर कुछ नहीं। किन्तु वह घर में आये और तुम मुझसे छिपाओ तो उसका यही मतलब है कि मेरी मृत्यु क़रीब है। मुझको अब तक घमण्ड था कि मैं तुम्हारा सच्चा दोस्त हूँ। किन्तु ख़ुदा...।" इतना कह कर आवाज़ बँध गई, और फिर मुँह छिपा कर बुरी तरह रोना शुरू किया। हम सख्त चक्कर में थे कि इलाही, यह कैसी आपदा है! "क्या मुझको पागल बना दोगी ? आखिर यह मामिला क्या है ? कैसी रंडी और कैसी मुण्डी ? यहाँ कहाँ है ?"

बीबी ने आँसू पोंछकर और आँखें चार करके कहा, "क्या अब भी यही कहे जाओगे कि औरत नहीं है ?"

"कोई नहीं, बिलकुल ग़लत है। मालूम होता है फिर वही रात का क़िस्सा पेश है।"

"जो तुम कहो वह ठीक है। कह चुकी कि मेरा मज़हब तो

तुम हो और ईमान हो तो तुम हो, किन्तु अब मैं बिना अपनी आँखें फोड़े न रहूँगी। मेरा मज़हब है कि यदि एक चीज़ मेरी आँखें देखें कि है, किन्तु तुम कहो कि नहीं है, तो मेरी आँखें झूठी और तुम सच्चे। कदाचित् मेरी आखों ने भी नौकरानियों की आखों की भाँति धोखा खाया हो। अतः एक बार और आज़मा लूँ।" यह कहती हुई उठी, और खिड़की से बाहर जाकर झाँका। उँगुली से हमें इशारा किया। हम भी गये।

"वह देखो मेरी आँखें तो अब भी मुझे धोखा दे रही हैं।" इशारे से बताते हुये कहा। हमने जब खिड़की में से बाहर की ओर दृष्टि डाली तब निस्सन्देह अपनी बीवी का कहना ठीक पाया। क्या देखते हैं, कि बरामदे में एक औरत खिड़की की ओर पीठ किये खड़ी आइना देख रही है। उसके लम्बे-लम्बे बाल उसकी कमर तक लटक रहे हैं; जिनको वह अपने कोमल और गोरे हाथों से सहला रही है और झटक रही है। सफ़ेद साड़ी बाँधे, सिर और कुहनियों तक हाथ खुले हैं, जिनसे पता चलता है कि बहुत ही ख़ूबसूरत होगी। हमने यह दृश्य देख कर बीवी की ओर देखा, तो उसने विचित्र दर्दीले और दुख भरे ढङ्ग से कहा—"क्या बताऊँ, मेरा उस समय क्या हाल था, जब मैंने अपनी आँख से देखा कि तुम हँस-हँस कर उसके बालों में हाथ डाल कर खेल रहे हो।"

अलावा इसके कि हम कुछ जवाब देते हमने बीवी का हाथ पकड़ा और कमरे में लाये, और गले से लगाकर बीवी से

ख़ुशामद कर कर के अपने अपराध को स्वीकार किया, और हाथ जोड़ कर क्षमा माँगा।

"ख़ुदा के लिये मुझे गुनहगार न करो। मैं भला इस योग्य हूँ कि तुम मुझसे माफी माँगो।"

"यह कोई बात नहीं। जब हमारा अपराध है, तब हम क्यों न क्षमा माँगें ?"

राज़ी होकर बीवी ने कहा, "अच्छा यह बताओ कि तुमने मुझसे रात में ही क्यों नहीं कह दिया ?"

"सिर्फ़ बेवक़ूफी और मूर्खता ! यही ख़याल था, कि तुमको बुरा मालूम होगा !"

"मैं फिर कहती हूँ कि जिसमें तुम खुश, उसमें मैं खुश, और मेरा ख़ुदा खुश। ख़ुदा के वास्ते मुझसे कोई बात न छिपाया करो।"

हमने वादा कर लिया और कहा कि हम तो तुमसे असली बात स्वयं ही कहने वाले थे क्योंकि हमें तुमको इस औरत से मिलाना था। अब हम तुम से एक बात कहते हैं और वह यह कि तुम उससे चल कर अभी मिल लो, जिससे हमारा दिल हलका हो जाये।"

"मिलने में मुझको कोई इनकार नहीं, किन्तु अभी ?"

"हाँ अभी और इसी तरह। यदि तुमको मुझसे मुहब्बत है तो फिर मैं जो कहूँ वह करो। लो उठो।"

यह कह कर हमने बीबी का हाथ पकड़ कर उठाया और कहा, "वहीं बाहर हो चल कर मिल लो, और इस समय उसके अलावा दूसरा कोई नहीं है।"

हमारी शरीर किन्तु निरपराध और वफादार बीवी सदैव हमारे इशारे पर चलती थी। सीधी हमारे साथ हो ली। हम दरवाज़े पर न आके उस सीढ़ी से उतरे, जो खास उस बरामदे में निकलती थी। यहाँ सरदार साहब नहीं थे। हमने बीवी को वहीं छोड़ा, और चुपके से कमरे में झाँक कर देखा कि सरदार साहब किधर हैं। सरदार साहब कमरे में सड़क की ओर वाले दरवाज़े में, हमारी ओर पीठ किये हुये, बालों को हवा दे-दे कर सुखा रहे थे। हम झट लौट आये और बीवी को आगे किया। बीबी की दृष्टि सामने वाले लम्बे चौड़े आइने पर पड़ी, और वह सहसा कुछ रुकी कि नजर दाहिनी ओर पड़ी। भीतर आई तो देखा कि वही औरत उस ओर मुँह किये बाल सुखा रही है। कुछ आगे बढ़ी कि सरदार साहब ने पैर की कुछ आहट पाकर मुँह जो फेरा, तो डेढ़ बालिश्त की दाढ़ी वाला चेहरा सामने था। घबड़ाहट में सरदार साहब के मुख से केवल इतना निकला—"हैं !" हमने जो पीछे घूम कर देखा तो बीबी नदारद।

सरदार साहब हैरान और परेशान थे और इधर हँसी के मारे हमारा यह हाल, कि हँसते-हँसते पागल हुये जा रहे थे। जितना ही सरदार साहब बिगड़कर हमसे पूछते थे, कि आखिर

यह मामिला क्या है, उतना ही हमारा हँसी के मारे बुरा हाल होता जाता था। हँसी को बार बार ज़बर्दस्ती से रोक रोक करके और साँस ले लेकर क़िस्सा सुनाया कि जनाब, आप तो खिड़की की ओर पीठ किये कंघा कर रहे थे, और हम आपके रेशमी बालों से हँस-हँस कर खेल रहे थे। हमारी बीवी ने दाढ़ी देखी या नहीं, यह हम नहीं कह सकते। क्योंकि आपका मुँह दूसरी ओर था। किन्तु बात यह है कि वे ईर्षा की आग में जल मरीं और रो-रोकर वह हाल किया कि खुदा की पनाह। खुदा आपकी दाढ़ी की उम्र लम्बी करे, और इलाही वह खूब तरक्क़ी करे कि आज उसने एक मियाँ और बीवी में झगड़ा होते होते बचा लिया। वे यहाँ वास्तव में उस औरत से मिलने आई थीं, जिसको उन्होंने खिड़की में से अपनी ओर पीठ किये हुये सफ़ेद साड़ी बाँधे बरामदे में बाल सुखाते देखा था। अब यह उनकी क़िस्मत है कि आपने जब मुँह मोड़ा तब डेढ़ बालिश्त की दाढ़ी का कुछ ऐसा डर समाया कि भागते ही बन पड़ी।

सरदार साहब को भी यह लतीफा सुनकर हद से ज्यादा हँसी आई, किन्तु हमारे सभी जुमिले अब हर एक तरह से ठीक उतर रहे थे और सरदार साहब बेहद झेंप रहे थे।

× × ×

हम जब भीतर गये, तब बीवी साहिबा ने हमें देखकर फिर तकिये में मुँह छिपा लिया। हमने पास जाकर गुदगुदाया तो बीवी को हँसी के मारे बेहाल पाया। हमने कहा, तुम कितनी

असभ्य हो कि उस औरत से बात भी न की। वह क्या कहती होगी कि कैसी समझदार बीबी है !"

× × ×

इसके बाद ही रात की वह ग़लत फ़हमी भी दूर हो गई। बात यह थी कि रात में बिजली की रोशनी में कमरे में जब औरत झाँकती थी, तब सामने लम्बे-चौड़े आइने में उसको अपनी चित्र-छाया दिखाई पड़ती थी। रात के समय यह तो समझ में आता न था कि कौन है, और फिर जल्दी में एक झलक देख कर भाग जाती थीं। यह पहेली हमारी बीबी ने हल की। क्योंकि जैसे ही वह कमरे में पहुँची थी, तो वह स्वयं अपनी चित्र-छाया देखकर एक क्षण के लिये झिझक गई थी। अतः जब नौकरानियों को दिन के समय भेजा कि जाकर देखो वह औरत है कि नहीं तो उनको अपनी बेवक़ूफ़ी का पता चला। वास्तव में बात यह थी कि इस कमरे में नौकरानियाँ बहुत कम आती थीं।

अब सरदार साहब बीबी से मुलाक़ात करने को तैयार ही न होते थे और न बीबी ही राज़ी हुई। सरदार साहब कहने लगे कि अबकी बार जब आयेंगे तब मुलाक़ात करेंगे।

मतलब यह कि देर तक हमारा यह तकाज़ा रहा, किन्तु सरदार साहब मुलाक़ात करने के लिये राज़ी ही न हुये।

जब और दोस्तों को यह बात मालूम हुई, तब सरदार साहब जगह जगह तंग किये गये और अब तक बराबर तंग किये जाते हैं। यह बात उनको यार-दोस्तों में लज्जित बना देने के लिये काफी है, किन्तु ज़बर्दस्ती तो देखिये दोस्तों की।

चौथा परिच्छेद

लाहौर का सफर

चाँदनी का बड़े ज़ोरों का तक़ाज़ा था कि लाहोर की सैर करें। अतः दिसम्बर की छुट्टियों में हम लाहौर गये। यह बताने की आवश्यकता नहीं कि हम किस जगह ठहरे, किन्तु ख़ूब सैर की। चलने से एक दिन पहले हमने अपनी बीवी से कहा कि बगदादी चोर का प्रसिद्ध फिल्म आया हुआ है, क्या तू देखेगी? चूँकि हमारी बीवी के स्वभाव में सैर और आराम समाया हुआ था, अतएव शीघ्र ही वह तैयार होगई। अभाग्य से हम दोनों सिनेमा ऐसे तंग समय में पहुँचे, कि कठिनाई से अव्वल दर्जे में जगह मिली, और वह भी बद क़िस्मती से ऐसी कि इधर हम और उधर बीबी और बीच में एक पगड़ीबाज़, जो बहुत ही बड़े खतरनाक ढङ्ग का बड़ा साफा बाँधे हुए थे। हमने उनसे कहा कि साहब आप अपनी जगह हमारी जगह से बदल लीजिये तो बड़ी मेहरबानी हो, जिससे हम अपनी बीबी के साथ का आनन्द उठा सकें। किन्तु वे न माने और बुरे स्वभाव से पेश आये, और नौबत यहाँ तक पहुँची कि कहा सुनी होते होते रुक गई। क़िस्मत की ख़ूबी या संयोग कि आगे की क़तार से एक साहब बहादुर

उठकर रफूचक्कर हुये और उनकी जगह खाली हुई। हमने उनसे कहा कि हज़रत आगे वाली जगह खाली है, आप बैठ जाँयें। अतः वे पगड़ीबाज़ आगे जा बैठे। और चाँदनी उनकी जगह आ बैठी, और उसकी जगह एक और साहब ने पीछे से आकर लेली। ये साहब बहुत ही सभ्य और बहुत ही मुनासिब आदमी मालूम होते थे। ये लाहौर के नये हिन्दू वकील थे। अब मालूम हुआ कि चाँदनी को कुछ दिखाई नहीं देता, क्योंकि सामने जबर्दस्त पगड़ी थी। हमने बहुत ही नम्रता से उन हज़रत से व्यर्थ कहा कि हज़रत आप अपना साफा उतार लें। वे न माने और चाँदनी ने तंग आकर हमको भी न देखने दिया और बातों में लगा लिया। वह धीरे धीरे कह रही थी कि इन पगड़ीबाज़ से बदला लो और उनका साफा घसीटो। हम कह रहे थे कि हमें मालूम होता है कि तू आज मारी जायगी और हमें भी अपमानित करायेगी। वह कहती थी कि आखिर फिर क्या किया जाये? वकील साहब उसकी सलाहों में बहुत दिल-चस्पी ले रहे थे, किन्तु यह सलाह उनकी भी थी, कि तुम औरत हो, शरारत करना उचित नहीं; तो इसका जवाब हमारी शरीर बीवी ने यह दिया कि हज़रत फिर आप ही मर्द बनिये और किसी प्रकार उनका साफा उतरवाइये। वकील साहब ने स्वयं इन पगड़ी-प्रिय हजरत से कहा कि साफा उतार डालिये या कोई और उपाय कीजिये, किन्तु वे न माने।

१

चाँदनी हमें तमाशा देखने ही न देती थी। हमारी कुर्सी के तकिये पर बाँया हाथ रक्खे हुये हमारी टोपी के फन्दने से खेल रही थी और बातों में लगाये हुई थी। हम कह रहे थे कि न तो स्वयं तमाशा देखती है, और न हमें देखने देती है। आखिर यह क्या मामिला है कि इतने में उसने कहा कि बाहर चलो, चाय पीयें। हमने इन्कार किया और कहा कि तुम जाओ और हमें देखने दो। वह चली गई और वहाँ से जब लौट कर आई, तब उसके हाथ में हमारी टोपी के फन्दने के दो डोरे थे, जो बत्ती की तरह सुलग रहे थे। एक इनमें से उसने वकील साहब को दिया और दूसरा अपने हाथ में लिया। हमने पूछा कि यह क्या मामिला है, तो उसने न बताया। उसने हाथ बढ़ाकर पगड़ीबाज़ हज़रत की गरदन पर सुलगता हुआ डोरे का किनारा छुआ दिया। बस, हम क्या बतायें कि उन्होंने किस सफाई से अपने गर्दन का पिछला भाग झाड़ा, मानों उनकी गर्दन में किसी कीड़े ने डंक मार दिया। जैसे ही उन्होंने मुड़ कर देखा तो चाँदनी ने वकील साहब से कहा कि वकील साहब आपको ऐसा न करना चाहिये। वकील साहब ने इस मज़ाक़ से काफी दिलचस्पी ली। पगड़ी बाज हज़रत इस मज़ाक़ को पी गये, और दो एक बार सिर हिला-हिला कर वकील साहब को देखने के अलावा और कुछ न किया। अब हमारी बीबी ने फिर यही करना चाहा। हमने बहुत कुछ कहा कि बदनसीब, तू मार खायेगी और तेरी

शामत आ रही है किन्तु वह न मानी, और उसने फिर एक चरका दिया। अब की बार तो वे बल खा गये। शोर तो मचा न सकते थे, न जाने क्या फुस-फुसाने लगे। किन्तु बहुत ही नाराज़ थे। वकील साहब ने जब देखा कि मामिला मेरे ऊपर आता है तब उन्होंने हाथ की बत्ती फेंक दी। किन्तु पगड़ीबाज़ ने उसको देख लिया था। और वे यही सोच रहे थे कि शरारत वकील साहब की है। क्योंकि चाँदनी तो बिलकुल भीगी बिल्ली बनी बैठी थी और बार-बार कहती थी, कि ऐसा न करना चाहिये, बुरी बात है। अब ऐसा मालूम होता है कि ये हज़रत पगड़ी बाज सावधान होकर बैठे थे, और बेहोश न थे।

थोड़ी देर बाद वकील साहब ने उठ कर एक साहब से सिगरेट माँगना चाहा और उधर पगड़ीबाज़ समझे कि मेरे साथ शरारत करने का विचार है। ये साहब इन पगड़ी बाज के बायें हाथ बैठे हुये थे। वकील साहब ने उठकर हाथ जो लम्बा बढ़ाया कि पगड़ीबाज़ ने जो बिलकुल सावधान बैठे थे, घुमाकर एक हाथ बिना देखे-भाले अंधेरे ही में ऐसा वकील साहब को दिया कि उनकी कनपटी पर पड़ा। मुनासिब बात थी कि वकील साहब भी उसका जवाब देते, और उन्होंने ज़ोर से पगड़ी पर एक ऐसा हाथ मारा कि वह उनके गले में उतर आई। पगड़ीबाज के धैर्य का प्याला भर चुका था, और वे ऐसी मुसीबत की तरह जिसका इलाज न हो, शोर मचाकर कूद कर हमारी लाइन पर गिरे और वकील साहब से भिड़ गये। एक बड़ा हुल्लड़ मचा

और रोशनी हुई। एक अँगरेज़ सार्जेन्ट ने आकर दखल दिया। चाँदनी ने और पास बैठने वालों ने इन पगड़ीबाज की झूठी सच्ची शिकायत की। वे हज़रत सार्जेन्ट से भी कड़ाई से पेश आये, जिसका यह नतीजा निकला कि वे हज़रत पकड़ कर निकाले गये और फिर हम ने बाकी खेल इतमिनान से देखा।

खेल खतम हुआ तो वकील साहब से हमने अपनी बीबी की शरारतों की माफ़ी माँगी। किन्तु वकील साहब चाँदनी की शरारतों के क़ायल हो चुके थे और उन्होंने हमारा नाम और पूरा-पूरा पता पूछा और अपना पता बता दिया, और दूसरे दिन अपने यहाँ चाय पीने के लिये बुलाया। हमने तो क्षमा चाही, किन्तु हमारी बीबी ने बात काट कर कहा कि नहीं साहब, हम इस सेवा के लिये हाज़िर हैं और ज़रूर आपके यहाँ आयेंगे। बड़ी कोशिश से वकील साहब हमसे आने का दृढ़ वचन लेकर रुखसत हुये।

शाम को हम वकील साहब के यहाँ पहुँचे जहाँ बहुत ही बनावट के साथ चाय पी और कई ऐसे साहबों से और भेंट हुई कि यदि उनसे न मिलते तो अफसोस ही रह जाता। इसी रात को हम लाहौर से लखनऊ के लिये चल दिये।

२

लौटते समय दो दिन देहली में ठहरे और खूब सैर की। हमने चाँदनी से कहा कि तेरी सैर-सपाटे की भेंट हम दो सौ

रुपये से अधिक कर चुके हैं और अब तुमको तीसरे दर्जे में सफर करायेंगे। खुलासा यह कि किफायत की दृष्टि से यह निश्चय हुआ कि यहाँ से इन्टर क्लास का टिकट लिया जाय। बदक़िस्मती से देहली के स्टेशन पर हमारी बीवी की एक परिचिता मिल गईं, जो अलीगढ़ जा रही थीं और हमारी बीवी ने कहा कि अब हम ज़नाने डिब्बे में सफर करेंगे। हम हमेशा अपनी बीवी को अपने साथ ही बैठाना पसन्द करते हैं। कुछ लोग अपनी बीवी को अपने साथ इस सबब से बैठाते हैं कि बीवी अपनी है; किन्तु वास्तव में हम बातूनी अधिक हैं और फिर बीवी के साथ बातें करने में जो आनन्द आता है वह किसी में नहीं।

हम सोचते थे कि अलीगढ़ के बाद बीवी का साथ हो जायगा, किन्तु बदकिस्मती से मरदाने डिब्बे में जगह की इस तरह तङ्गी हुई कि बीवी को साथ बैठाने का विचार ही छोड़ देना पड़ा। हमने जब बीवी से सेकण्ड क्लास में चलने के लिये कहा तब वह तैयार न हुई। क्योंकि उसको स्वयं ख़्याल था कि बहुत रुपया खर्च हो चुका है।

बदकिस्मती पर बदकिस्मती थी। अच्छी बीवी और अच्छा मुसाफिर दोस्त कठिनाई ही से मिलता है। अलीगढ़ के बाद तो हमें नरक के आनन्द मिल रहे थे। क्योंकि दो-तीन सेठ साहबान आ बैठे थे, जो व्यापार की इस प्रकार अनुचित बातें कर रहे थे कि हम सरसों और तेल का भाव सुनते-सुनते परीशान हो गये और

हमें कहना पड़ा कि हज़रत यह रेल है दूकान नहीं, कि आप साहब तमाम ख़रीद-फरोख्त के क़िस्से यहाँ सुनायें।

टूँडला का स्टेशन आया और हम चाँदनी से मज़ेदार गप्पें करने पहुँचे। उसने इच्छा प्रकट की कि कहीं उम्दे केक मिलें तो अच्छा है। हम केक की तलाश में वेटिंग रूम के होटल की ओर चले। भीड़ भाड़ में थोड़ी ही दूर गये होंगे कि सामने से पुराना दोस्त आता हुआ दिखाई पड़ा। हम दौड़कर उससे लिपट गये और दोनों के मुँह से एक साथ निकला कि भई! ख़ूब मिले। कहाँ जारहे हो, कहाँ से आरहे हो, कैसे हो और कहाँ हो? यही दो चार वाक्य थे, जिनके सवाल और जवाब दोनों ओर से हुये। दो चार ही बातें हुई थी कि हामिद ने हमसे कहा, "यार एक बड़ी ज़ोरदार लड़की देखने में आई है।" हमने आश्चर्य में आकर पूछा कि "कहाँ है।"

हामिद ने कहा, "ज़नाने डिब्बे में जमी हुई है। अरे यार, क्या बताऊँ कि बराबर लगभग हर एक स्टेशन पर उसे देखने के लिये उतरता हूँ; किन्तु ज्योंही पास पहुँचता हूँ, वह ज़ालिम मुँह फेर लेती है। भई! क्या कहूँ गज़ब की लड़की है।" हामिद यह कहते हुये हमें लेकर दिखाने चले।

हम दिल में सोच रहे थे कि आखिर वह कौन लड़की है जिसने यह जुल्म ढा रक्खा है। क्योंकि हमें तो अब तक दिखाई न पड़ी थी। हम दोनों तेज़ी से ज़नाने डिब्बे की ओर पहुँचे। कुछ दूर खड़े होकर हामिद ने कहा, "वह देखो काले बुरके

की नक़ाब सिर पर डाले मुँह खोले हुये बैठी है। कहो कुछ है जोरदार।"

हम भला इसके अलावा और क्या जवाब देते कि भई, वास्तव में ज़ोरदार है। क्योंकि जिसको इस व्यवस्था से मियाँ हामिद ने दिखाया था, वास्तव में वह हमारी बीबी ही थी। हमने मन में कहा कि हामिद बहुत दिन बाद मिला है। और कोई सबब नहीं कि इसको अभ्यास की पट्टी न बनायें। अतः हमने हामिद से कहा कि "भई, हम क़रीब जाकर ज़रा देखें तो ठीक राय क़ायम कर सकें।"

"कहीं ऐसा ग़ज़ब भी न करना, नहीं तो वह ज़ालिम मुँह मोड़ कर बैठ जायगी और फिर इससे भी हाथ धोवोगे।" हामिद ने यह कह कर हमें रोका।

हमने हामिद से कहा कि "यार यह तो बड़ी टेढ़ी बात है, किन्तु यह तो बताओ कि तुम हर स्टेशन पर उतर कर उसके पास गये तो, किन्तु कुछ डोरे भी डाले।"

हामिद जल कर बोले, "तुम भी अजीब बेवकूफ हो। सूरत तक तो वह दिखाती नहीं, डोरे क्या खाक डालेंगे?"

हमने हामिद से कहा कि तुम सदा के बेवकूफ हो और तुम से कुछ नहीं हो सकता। हामिद ने इसका यह जवाब दिया कि "अच्छा तुम अक्लमन्द हो तो कुछ कर लो।" हमने मन में सोचा कि हामिद ढर्रे पर आ रहा है, अतः हमने कहा कि "इस प्रकार नहीं। कुछ शर्त करो।"

हामिद ने कहा, तै रही। हमने कहा कि हम उस पटाखे से यदि पान ऐंठ लायें तो क्या दोगे? हामिद ने ताव में आकर पाँच रुपये वाला एक नोट निकाला और हमने उसको अपनी जेब में रक्खा और चलने को तैयार हुये। हामिद सहसा बोले "याद रखना, दुगुने लूँगा।" हम रुक गये और हमने हामिद से कहा 'दोस्त यह झूठी बात है। हम तो एक तरफा शर्त बदते हैं। पान ले आवें तो नोट हमारा, नहीं तो अपना नोट ज्यों का त्यों वापस ले लेना।" हामिद इस पर तैयार हो गये। हमने दूनी शर्त इसलिये नहीं रक्खी कि कहीं हामिद को सन्देह न होजाये और मामिला बिगड़ जाये।

३

हम पहले धीरे धीरे खिड़की के सामने से चाँदनी को देखते हुये निकल गये। हमारी बीवी भी मानों फुलझड़ी है कि हर बात में उसको मज़ाक ही दिखाई पड़ता है। हमें इस प्रकार असम्बद्ध जाते हुये देख कर मुसकुराई और देर तक हमें देखती रही। इस तरह कि हम भीड़ में मिल कर गायब हो गये। घूम कर हम हामिद के पास आये और कहा कि बोलो अब क्या कहते हो?

"अरे यार तू भी गज़ब का आदमी है। हमारी तो अक्ल का दिवाला निकल गया। तुमने तो केवल एक ही बार उसको सिर उठा कर देखा; किन्तु वह तुमको बराबर देखती रही, और सितम यह कि हँस रही थी।"

हमने कुछ अकड़ कर कहा कि "भाई! हम तुम्हारी तरह बेवक़ूफ़ थोड़े ही हैं। अब की बार हम बात करेंगे।"

हामिद कहने लगे कि मालूम होता है, तुम्हारी क़िस्मत ठोकर खा रही है, और 'पटका-पटकी' के कुछ हौसले दिखाना चाहते हो। अच्छा जाओ तो सही, याद रखना, बुरी तरह मारे जावोगे।"

हम फिर टहलते-टहलते पहुँचे। इधर उधर संदिग्ध आँखों से बन-बन कर देखते जाते थे और बीबी से मजेदार बातें करते जाते थे। उसने जब सुना कि हम अपने एक दोस्त पर चोट कर रहे हैं, तब वह बहुत प्रसन्न हुई। हमने एक पान उससे इस प्रकार लिया कि जैसे कोई देख न ले और चले आये।

अब हामिद सख्त चक्कर में थे और कहने लगे "यार तुम्हें कुछ जादू आता है।" यह कह कर लाचारी की अवस्था में जेबों में हाथ डाल कर मामिले पर विचार करने लगे।

हमने नोट को, जिसे हम जीत गये थे, जेब में से निकाला और आगे बढ़ा कर उनके सामने करके उसको चुम्बन दिया। हामिद हँसकर बोले–हाँ भाई! हम हार गये, नोट तुम्हारा है। किन्तु यह अवश्य कहेंगे कि हो घुटे हुये।"

हमने कहा कि तुम भूलते हो। हमारी इसमें कुछ चालाकी नहीं। बल्कि यह तो हमारी मरदानी खूबसूरती है कि ऐसी-ऐसी छोकरियाँ न मालूम कितनी प्रतिदिन फ़िदा होती हैं।"

हामिद ने कहा, "उस्ताद, बन आई है। जो जी चाहे कहो। अब फिर जावोगे?"

हमने कहा, "अब हम जाना ठीक नहीं समझते। क्योंकि वह हमसे केक माँग रही है।"

"अच्छा खाओ कसम," -हामिद ने आश्चर्य में आकर कहा। हमने झट कसम खाई। क्योंकि सच बात थी, कि वह केकों के लिये कड़ा तकाज़ा कर रही थी। हामिद इस पर बोले कि फिर दे क्यों नहीं आये। जिसका हमने यह जवाब दिया कि हम ऐसी बेवकूफ़ी कभी भी न करेंगे। ऐसा ही है तो तुम स्वयं दे आवो।" हामिद ने जाने की इच्छा प्रकट की। किन्तु इस शर्त पर कि हम जाकर मामिला ठीक करदें। हम दौड़े हुये बीबी के पास पहुँचे और उसको खुश खबरी दी कि दोस्त तुम्हारी दावत कर रहा है और चूकना मत। केक फ़ौरन ले लेना।

हामिद केक तो ले आये, किन्तु अब उनको डर लगा कि कहीं कोई मर्द न हो। हमने कहा कि उसके साथ कोई मर्द नहीं। क्योंकि वह अकेली यात्रा करने की आदी है। तुम बेडर जाओ, किन्तु हामिद तैयार न होते थे। हमने कहा, "अच्छा तुम केक लिये हुये डिब्बे के सामने से निकलो। यदि माँगे तो देना, नहीं तो चले आना।"

हामिद खिड़की के सामने से केक लेकर निकले। उधर हमने अपनी चुलबुली बीबी को इशारा किया। उसने झट हाथ बढ़ाकर ले लिये, और कृतज्ञता ही प्रगट नहीं की बल्कि उनके हाथ में एक पान भी दे दिया।

हामिद हमारे पास आये तो क्या बतायें क्या हाल था। हमारी बीबी के सौन्दर्य और रूप की उन्होंने वह तारीफ की कि हम कृतज्ञता प्रगट करते करते थक गये। क्योंकि हम हामिद से कह रहे थे कि वह हमारी है। गाड़ी चलने को हुई तब हमने भी हामिद के साथ अपना टिकट दूसरे दर्जे का बनवा लिया।

४

अब हामिद दूसरे-तीसरे स्टेशन पर अवश्य हमारी बीबी के पास जाते। हम बीबी से कह आये थे कि हामिद हमारा ऐसा दोस्त है, कि उससे तिनका भर भी बनावट न करना और साथ ही शरारत में भी कमी न करना। हामिद के साथ एक बार हम भी जब उतरे, तब वे बोले कि दो अदमियों का जाना ठीक नहीं। तुम यहीं ठहरो नहीं तो फिर वह बातचीत नहीं करेगी। हमने कहा यदि ऐसा ही है, तो हम सब मामिला चौपट किये देते है नहीं तो तुम हमें जाकर उससे बातचीत करने दो। अतः हम चाँदनी के पास पहुँचे, उसकी शरारत से भरी हुई मुसुकुराहट हमारे दिल पर बिजिलियाँ गिरा रही थी। हमनेजाते ही कहा कि कहो दोस्त, क्या रंङ्ग है। इस पर उसने अपने कोट की जेब से सौ रुपये का नोट निकाल कर कहा कि, "हम तो हामिद साहब के साथ अब इलाहाबाद जा रहे हैं।" हमने कहा, "वाह दोस्त तुमने क्यों कर ऐंठा ?" तो उस ने कहा कि रुपये का बोझ ज्यादा था। मैं तुमसे दो बार कह चुकी थी कि नोट भुना लो, किन्तु तुमने पर-

वाह न की। हामिद साहब के बटुये में जब उन्होंने खोला, यह दिखाई पड़ा। अतः हमने फौरन कहा कि रुपये लीजिये और नोट दे दीजिये। नोट तो वे दे गये, किन्तु जल्दी में रुपये न ले सके।" हमने नोट लेकर जेब में रक्खा और कहा कि अब आवें तो उनको एक पुड़िया देना। बीबी की खुशी के मारे रङ्गत बदल गई और कहने लगी, "जरूर जरूर, मुझको तो याद ही नहीं रहा था।"

हम जब लौट कर आये, तब हामिद ने पूछा कि क्या बातें कर आये। हमने कहा कि हम न बतायेंगे। क्योंकि प्रेमी और प्रेमिका की बातें करके आ रहे हैं। हामिद ने कहा तुम बदतमीज़ हो। वह अच्छे चाल चलन की लड़की है, तुम उससे प्रेमी और प्रेमिका की बातें कर ही नहीं सकते।" नोट इत्यादि का क़िस्सा भी हमने हामिद से न कहा।

दूसरे स्टेशन पर मियाँ हामिद ने कहा, कि हम तो पान खाने जाते हैं। हमने कहा कि मियाँ ज्यादा चोंच न लाल करो, नहीं तो पछतावोगे। हामिद उतर कर गये, समय कम था। शीघ्र ही पान मुँह में दाबे हुये लौट आये। अभी अच्छी तरह बैठ भी न पाये थे कि मुँह बनाना शुरू किया, और खिड़की के बाहर मुँह करके बुरी तरह थूकना शुरू किया। हमारा हँसी के मारे बुरा हाल हो गया। क्योंकि हम जानते थे कि कुनैन की पूरी पुड़िया हामिद के मुँह में घुली हुई है। हमने हँसकर कहा कि भाई, क्या मुसीबत आई? कुछ तो बताओ; तो थूक-थूक कर कहते

जाते थे कि बड़ी शरारती है। मेरा पूरा गला तक कड़वा हो गया। मालूम होता है कि उसने कुनैन मिला दी। हमने कहा, कि भाई कोई कोई पान स्वयं ऐसा कड़वा होता है। बहुत संभव है; तुम्हारा विचार गलत हो। दूसरे स्टेशन पर हामिद तो अपना गला साफ करने में और कुल्लियाँ करने में लगे और हम अपनी बीबी से कह आये, कि अब जब हामिद साहब आयें, तब खिड़की बन्द कर देना।

अब जब हामिद साहब वहाँ पहुँचे, तब खिड़की बन्द। विवश होकर लौट आये। दो-तीन बार अगले स्टेशनों पर भी कोशिश की, पर असफल रहे। अब हमने कहा कि हज़रत वह आपसे बिलकुल बात न करेगी, और स्वयं जाकर और बात करके लौट आये। हामिद ने, आश्चर्य है कि, अब तक नोट की चर्चा ही न की थी। हमने स्वयं नोट निकालकर हामिद को दिखाया, और कहा कि भई! वह तो हमारे ऊपर जान निछावर किये देती है, और यह नोट उसने ज़बर्दस्ती दे दिया और तुमसे तो वह बातचीत भी करने के पक्ष में नहीं है। हामिद ने कुछ चौंक कर कहा कि वह नोट तो मेरा है, और क़ायदे से मुझे वापस मिलना चाहिये। हमने हामिद से कहा, कि भई! क़ायदे से तो यह हमारा है। क्योंकि हमारी प्रेमिका ने हमें दिया है। लेकिन यदि तुम सच कहते हो कि तुम्हारा है तो हम तुमको अवश्य लौटाल देंगे, यदि उसने वापस न लिया तो। हमने हामिद से दूसरी बार कहा, कि भई! जाओ। अपने नोट के लिये भी कुछ कोशिश

कर आवो, तो वे बोले कि अब मैं नहीं जा सकता। क्योंकि वह अब तुम्हारी चीज़ है। जो तुमको प्यार करती है, मैं उससे प्रेम नहीं कर सकता। हाँ, इज्ज़त कर सकता हूँ। हमने अपने प्यारे दोस्त की पीठ ठोंकी और कृतज्ञता प्रगट की। हामिद सहसा बोला कि यार यह तो बताओ कि अब तुम करोगे क्या? क्या इससे शादी करोगे? यदि शादी करोगे तो भला किस तरह?" हमने कहा कि हम इस शरारत भरी लड़की से शादी इत्यादि नहीं करेंगे, और न हम इसकी आवश्यता समझते हैं। हम तो इस समय उसको घेरकर लखनऊ ले जाते हैं। हामिद ने हमसे कहा कि यदि वास्तव में ऐसा विचार है तो बुरा है कि एक लड़की की ज़िन्दगी को नष्ट करके उसे बुरे रास्ते पर लगा रहे हो। हमने कहा, कि मियाँ हम उसकी आक़बत बना देंगे। तुम क्या जानो?" किन्तु हामिद यही कहते गये कि यदि तुम बुरी नीयत से इसको लिये जा रहे हो तो बिलकुल घृणा के योग्य हो। हम मन ही मन अपने दोस्त की पवित्रता की अवश्य प्रशंसा कर रहे थे, किन्तु बातों से पता तक न चलने दिया और यह कह कह कर ख़ूब आनन्द लिया कि चूँकि तुम असफल रहे, अतः हमको भी उपदेश और सुशिक्षा का शिकार बनाना चाहते हो।

९

कानपुर का स्टेशन आया और हमने हामिद से कहा, कि तुम हमारा सामान उतरवाना। हम ज़रा उसको उतरवायेंगे।

हामिद ने कहा कि क्या वास्तव में तुम उसको उतारे ले रहे हो ? वह तो इलाहाबाद जा रही थी। तुमको कदापि ऐसा न करना चाहिये। हमने कहा कि इस समय तो हम उसको लखनऊ की हवा खिलायेंगे। यह कहते हुये हम चले गये। हामिद को इस गाड़ी से सीधा जाना था, अतः हमारा सामान उतरवा कर वह वहीं खड़े थे।

हम अपनी शरारत से भरी हुई बेगम साहिबा को लेकर हामिद की ओर आये। हामिद ने कुछ मुँह-सा फेर लिया। किन्तु हम आगे बढ़े और हमने कहा, कि हामिद अब मजाक़ समाप्त होता है और हमारी बीवी से तुम क़ायदे के साथ भेंट करो। यह कह कर हमने अपनी शरारत भरी बीवी का हामिद से परिचय कराया। वे हक्का-बक्का रह गये और चुप थे, मानों अस्वीकार कर रहे थे।

हमने कहा, यार तुमको पुरानी बातें भी याद है! उस चुलबुली लड़की को भूल गये, जिसने एक दिन खिड़की के सूराख में से हमारी और तुम्हारी आँखो में धूल झोंकी थी। हामिद ने चाँदनी को ध्यान से देखा; और हालाँकि एक ही बार देखा था किन्तु झट पहचान गये, और उछल पड़े, और फिर तो इस शौक़ से मिले कि बयान से बाहर, और कहा, कि मैं पहचान गया, पहचान गया। हमारी मसखरी बीवी ने कहा, कि यदि आप जल्दी पहचानते तो आपका गला ही क्यों कड़ुवा होता? हामिद से हमने बहुत कहा कि लखनऊ

चलो किन्तु वे न मानते थे। हमने चाँदनी से कहा, कि इनको पकड़कर अवश्य ले चलो, नहीं तो हम इन्हें अपनी शादी की मनोरंजक चर्चा न सुना पायेंगे।

आखिर हामिद हमारे साथ लखनऊ दो दिन रहे और हमने ये दो दिन अपने दोस्त के साथ अधिक आनन्द से बिताये। तीसरे दिन हामिद हमें, हमारी मनोरंजक बीवी के मिलने पर बधाई देते हुये विदा हुये, किन्तु इसके जरूर कायल थे कि रेल में उन्हें बेवकूफ बनाया गया। हमने उनके शर्त के रुपये, और सौ रुपये का नोट कानपुर ही में लौटाल दिया था। चाँदनी को उन्होंने जो भेंट स्वरूप घड़ी दी उसकी पीठ पर उन्होंने इस सफर की यादगार इस प्रकार क़ायम की, कि ये शब्द खुदवा दिये:—

"हामिद की ओर से भेंट, अपने प्यारे दोस्त की प्यारी, किन्तु बहुत ही शरारत भरी बीवी को!

पांचवां परिच्छेद

कुनैन का इस्तेमाल

वैसे तो हमारी कई मौसियां हैं किन्तु इनमें से जो सबसे छोटी हैं वे बहुत फर्स्ट क्लास हैं। इस कारण से नहीं कि वे हमें अधिक प्यार करती हैं बल्कि इस कारण से कि हमें और हमारी बीवी को वे बहुत पसन्द करती हैं। एक बार हमारे यहाँ आईं तो हमारी बीवी का नाम चाँदनी रख गईं। वे कहने लगीं कि चूँकि तेरी बीवी चाँदनी की तरह खिली रहती है अत: उसका नाम चाँदनी बहुत ठीक है। हमने कहा कि आपको नहीं मालूम यह कदापि इस योग्य नहीं कि इसका नाम चाँदनी रक्खा जाये; बल्कि इसका नाम तो हम अँधेरा इत्यादि रखने की बात सोच रहे हैं। किन्तु वे न मानी और उन्होंने हमारी जन्मजात नेक बीवी को चाँदनी की उपाधि दे ही दी। हम दो-चार दिन चाँदनी कहने के बजाय अँधेरा ही कहते गये किन्तु अन्त में हम भी चाँदनी कहने लगे, जो अब तक जारी है और उसी समय से हम उसे चाँदनी कहते हैं।

नौकरी ऐसी चीज़ है कि एक जगह रहना ही नहीं होता। किन्तु एक बात यह भी है कि जहाँ जाना होता है वहाँ नये यार-दोस्त पैदा हो जाते हैं। इस नई जगह में हमारे एक दोस्त पैदा हो गये। ये काश्मीरी पंडित थे और नहर के इन्जीनियर थे। और थोड़े ही दिनों में उनसे काफी दोस्ताना होगया, जिसका कारण कदाचित् यह था कि चाँदनी की और उनकी बीवी की ख़ूब घुटती थी। चाँदनी उनके यहाँ प्रायः जाया करती थी। उनके बँगले पर जब एक बड़ा-सा नहाने का हौज़ देखा, तब उसने उनकी बीवी से कहा, कि आखिर क्यों न इसको साफ़ करके भरा जाये? यह हौज़ बहुत ही मैला पड़ा था। तैरना सीखने के लिये बनाया गया था, और नहर से उसमें पानी आने का रास्ता था। चारों ओर से बन्द था। और छत पर टीन छाया हुआ था। दोनों की सलाह होगई और पंडित जी की बीवी ने उसकी सफाई इत्यादि शुरू करा दी। इस हौज़ के शौक़ में चाँदनी पागल हो रही थी। कई दिन हौज़ की मरम्मत और सफाई देखने के लिये गई और बड़ी दिलचस्पी ले रही थी। हमने उसके लिये बम्बई से नहाने का ज़नाना सूट मँगाया जिसको देखकर इंजीनियर साहब की बीवी ने भी मँगाया। बड़े शौक़ और प्रतीक्षा के बाद वह दिन आया कि हौज़ भरा गया और वह नहाने गई। सफ़र में, पहली बार उसे पानी में खेलने का अवसर मिला, तो वह प्रति दिन जाने लगी। धीरे-धीरे इस शौक़ ने संक्रामक रूप धारण कर लिया, और दूसरी

औरतों को भी शौक़ पैदा होगया और इंजीनियर साहब के बँगले पर मानों नहाने और तैरने का एक क्लब स्थापित होगया। हम इस क्लब से बहुत ज्यादा परीशान थे। क्योंकि यह तो प्रतिदिन का झगड़ा होगया कि बीवी तैरने चली जाती और हम शाम को इधर-उधर मारे-मारे फिरते। हम बहुत प्रयत्न करते कि किसी दिन तो न जाये और उसको रोकते, किन्तु वह कहती थी कि अब तुम क्लब इत्यादि जाना शुरू कर दो, मैं तैरना सीख रही हूँ। हम कहते थे कि एक न एक दिन तू डूबेगी और उल्टी लटकाई जायगी। इंजीनियर साहब के यहाँ उनकी बीवी ने यह सलाह दी थी, कि मोटर के ट्यूब में हवा भर कर उसकी सहायता से तैरना चाहिये। अतः हमने दो ट्यूब मोटर के मँगा कर दे दिये। खुलासा यह कि उसको ऐसा शौक़ पैदा हो गया कि दिन भर यही इन्तज़ार करती रहती थी कि कब शाम हो और मैं जाऊँ। वहाँ से आकर अपनी तैराकी और ग़ोताख़ोरी की मनोरंजक कहानियाँ सुनाया करती। शरारतें वहाँ भी उसके साथ थीं और उसका यह मनोरंजक काम था कि वह चुपके से पानी में बैठकर किसी नई आने वाली बीवी के पैर को घसीट कर उसे गिरा दिया करती थी।

यह हौज़ वास्तव में केवल तैरने और नहाने ही के लिये बनाया गया था। तीसरे दिन सवेरे नहर से साफ़ पानी इसमें भर दिया जाता था। एक ओर इसमें दो-तीन सीढ़ियाँ थीं और कम पानी था; किन्तु आगे दूसरी ओर सतह ऐसी ढालुआँ थी

कि गहरा होता चला गया था, इस तरह कि दूसरे किनारे पर आदमी के क़द से भी अधिक गहराई थी।

एक दिन की बात है कि चाँदनी ने हमसे कहा, आज हम बहुत जल्द जायँगी; क्योंकि इञ्जीनियर साहब के यहाँ कुछ मेहमान आये हुये हैं। और दूसरी बीबियाँ भी आयेंगीं। हमसे कहा करती थीं कि अब हम कुछ तैर लेती हैं। वहाँ आज काफ़ी औरतों का मजमा था, और चाँदनी को एक और शरारत भरी बीबी वहाँ मिल गई। इन दोनों ने यह सलाह की कि एक बीबी को जो पानी में बहुत डरती थी, घसीटा जाय। अतः इन दोनों ने ऐसा ही किया, और फिर पानी में ऐसा हुल्लड़ मचाया कि वह बेचारी गहरे पानी की ओर गिरीं। इस गड़बड़ में उन्होंने चाँदनी को घसीट लिया और उसका परिणाम यह हुआ कि दोनों गहरे पानी में ग़ोते खाने लगीं। हालाँ कि मोटर के ट्यूब पानी में मौजूद थे, किन्तु वहाँ होश ही दुरुस्त न थे कि उनकी सहायता ली जाती। तात्पर्य कि एक दूसरे को पकड़ कर इस प्रकार ग़ोता खा रही थीं कि नौबत डूब जाने तक की पहुँची। इसी समय दूसरी बीबियों ने एक साड़ी भीतर फेंकी, जिसका किनारा पकड़ कर दोनों निकल आईं, किन्तु बुरा हाल था। नाक और मुँह से न मालूम कितना पानी पेट में जा चुका था और आश्चर्य नहीं, कि यदि थोड़ी देर और बीत जाती तो दोनों डूब जातीं।

हम घर पर प्रतीक्षा कर रहे थे कि वह मुसुकुराती हुई

पहुँची। हमने कहा कि आज क्या मामिला है कि जल्दी आ गई तो उसने किस्सा सुना दिया। हमने समझा कि मामूली सी बात है, अतः हमने बीवी की ख़ूब दिल्लगी उड़ाई। उसको प्यास लग रही थी और उसने दो बार दो गिलास पानी पिया, और फिर भी प्यास न बुझी। थोड़ी देर बाद उसको क़ै हुई और तबीयत खराब हो गई। खाँसी अलग थी। तकलीफ इतनी हुई कि डाक्टर को बुलाना पड़ा। डाक्टर ने कहा, 'मालूम होता है, फेफड़ों पर भी पानी का कुछ असर पहुँच गया है, क्योंकि खाँसी बहुत आ रही थी। उन्होंने कहा, दवा सवेरे दी जायगी। पहले पेट में से पानी निकालना चाहिये। उन्होंने एक चारपाई मँगाई। और उसका पैताना ख़ूब ऊँचा कर दिया। फिर चाँदनी से कहा, कि उस पर लेटो। उसको इस प्रकार लटकाया, कि मुँह सिरहाने की ओर लटका रहे और औंधी पड़ी रहे। पेट के नीचे एक तकिया रख कर हम उस पर तैनात किये गये कि समय-समय पर उसको ऊपर से दबा कर क़ै करायें। डाक्टर साहब के जाते ही हमने कहा, कहो हम कहते थे न कि उल्टी लटकाई जावोगी। खुलासा यह कि दो-तीन घंटे तक थोड़ी-थोड़ी देर बाद उसको दबाते और फिर क़ै होती रही और इतना पानी निकला कि हमें बड़ी परेशानी हुई। क़ै करते-करते बेचारी परेशान हो गई और हैरान हो जाने से हरारत-सी हो गई। उसको बड़ी बेचैनी थी और नींद न आती थी। और घबड़ाहट और प्यास थी। हमने बड़ी कठिनाई से उसको थपक-थपक कर और सिर

सहला-सहला कर सुलाया। सबेरे उठी तो तबियत रात की तकलीफ के कारण बहुत ही सुस्त और कमज़ोर थी।

हम कचहरी से लौटे तो देखा, कि चारपाई पर चादर ओढ़े लेटी हुई है। हम जानते थे कि अवश्य जाग रही होगी, और बन कर पड़ी है। अतः हमने आते ही गुदगुदाया। उसने हँसते हुये चादर को जब मुँह से हटाया तब हम क्या देखते हैं, कि चेहरा तमतमाया हुआ है और लाल हो रहा है। हमने मस्तक पर हाथ रख कर देखा तो बुखार था।

अब चाँदनी को बारी से बुखार आने लगा। बुखार बन्द हुआ तो फिर और तबियत खराब रहने लगी। हमने हकीम के इलाज की सलाह दी। वह न जाने क्यों हकीमों के इलाज के खिलाफ थी। कठिनाई से राज़ी हुई। दूसरे दिन हमने हकीम साहब को बुलवाया। ये हकीम वास्तव में कुछ यों ही से थे! चाँदनी ने जब उनको देखा, तब और भी बुरी राय क़ायम की। हकीम जी ने हाल पूछा और ब्योरेवार हाल सुना। हाज़मे का जब हाल पूछा, तब उसको शरारत सूझी। उसने उनसे कहा, कि हाज़मा तो मेरा आज-कल ऐसा है कि चाहे जो खाऊँ, वह सब हजम होकर पूरा-पूरा ख़ून बन जाता है। इस तरह कि पाखाना तक नहीं बनता। हकीम साहब की समझ में न आया कि वे उसको जान-बूझ कर अनजान बनी हुई समझें, या वास्तव में यह समझें कि रोगी भ्रान्ति में है। बहरहाल उन्होंने पहले तो क़ब्ज़ के सम्बन्ध में दुहराया, फिर नुसखा लिखा। चाँदनी उठ

कर दो खोटे रुपये निकाल कर लाई, जिसे हमने उनकी भेंट किये। हमें उसका पता बाद में लगा, और हमने खोटे रुपये लौटाल लिये। हकीम जी का नुसखा उसने फौरन फाड़ डाला और फिर डाक्टरी इलाज शुरू कर दिया, जिसमें कुनैन का इस्तेमाल अधिक था; किन्तु शीघ्र ही आराम हो गया। डाक्टर साहब ने हमसे कहा था, कि यदि नैनीताल इनको ले जाओ, तो बहुत शीघ्र तबियत ठीक हो जायगी। अतः हमने उससे वादा कर लिया कि तुझको अवश्य नैनीताल की सैर करायेंगे।

२

इन दिनों कुनैन के प्रयोग से न जाने चाँदनी को क्या हो गया? पहले ही अपनी शरारतों में क्या कम कुनैन का इस्तेमाल करती थी; और अब तो मानों वह पागल हो गई। एक बड़े बोतल में, उसने सैकड़ों ग्रीन कुनैन खोल-खोल कर बहुत तेज़ मिक्सचर तैयार कराया और पुड़ियाँ अलग थीं। शक्कर में मिली हुई कुनैन अलग रक्खी गई, और यह सब केवल शरारत की नियत से। समय समय पर हमारे दोस्त ही अभ्यास की पट्टी नहीं बनते थे, बल्कि हम और बहुधा दूसरे लोग भी शरारत का निशाना बनते थे, और फिर उनमें कुछ ऐसे भी होते थे, जिनसे मज़ाक़ करना अभिष्ट ही न होता था। हमारी बाहर की आलमारी में खाने-पीने की चीज़ें रक्खी रहती थीं। हम तो केवल समय पर बीवी के साथ ही खाते थे, और वह स्वयं निकालती थी। किन्तु हमारे यार-दोस्त प्रायः बेवक़्त उस पर डाकेज़नी

करते थे। एक दिन की बात है कि एक साहब इस आलमारी पर हमला कर बैठे। उन्होंने एक बिस्कुट लेकर, कुछ रसभरी का जाम चढ़ा कर, उसे जब खाया, तब बस बल खा गये; और थूकते फिरे। दौड़ कर बरामदे से सुराही लेकर जब कुल्ली की, तब और भी आनन्द आया। वहाँ एक की जगह पर आज दो सुराहियाँ रखी थीं; और उनमें से एक में कुनैन घुली हुई थी। हमने देखा कि इस सुराही पर एक लेबिल लगा है, कि यह पानी पीने का नहीं है। हम भीतर पहुँचे कि बीबी से इस नालायकी का कारण पूछें, तो वहाँ दूसरा ही रङ्ग था। वह खड़ी हुई मुर्गियों को घेर कर धीरे-धीरे पानी के कुण्डे की ओर ला रही है। हम जब आये, तब मुर्गियाँ कूद-कूद कर भाग गईं। प्रथम इसके कि हम कुछ कहें, वह हम पर बिगड़ने लगी कि मुर्गियाँ क्यों भगाई? हमने कहा, आखिर क्या हुआ, तो वह कहने लगी, 'हम इन्हें पानी पिलाने लाई थीं।' हमने कारण पूछा तो हँसने लगी। मालूम हुआ कि मुर्गियों के कुण्डे में कुनैन मिलाकर रक्खी गई है। हमने उससे कहा कि आखिर यह क्यों तू इस प्रकार ज़ालिम बन गई है कि जानवरों तक को परीशान करती है, और फिर शिकायत की, कि आखिर यह कैसी बेवकूफी है कि खाने-पीने की चीज़ों, और पीने के पानी में भी कुनैन मिला दी। उसने कहा इसलिये कि हर आदमी न खाये और सुराही में इसलिये मिलाई, कि देखूँ दिन में कितने अक्ल-मंद आते हैं और कितने बेवकूफ। क्योंकि सुराही पर लिखा हुआ

है कि यह पानी पीने का नहीं है। फिर भी लोग न मानें तो किया क्या जाये ? हम खड़े बातें ही कर रहे थे कि नौकर लड़का कुत्ते को बुला कर लाया। उसका खाना उसके बरतन में रक्खा हुआ था। हमने कहा, यह क्या मामिला है, कि कुत्ते को इस समय खाना दिया जा रहा है, तो वह कहने लगी, तुम रहने दो। हम हँसी से समझ गये। बेचारे कुत्ते ने जो तेजी से रोटी और दूध खाया, तो वह थूकता फिरा और चाँदनी तमाशा देख कर पागलों की भाँति हँसी के मारे लोटती फिरी। हम भी हँसने लगे कि कैसी अजीब बीबी हमें मिली है। इतने में दौड़ी गई, और एक रकाबी लाई। उसको खोलकर जब दिखाया, तब हम क्या देखते हैं कि अण्डों का लाजवाब हलुआ है। केसर और केवड़े की महक से दिमाग तर होगया। चाँदी के वर्क़ लगे हुये हैं, बादाम और पिस्ता के छोटे-छोटे टुकड़े छिड़के हुये हैं। हमने कहा, यह तो बड़े जोर की चीज़ तुमने तैयार की है। हमें बिलकुल ख्याल न आया कि इस नालायक ने इतने पैसे बरबाद करके उसको भी कड़ुआ कर डाला है। फ़ौरन एक कौर डाल ही तो लिया। वह प्लेट रखकर हँसी के मारे बेदम होकर लोट-पोट होकर कमरे में पलँग पर जा पड़ी। हमने गला कड़ुवा होने से पहले ही झट थूक दिया, और उसको इस शरारत की सज़ा के लिये गुदगुदा के बेदम कर दिया। तात्पर्य कि दिन रात उसको अब कुनैन के मज़ाक सूझते थे। वह कहती थी, कि मेरा क़ाबू नहीं, जो बाज़ार की सभी मिठाइयों में कुनैन मिला दूँ।

तात्पर्य कि कुनैन खिलाने का अभ्यास आज-कल ज़ोरों पर था, किन्तु हम नहीं जानते थे कि कुनैन का यह ख़ब्त अभी क्या क्या रङ्ग लाने वाला है !

३

हमने चाँदनी से कहा कि यदि तुमको वास्तव में नैनीताल चलना है, तो कुनैन खिलाने की आदत को कम करो; नहीं तो तेरा वहाँ जाना बिलकुल स्थगित हो जायगा। इसपर उसने कहा, कि यदि कहीं ऐसा हो गया, तो फिर समझ लो कि सारे घर में कुनैन ही कुनैन दिखाई पड़ेगी। नैनीताल जाने की तैयारी उसने बड़े ज़ोर से की। सामान यद्यपि थोड़ा था, किन्तु कुछ गरम कपड़े भी थे। चलते समय, हमने देखा, कि एक डिब्बा पान बनाने की जगह पर पान के दो डिब्बे तैयार हो रहे हैं। हमें मालूम न था कि एक में कड़ये पान हैं। नहीं तो हम उस शरारत को रोक देते। केवल पानों के कारण वास्तव में गाड़ी में ऐसी देर हुई, कि हम टिकट तक न खरीद सके और कठिनाई से चलती गाड़ी में सामान इत्यादि जिस तरह हो सका, रख कर एक मरदाने ड्योढ़े डिब्बे में बैठ गये, जो संयोग से सामने ही था। इसमें काफी गुंजाइश थी, और चाँदनी ने झट बिस्तर खोलने के लिये कहा। हमने कहा कि यह इन्टर क्लास है। इस समय खाली है; किन्तु आगे चलकर कदाचित् भर जाये। किन्तु उसने कहा, कि नहीं। जब जगह काफी है, तब बेकार क्यों ज्यादा रुपये खर्च किये जायँ। बात यह थी कि यह डिब्बा बहुत

बड़ा था और आदमी केवल तीन ही थे। इससे अधिक क्या जगह मिलती! किन्तु हम जानते थे कि आगे चल कर अवश्य मुसाफिर आयेंगे और आश्चर्य नहीं कि सोने को भी न मिले। उसने कहा, कि बिछौने ऊपर की लटकी हुई बेंच पर लगा लो, जिससे कि फिर सब झगड़ा ही जाता रहे। अतः हमने यही किया। एक पर उसका बिस्तर लगाया और उसके नीचे जो सीट थी, उसपर हम बैठ गये। क्योंकि हमें अभी अगले स्टेशन पर टिकट खरीदने थे। बीवी को तो हमने ऊपर चढ़ा दिया और वह आराम से तकिया लगा कर लेट गई। अगले स्टेशन पर मौका न मिला। किन्तु हमने गार्ड से कह दिया। दूसरे स्टेशन पर हम टिकट लेकर जब लौटे तब क्या देखते हैं कि एक भारी-भरकम लाला साहब हमारी सीट पर कब्ज़ा किये विराज-मान हैं। उनका ढेर का ढेर सामान ऊपर नीचे सब रक्खा हुआ था। हमने कहा कि हज़रत दूसरी जगह खाली हुये भी आपने हमारी जगह क्यों लेली? वे कहने लगे, कि मैं कोने की जगह चाहता था। हमने दूसरी कोने वाली जगह बताई, तो उन्होंने कहा कि वहाँ पाखाना है। जब हमने कुछ और बहस की, तब वे बोले, कि हज़रत आपका नाम तो इस जगह पर लिखा न था और न आपने अपनी जगह रजिस्टर कराई थी। जितना हक़ आपको है, उससे अधिक मुझको है। हम चुप हो गये।

यद्यपि डिब्बा काफी बड़ा था, किन्तु धीरे-धीरे मुसाफिरों की भीड़ होनी शुरू हो गई। हमने देखा कि हमें नींद आ रही

है। और हमने सोचा, कि यदि मुसाफिरों के आने का यही क्रम जारी रहा तो हम नीचे आराम से न सोयेंगे। अतः हमने उस ऊपर वाली लटकी हुई बेंच पर बिछौना लगाया, जो चाँदनी की जगह के बिलकुल मिली हुई थी। वास्तव में बीच में एक खिड़की का अन्तर था। हमें नींद आने ही वाली थी कि नीचे कुछ राज-नैतिक मामिलों पर बात-चीत होने लगी। चूँकि हमारा भी राज-नीति में काफी अधिकार है, इसलिये हम बहस करने के लिये नीचे आ गये। हम तो राजनैतिक बातों पर बहस कर रहे थे, किन्तु हमारी शरारत भरी बीवी अपने नियमानुसार कुछ और ही कर रही थी। वास्तव में उसको अपने नीचे की मंजिल में रहने वाले मुसाफिर पर बहुत क्रोध आ रहा था। और वह बदला लेने की चिन्ता में थी। उन हज़रत ने एक स्टेशन पर कुछ खाने का प्रबन्ध किया। सबसे पहले अपने लोटे में पानी भर कर रक्खा। चाँदनी ने जेब से छोटी शीशी निकाल कर उसमें कुनैन का तरल सत्त इस सफाई से ऊपर ही से टपका दिया, कि उन्हें कानों कान खबर तक न हुई। क्योंकि वे खरीद-फरोख्त में लगे हुये थे। वे उठकर बाहर गये, और खिड़की में से अपनी जगह पूरियाँ और तरकारी खरीद कर रक्खी और मिठाई वाले से बातचीत करने लगे। इतने में उस चुलबुली ने पूरियों के साग को भी कड़वा कर दिया। लोग इस तरह बातों में लगे थे, कि उसने ऊपर से चुपके से शीशी में से बूँदें टपका दीं; और किसी को पता तक न चला।

हम बड़े आनन्द से राजनीति पर बहस कर रहे थे, कि ज़ोर से थूकने और 'खा खा' की आवाज आई। मुड़कर देखा तो लाला साहब चलती गाड़ी से सिर बाहर निकाले थूक रहे हैं। लोटा लेकर जब कुल्ली की, तब और भी मज़ा आया। बुरी तरह खँखार कर थूक रहे थे। हमने पूछा कि हज़रत यह क्या बला है, तो वे बहुत ज्यादा परेशान होकर थूकते हुये बोले, कि साहब, मालूम होता है, पूरी वाले ने मुझे ज़हर दे दिया। किन्तु पानी कैसे कड़ुआ हो गया, यह बात किसी की समझ में न आई।

हमने मन में कहा, अरे गज़ब हो गया। क्योंकि हम समझ गये कि यह किसकी कारगुजारी है। वह अपनी चादर के एक किनारे से झाँक कर तमाशा देख रही थी। जैसे ही हमने उसकी ओर देखा कि उसने मुँह ढँक लिया। लाला साहब ने पूरियाँ और साग फेंक दिया और पानी भी फेंक दिया। किसी की समझ में न आता था कि यह क्या बात है। लाला साहब मिठाई पर सन्तोष करके रूमाल से मुँह पोंछ करके लेट गये। लाला साहब के सिरहाने एक बक्स रक्खा था, उस पर एक बण्डल था, और उसके ऊपर एक टोकरी रक्खी थी। वे उठे और उन्होंने उसमें से एक बड़ा सा खुशबूदार अमरूद निकाल कर खाया और फिर उसी प्रकार लेट गये। हम फिर बातें करने में लग गये। जब थक गये और नीचे काफी मुसाफिर भर गये, तब हम अपनी जगह से सोने के बिचार से उठे। नीचे की बेंच पर

लाला साहब बेखबर सो रहे थे। हम चाँदनी के पास आये, और हमने उसके कान में उँगली डालकर कहा—"यदि तू शरारतों से बाज़ न आई, तो अवश्य इस सफ़र में कहीं मारी पीटी जायगी।"

हम अपनी जगह पर चढ़ गए। हम लेटे ही थे, कि हमारी पीठ में कोई गोल गोल चीज़ गड़ी। हमने जब उठकर देखा, तब तीन बड़े-बड़े इलाहाबादी अमरूद पाये। हम झट समझ गये कि इसने उस टोकरी में से अमरूद चुराये हैं। हमने जब उधर देखा, तब वह धीरे-धीरे हँस रही थी और उँगुली के इशारे से चाकू माँग रही थी। वह वास्तव में चादर में मुँह लपेटे हुये अमरूद कतर कर खा रही थी। हमने चाकू निकाला और अमरूद काट करके बीबी को दिया। अमरूद की टोकरी उसके पैताने के पास थी, और उसने अब अपना सिर उस ओर करके धीरे-धीरे टोकरी से अमरूद निकालना शुरू किये। क्योंकि टोकरी का मुँह ऊपर के तख्ते से बिलकुल मिला हुआ था। लाला साहब को पता हो न था कि क्या हो रहा है। उसने एक-एक करके हमारे ऊपर अमरूद फेंकना शुरू किये। हम इशारे से कह रहे थे कि तू अवश्य मारी जायगी, और वास्तव में हम बहुत घबड़ा रहे थे कि कहीं यह चोरी करने में पकड़ी न जाये! एक एक करके उसने सभी अमरूद निकाल लिये और हमसे इशारे से कहा, कि नीचे लोगों को बाँट दो। हमने फिर देखा, और अमरूदों के मालिक साहब को बेखबर

सोता हुआ पाया। अतः हमने झट उतर कर स्वाभाविकता के साथ सभी लोगों के हाथ में दो-दो अमरूद दे दिये, और शेष सबके बीच में एक बेंच पर रख दिये, कि खाइये। उनमें से एक साहब चाँदनी की यह सभी शरारतें कदाचित् देख रहे थे। क्योंकि वे कोने में बैठे हुये धीरे-धीरे मुसकुरा रहे थे। चाँदनी ने उनको देखा और वह समझ गई। अतः उसने उँगुली से चुप रहने के लिये कहा, और वे हँस कर सिर हिलाने लगे कि मैं न बताऊँगा। हम पहले की भाँति अपनी जगह पर आकर लेट गये। नीचे लोग बड़े आनन्द के साथ अमरूदों की दावत खा रहे थे, कि स्टेशन आया, और रेल के झटके से लाला साहब जाग उठे। वे हज़रत, जो उस कोने में बैठे थे और इस शरारत से परिचित थे, एक साहब से बोले, कि जनाब लाला साहब को भी अमरूद खिलाइये। लोगों ने जब उनसे कहा, तब कहने लगे कि मेरे पास स्वयं इलाहाबाद के अमरूद मौजूद हैं। एक साहब बोले कि अच्छा होता यदि आप कम से कम अपने अमरूदों का नमूना ही चखाते। उन्होंने मुसकुरा कर कहा—'बड़े शौक़ से टोकरी से निकाल लीजिये।' एक साहब उठे और उन्होंने टोकरी में हाथ डाल कर उसको खाली पाकर कहा, "वाह जनाब! आप अच्छा मज़ाक़ करते हैं। यहाँ तो पता तक नहीं है।" यह सुन कर वे तड़पकर उठे, और टोकरी को खाली पाकर चाँदनी की ओर देखा, जो इस समय अमरूदों की टोकरी की ओर पैर किये हुये और चादर ओढ़े हुये मानों

बेखबर सो रही थी। उनकी इस परीशानी पर कदाचित् लोग इस मामिले को समझ गये और एक अच्छा क़हक़हा लगा। बेचारे यह कहकर अपनी जगह पर बैठ गये कि यह मज़ाक़ ठीक नहीं।

सवेरे हम बरेली के स्टेशन पर उतरे। सामान वेटिंग रूम में रखवाया। नाश्ता किया और बरेली शहर की ख़ूब सैर की। दोपहर को लौटकर खाना स्टेशन पर खाया। जब चाँदनी को मालूम हुआ कि खाने के दाम पूरे साढ़े सात रुपये चार्ज होंगे, चाहे हम सब खायँ या थोड़ा, तब उसको बड़ा क्रोध आया। वास्तव में सबेरे नाश्ता अधिक कर लिगा था, और इस समय कुछ खाया न गया। हमने देखा भी नहीं और, तब हम हाथ धो रहे थे तब उसने बचा हुआ सब खाना कुनैन से खराब कर दिया। केवल इतना ही नहीं किया, बल्कि हम तो खाने की क़ीमत चुकाने में लगे, और उसने अवसर पाकर बाहर के बरामदे में अँगीठी पर चाय की जो बड़ी केतीली रक्खी थी, उसको भी खराब कर दिया। हम दोनों शीघ्र फिर शहर चल दिये। दो चार मेज़ें और कुर्सियाँ खरीद कर घर भेजवाईं और फिर विभिन्न स्थानों की सैर करने चले गये। चिराग़ जलने के बाद बड़ी देर में स्टेशन पर लौट कर आये और हमें यहाँ आकर मालूम हुआ कि होटल के नौकरों ने खाना खा-खाकर खूब थूका, और इसके अतिरिक्त कई मुसाफिरों को कड़वी चाय पिलाने के कारण यह किस्सा तूल पकड़ गया। यहाँ तक कि

एक अँगरेज़ ने होटल के बैरे को मारते-मारते छोड़ा। हम चुप थे और हमने बिगड़ कर चाँदनी से कहा, कि मालूम होता है कि तेरी बिलकुल शामत आगई है, और तू स्वयं मार खायेगी और कदाचित् हमें भी पकड़ावेगी। वह भी केवल अपने ज़ुल्म के बदौलत कि न स्वयं खाये और न किसी को खाने दे। आखिर इससे क्या लाभ ?" हमारे इस लेक्चर का प्रभाव उल्टा पड़ा और वह कहने लगी कि "तुम्हारी बला से। हम मारें जाँय, तो तुम हमको न बचाना।" हम तो एक जगह बैठ गये, और वह झल्ला कर प्लेट फार्म पर सीधी टहलने चली गई। सबसे पहले उसने यह ज़ुल्म किया कि मुसलमानों के पानी वाले घड़ों का मुआइना करके सारा पानी कड़ुवा कर दिया। इसके बाद तो और भी गज़ब किया, और वह यह कि रेलवे अफसरों के कमरे के आगे एक सुराही रक्खी थी। इसको भी कड़ुवा कर दिया। वहाँ से वह सीधी हिन्दुओं के पीने के पानी के पास गई, किन्तु वहाँ कड़ा पहरा था। वह वहाँ घूम ही रही थी कि हम भी पहुँचे। और चूँकि शरारत उसके चेहरे से प्रकट हो रही थी, अतः हम समझ गये और उसको पकड़ लाये, और कहा कि कम्बख्त तुझको आज यह क्या हो गया है। क्यों मार खाने की बातें कर रही है, किन्तु यह सब व्यर्थ था। क्योंकि वह फिर हमारे पास से सरक गई और अब उसने एक दूसरी ही शरारत की। ज़रा कुछ अलग जगह में खड़ी होकर पान वाले को बुलाया। उससे दो आने के पान लिये और हमारे लिये,

खाम-खाह सिगरेट की डिबिया खरीदी। और उसको दस रुपये का नोट दिया। उससे यह पूछ लिया था कि उसके पास पाँच के नोट के रुपये हैं। पीछे कहा कि पाँच का नोट नहीं, दस का है। वह खोंचा रखकर नोट के रुपये लेने गया। और यहाँ उसने कत्था और चूनाबिलकुल कड़ुवा कर दिया। हमें इसका बिलकुल ज्ञान न हुआ। शरारत करके वह लौट आई, और मुसुकरा रही थी। हमने कहा, क्या कहीं नया शिगूफ़ा छोड़ा है? क्योंकि उस समय उसके चेहरे और आँखों से शरारत टपक रही थी। हमने जब आग्रह किया, तब उसने कहा, कि "मैंने कुछ नहीं किया है। कवल पान वाले से दो आने के पान और तुम्हारे लिये सिगरेट ले आई हूँ।" हमने चौंक कर कहा, कि क्या तूने पान वाले के साथ भी कुछ किया? इसपर उसका हँसी के मारे बुरा हाल हो गया, और उसने धीरे-धीरे सब हाल सुनाया। हमने कहा, कि अब तू विलकल पुलिस के द्वारा पकड़ ली जावोगी। यह बहुत बड़ा अपराध है। हमने बड़ी ही मनुष्यता के साथ इन सभी शरारतों की कठिनाइयों को बताया, और कहा कि अब यदि तूने ऐसा किया तो तेरा कुशल नहीं है। वह कुछ राज़ी होकर बोली कि यदि बहुत ज्यादा आवश्यकता पड़ी तो मैं करूँगी, नहीं तो न करूँगी। फिर उठ कर जाने लगी, तो हमने पकड़ लिया कि अब हम तुझे न जाने देंगे। हमारे पास बैठी रह। क्योंकि तू फिर शरारत करेगी। उसने हमसे बहुत कुछ वादा किया, किन्तु हमने न छोड़ा, तो उसने कहा कि अब मैं अपना वादा वापस लेती हूँ।

हमने एक न सुनी। रात का समय था। अतः हमने कुछ मामूली नाश्ता और चाय वेटिङ्ग-रूम में मँगवाई। चाय आई और हमने दो प्यालियाँ बना लीं। हम चम्मच से चाय में शक्कर मिला रहे थे, और कुल्ली के लिये पानी मँगवाया था। क्योंकि पान खा रहे थे। हम बाहर से कुल्ली करके आये, तब हमने अपनी शरारत से भरी हुई बीवी के चेहरे पर वह खामोशी देखी, जो बहुत ही गहरी शरारत से सम्बन्ध रखती है। हमने जब प्याली की ओर देखा, तब हम समझ गये, कि यह चुलबुली कदाचित् अब हमारे ऊपर हाथ साफ कर रही है। हमने ध्यान से जो चेहरा देखा, तो हमारा सन्देह और भी निश्चय हो गया, और वह हँसने लगी। हमने कहा, "क्या पागल बन गई है? क्यों हँसती है?" इस पर वह और हँसी और पान वाले का क़िस्सा कहने लगी। हम उसी प्रकार चाय चला रहे थे, और हमारा सन्देह कुछ मिट गया था, और हमने चाय की प्याली पीने के लिये उठाई, कि उसको फिर हँसी आई, जिसको उसने थूकने के बहाने से टालना चाहा। वह अँगीठी में थूकने के लिये उठी, और उधर हमने अवसर पाकर, बचाव की दृष्टि से, इस सफाई से चाय की प्याली बदल ली, कि उसको सन्देह तक न हुआ। हम इस चाय से इस तरह से खेल रहे थे, कि जैसे उसके ठंडे होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, कि उसने अपने आगे की चाय की प्याली उठाई, जो हमारे लिये कुनैन के द्वारा ज़हर के समान बना कर रक्खी गई थी। पहले ही घूँट में बस उसको मज़ा मिल गया।

चाय गरम न थी, और चूँकि उसको सन्देह भी न था, अतः एक बड़ा सा घूँट उसने ऐसा पी लिया कि गले के पार हो गया। क्या बतायें कि हमने कैसे झुक-झुक कर सलाम किये और कैसा मज़ा आया। उसका भी हँसी के मारे वह बुरा हाल था कि थूकना मुश्किल हो गया।

४

इसके बाद हम प्लेट-फार्म पर आये, और थोड़ी देर में काठ-गोदाम वाली गाड़ी आ गई। हमने अपना सामान एक दूसरे दर्जे के एक डिब्बे में लगवाया, जो बिलकुल खाली था। हम उस पान वाले का तमाशा देखने के लिये गये, जिसके कत्थे और चूने को चाँदनी ने कड़वा कर दिया था। हमें अधिक खोजने की परीशानी न उठानी पड़ी, क्योंकि बहुत शीघ्र हमने देखा कि एक पान वाले से कुछ लोग लड़ रहे हैं। दूसरे लोग झगड़ा सुन कर और आ गये और इनमें से कुछ और ऐसे थे जो कहते थे, कि हमारा पैसा वापस कर। क्योंकि तू ने हमारा पान कड़ुवा कर दिया। हम तो इस मनोरंजक झगड़े को देख कर अपनी बीवी की शरारत से आनन्द-पूर्ण हो रहे थे, और उधर हमारी जन्म-जात नेक बीवी कुछ और ही कर रही थी। एक सालन रोटी वाला मुसलमान हमसे तकाज़ा कर चुका था, कि हम उसके गन्दे सौदे में से कुछ खरीदें। हालाँकि चाँदनी ने कई बार उसको टाल दिया, किन्तु वह न माना और विवश होकर उसने उससे कहा, कि अच्छा एक प्याले में थोड़ा सा निकाल कर

हमारे सामने नमूने के तौर पर रक्खा। हमारी सीधी-सादी बेगम साहिबा ने नमूना खिड़की से भीतर ले कर विजली की रोशनी में देखा, और ना-पसन्द करके लौटाल दिया। उस बेचारे को क्या मालूम थी कि कारगुज़ारी की गई है। उसने झट अपने बड़े बरतन में फिर डाल लिया। हम पान वाले का तमाशा देख कर लौट रहे थे कि एक ड्योढ़े दर्जे के मुसाफिर से और उस बावरची से झगड़ा होते हुये देखा। हमने देखा कि गज़ब हो गया। हम जब अपने डिब्बे में लौट कर आये, तब देखा कि किसी दूसरे साहब का सामान रक्खा है, और बेंच पर चाय के लम्बे बरतन में कुछ मक्खन टोस्ट और चाय रक्खी है। हमने धीरे से बीवी से कहा, 'अरे तू यह क्या जुल्म ढा रही है।" वह इस समय पूरी परदा-नशीन बीवी बनी हुई थी और बुरक़ा ओढ़े बैठी हुई थी। उसने यह इस गरज़ से किया था, कि यदि कोई भला-मानुस हो तो उसको देख कर कदाचित् न आये। किन्तु एक साहब फिर भी आ गये। वे डिब्बे के बाहर खड़े हो कर कुछ झिझके। पहले तो कहा कि यह ज़नाना डिब्बा नहीं है।" इस पर चाँदनी बोली, कि 'जनाब! ज़नाना डिब्बा है।' उन्होंने कहा कि "आप मेहरबानी करके ज़नाने डिब्बे में चली जायँ।" चूँकि उसने इनकार किया, अतः उनके नौकर ने उनका सामान इत्यादि रख दिया। वह चाय मँगवाकर किसी दूसरी जगह बातें करने में लगे थे। उनकी गैर मौजूदगी में, यह कहना व्यर्थ है कि उनकी चाय के साथ चाँदनी ने क्या कार्रवाई की। इसी

पर सन्तोष न किया, बल्कि उनके लोटे में, जो खाली था, काफी मात्रा डाल दी और फिर ज़ुल्म यह ढाया कि उनकी बर्फ रखने की बोतल में भी कुनैन डाल चुकी थी, जो कि हमें बाद में मालूम हुआ। इतने में वे हज़रत आये। बहुत ही सज्जन थे। हमसे दो-एक बातें हुईं, और हमें चाय पर बुलाने लगे। केतीली में से चाय उँडेलते हुये उन्होंने हमसे कहा, कि साहब! यहाँ स्टेशन पर आज विचित्र ही मामिला है। हमने पूछा, "वह क्या?" तो उन्होंने कहा, कि एक पानवाले से बहुत से आदमी झगड़ा कर रहे हैं। हमने कहा, "क्यों?" तो वे हँस कर बोले कि साहब बड़ा मज़ा आया!"

"क्या मजा आया?" हमने पूछा।

"अजी जनाब, तमाम लोगों के मुँह उस पान वाले ने कड़ुवे कर दिये।" उन्होंने अधिक हँसते हुये कहा। और अब उससे सब लोग लड़ रहे हैं। फिर इसके अतिरिक्त सालन रोटी वाले को भी दो-तीन आदमी घसीट रहे हैं, कि सब सामान कड़ुवा है। यही नहीं बल्कि सारा बरेली कड़ुवा हो रहा है।" क़हक़हा लगाकर चाय में शक्कर मिलाते हुये उन्होंने कहा।

"क्या और भी कोई किस्सा हुआ?" हमने बनकर पूछा। अजी तमाम मुसलमानों के पीने का पानी कड़ुवा हो रहा है। और वह मजा आरहा है कि हँसते-हँसते लोट........खड़प, खा थू!

चाय की प्याली का घूँट उन्होंने क्या लिया, कि गले में वह कठोर फन्दा पड़ा, कि थूक रहे थे। हमने कहा, "हज़रत यह क्या हुआ ?" थे वे बड़ी अच्छी तबियत के, बेतरह हँसे, और दोहरे हो हो गये, और कहते गये, कि साहब! मालूम होता है किसी क़ातिल ने चाय वाले पर भी हमला कर दिया। यह देखिये सारी चाय कड़ुवी है।" यह कह कर नौकर को बुलाया कि चाय वाले को बुलाओ। उसने आश्चर्य में आकर कहा, कि साहब क्या बतायें कि आज दोपहर से न जाने क्या हो रहा है कि कई मुसाफिरों ने मारते मारते छोड़ा।" वह बेचारा चाय लौटाल ले गया। इतने में नौकर उनका खाली लोटा भर कर लाया, और उन्होंने कुल्ली जब की तब और भी थूकने लगे। कहने लगे कि यह क्या मुसीबत आई ? मालूम हुआ कि नौकर नल से पानी लाया था। सारांश, कि विचित्र परेशानी में थे। बाहर निकले तो मालूम हुआ, कि रेलवे पुलिस इन्सपेक्टर इसकी जाँच कर रहा है। हम सन्नाटे में आ गये, और हमने घबड़ा कर बीवी के कान में कहा, कि 'लो आज तू गिरफ्तार की जायगी।" चाँदनी पुलिस इत्यादि से कभी न डरती थी, किन्तु इस समय सचमुच वह चुप हो गई। हम दोनों फिर आकर बैठ गये और ये हज़रत, जो वास्तव में कौंसिल के मेम्बर थे, इस कड़ुवे मज़ाक पर ख़ूब हँस रहे थे। इतने में उनके एक दोस्त आये, और वे भी बैठ गये। उनके साथ पानी की बहुत सी बोतलें थी। उनके दोस्त ने एक बोतल उठाई, और उसको गिलास में खोलकर बर्फ

की बोतल में डाल कर फिर गिलास में लेकर के जब पिया, तब क्या बतायें, वह किस प्रकार कूदे ? गिलास छोड़ कर कूद रहे थे। उनके दोस्त का और हमारा हँसी के मारे बुरा हाल हो गया। अब ये हजरत विचित्र चक्कर में थे। कहने लगे कि ये बोतलें और बर्फ तो शहर की हैं। इनमें कहाँ से कड़वाहट समा गई ? हमारी बीवी गरीब और बेचारी बनी हुई बुरका ओढ़े अपने बिस्तर पर बैठी हुई थी। जैसे उसको इससे कुछ मतलब ही नहीं है। हमने उससे पान की डिबिया माँगी, उसने हैंड-बेग में बताई। हमने उसमें से डिबिया निकाली और इन दोनों के सामने पान किये। वे हज़रत हँस कर कहने लगे, कि जनाब कहीं इन पानों में भी तो मुसीबत नहीं है।' हमने कहा कि साहब यह तो हमारे घर के हैं। उन्होंने एक पान लिया और एक उनके दोस्त ने लिया। वास्तव में हमें मालूम भी न था, कि एक डिबिया कड़ुये पानों की है और हमने भी एक पान मुँह में रख लिया। शीघ्र ही सबको थूकने पड़े। और उन हजरत का तो हँसी के मारे बुरा हाल था और कहते थे कि यह आखिर मुसीबत क्या है कि चाँदनी ने बात बनादी, और कहा कि मालूम होता है, कि आपने स्टेशन वाले पान खाये। दूसरी डिबिया से लीजिये। हमने कुल्ली की और दूसरे पान खाये, कड़ुये फेंक दिये।

५

हम खुदा खुदा करके नैनीताल पहुँचे और बीच में कोई

वर्णन करने योग्य बात सामने न आई। हमारे साथ सफर करने वाले हज़रत रह-रहकर रात में मामिलों पर विचार कर रहे थे और आश्चर्य के साथ हँस भी रहे थे। क्योंकि उनके दूसरे दोस्त भी, जो कोन्सिल की बैठक में सम्मिलित होने के लिये आये थे, कुनैन का स्वाद या तो स्वयं बरेली में ले चुके थे, और या उनका तमाशा देख चुके थे। हर आदमी आश्चर्य प्रगट करता था कि आखिर यह किस तरह संभव है, कि शहर से बोतल में बर्फ आये, और वह कड़वी हो जाये ! हद हो गई, कि नल की टोंटी से कड़वा पानी निकले। तात्पर्य हम उनसे विदा हुये।

हमने एक पूरा मोटर किराये पर लिया, और उसमें बीबी को बैठाया और नैनीताल की चढ़ाई शुरू हुई। हमने बीवी को सचेत कर दिया कि यदि भविष्य में तू शरारत करेगी, तो निश्चय पुलिस में दी जायगी; किन्तु वह तो रात की घटनाओं के ऊपर हँसी के मारे बेकाबू थी। इस तरह उस चढ़ाई को हमने बड़े आनन्द के साथ समाप्त किया।

नैनीताल पहुँच कर हमने हिमालय होटल में डेरा डाला। दूसरे ही दिन से साधारण ढंग पर चाँदनी ने फिर कुनैन का प्रयोग जारी कर दिया। असंभव था, कि चाय आये और शक्कर को छोड़कर वह दूध इत्यादि को कड़ुवा न कर दें।

प्रति दिन का नियम था, मीलों हम पैदल चलते थे, और दिन भर सैर सपाटे में कटता। न जाने कब के और कहाँ के

दोस्तों से भेंट हुई। और हम और हमारी बीबी जगह जगह दावतें खाते थे। कौन्सिल की बैठक देखने गये। यहाँ हमारे साथ सफर करने वाले दोस्त से भेंट हुई। हमने उनसे अपनी बीबी का क़ायदे के साथ परिचय कराया। ये भी विचित्र दिल्लगीबाज़ और मनोरंजक आदमी थे। आनरेबुल नवाब मुहम्मद युसुफ से, कौन ऐसा भला आदमी होगा, जो नैनीताल जाये, और किसी न किसी प्रकार परिचय न प्राप्त करे; या उनके चौड़े और बनावट पूर्ण दस्तरखान पर बिना बुलाये हुये तरह तरह के अँगरेज़ी और हिन्दुस्तानी खाने न खा आये। ये हज़रत भी उन्हीं के यहाँ ठहरे हुये थे। इनको बरेली की घटना इस प्रकार याद थी कि फिर चर्चा करके हँसने लगे। और कहने लगे, कि भई, वहाँ बहुत ही आनन्द रहा। किन्तु यह न मालूम हुआ कि आखिर किसकी शरारत थी। दो-तीन ही दिन में इन हज़रत से काफी जान-पहचान होगई। क्योंकि हम अवश्य, अवश्य कौन्सिल की बैठक देखने आते थे। चाँदनी को शरारत किये हुये काफी दिन हो गये थे। अतः उसने फिर एक ऐसी शरारत कर डाली कि हम बहुत घबड़ा गये। कौन्सिल के रिफ्रेसमेन्ट रूम में वैसे तो कई बार गये, बल्कि प्रति दिन जाने का मौका मिलता था; किन्तु एक दिन हमारी फरिश्ते की आदत वाली बेगम साहिबा को वहाँ भी अवसर मिल गया, और न मालूम किस प्रकार चाय, शक्कर, और दूध को इस तरह कड़वा की कि हमको भी पता न चला। पता तो हमें तब चला,

जब कौन्सिल के इन्टरवेल में वही हज़रत हँसते हुये हमारे पास दौड़ आये, और कहने लगे, कि भई, होशियार हो जाओ ! बरेली वाला आगया ! हमने कहा, क्या मामिला है, तो वे हमें और चाँदनी को कौन्सिल के रिफ्रेसमेन्ट रूम में ले गये, जहाँ कुछ थोड़े से आनरेबुल सदस्य गण मुँह की कड़ुवाहट दूर करने के लिये कुल्लियाँ कर रहे थे। हमने चाँदनी से धीरे से कान में कहा कि अब निश्चय तेरी शामत आगई। अच्छा है कि यहाँ से भाग चल। अतः हम शीघ्र लौट आये।

जिस दिन हम जाने वाले थे, उसके एक दिन पहले कौन्सिल के ये मेम्बर साहब हमें झील के किनारे मिले और हमने उनकी बार बार की चर्चा, और उनकी तबीयत से खुश होकर यह उचित समझा, कि उनसे इस कड़ुवाहट का भेद बतादें। अतः हमने उनसे चाँदनी की शरारत के लिये क्षमा माँगी, तो हक्का-बक्का होकर खड़े रह गये और पूरी कहानी सुनकर कहने लगे, कि अब हम तुम्हें दो-तीन दिन न जाने देंगे। उन्होंने दो-तीन दिन अपने दोस्तों को, जो या तो स्वयं बरेली के स्टेशन पर कुनैन के शिकार हुये थे, और या दूसरों को देख चुके थे चाँदनी से मिलाया; जिसका परिणाम यह हुआ कि हमारी बीवी इस आनन्द करने की जगह से, लोगों की आँखों से बचने के लिये हमें लेकर ऐसी अदृश्य हुई कि लोग खोजते ही रह गये।

६

वापसी में अभाग्य से कहिये या सौभाग्य से, हमारे एक दोस्त

का साथ हो गया। उनकी बीवी पर्दे की बहुत ज्यादा पाबन्द थीं और ये उनको तीसरे दर्जे में सफर कराते थे, और स्वयं सेकण्ड क्लास में सफर करते थे। और मजा यह कि बीवी के पास तक न झाँकते थे। नौकर या नौकरानी के द्वारा खबर मँगाया करते थे।

हमने भी चाँदनी को तीसरे दर्जे में ठूँसा और कहा—"ले, अब अपनी हैसियत के मुताबिक सफर कर और बुर्का ओढ़कर भली औरतों की तरह मुँह लपेटकर बैठ।" उसे मजबूरन बैठना पड़ा। हमारे दोस्त की बीवी बहुत शर्मीली, खामोश और सीधी-सादी थीं। हाँला कि वे उम्र में चाँदनी के बराबर ही थीं; मगर बेचारी को दुनिया का तजरुबा बिलकुल न था। हमारा उनका बरेली तक साथ हुआ। काठगोदाम से सुबह की गाड़ी में रवाना हुए। हम कभी बीवी से मुलाकात कर आते थे; मगर हमारे साथी साहब दूर ही से खड़े होकर सिर्फ इतना देख लेते थे कि उनकी बीबी खिड़की का पट बन्द किये है या खोले।

एक स्टेशन पर जनाने डिब्बे के पास से कोई गुंडा निकला, और उसने हमारे दोस्त की बीवी को, जो उस वक्त खिड़की खोले बैठी थीं, देखा, तो पास से गुजरते हुआ कहा—"कहाँ जा रही हो?" वह बेचारी धक से रह गईं। मारे डर के उनका कलेजा काँपने लगा। घबरा कर चाँदनी से कहने लगी—"बहन, खुदा के लिए खिड़कियाँ चढ़ा लो, कोई बदमाश मुझसे ऐसा

कहकर चला गया।" हमारी तेज-तर्रार बीवी ने हँसकर कहा—"आपने बता क्यों न दिया कि बरेली जा रही हूं।" वह बेचारी हँसने लगी, और कहने लगी—"मेरे मुँह से तो आवाज़ ही नहीं निकल सकती, मैं बहुत घबराती हूँ।" ये बातें हो ही रही थीं कि वह फिर खिड़की के सामने से गुजरा और उसने फिर वही कहा। दोस्त की बीबी घबराकर एकदम से खिड़की चढ़ाने लगी। इतने में वह चलते-चलते बोला—"यह ग़ज़ब तो न करो।" इस पर बेचारी के हाथ-पैर फूल गये। खिड़की हाथ से छूट पड़ी और बेदम होकर कोने में मुँह छिपाकर बैठ गई। चाँदनी हँस रही थी, और वह चाँदनी से कह रही थीं कि इसी मारे तो खिड़की के पास औरतों का बैठना ठीक नहीं होता। दर अस्ल उसकी हालत काबिले रहम थी। चाँदनी दौड़कर खिड़की के पास आई, मगर वह गुंडा जा चुका था।

हम जो अगले स्टेशन पर आये, तो उसने यह घटना सुनाई, और दूर से उस शख्स को दिखाकर कहा—"मालूम होता है कि आज उसकी शामत आई है।" हमने देखा, एक मामूली लफंगा-सा आदमी था। मैला पाजामा, टर्की टोपी और काला अचकन पहने था। वहाँ गाड़ी देर तक ठहरती थी। हम थोड़ी देर बाद ही चले आये। हमने अपने दोस्त से कहा, तो वे बेचारे कहने लगे—"क्या बतायें, बस, इसी मारे तो औरतों का सफर करना ठीक नहीं होता।" हमने कहा—"जनाब, आपने पर्दे

की हद करके ही यह हाल कर दिया है, अगर आप अपने साथ बिठायें, तो क्या हर्ज हो ?" मगर यह सब बेकार था, क्योंकि हमारे उनके ख़यालात में ज़मीन-आसमान का फ़र्क़ था।

चाँदनी पर नटखटपन का भूत सवार हो गया। उसने पहले तो हमारे दोस्त की बीवी की बुज़दिली पर खफा होकर सज़ा के तौर पर उसे एक कड़ुवा पान खिलाया। इसके बाद उसने देखा कि वही हज़रत आ रहे हैं। वह खिड़की की तरफ़ मुँह खोले बैठी थी, पान की डिबिया उसके हाथ में थी। जैसे ही वह पास आया, वैसे ही इसने डिबिया खोली। गुंडा मुसकराकर बोला—"अकेले-ही-अकेले ?" चाँदनी ने फ़ौरन एक पान उसे दे दिया, जिसे उसने फ़ौरन ले लिया। थोड़ी देर बाद हमने देखा कि वह हज़रत नलपर खड़े थूक-थूककर अपनी चोंच साफ़ कर रहे हैं, क्योंकि सारा मुँह कड़ुवा हो रहा था।

वह हज़रत जले-भुने फिर लौटकर आये और पान की कड़ुवाहट के बारे में चाँदनी से कोई बेहूदा शब्द कहा। उसने डाँटकर कहा—"शरीफ़ों की-सी बातें करो।" उसे बेहद गुस्सा आ रहा था। हमारे दोस्त की बीवी का यह बातें देखकर जो हाल हुआ, वह बयान से बाहर है। जब चाँदनी ने उसे पान दिया, तो वह कहने लगीं- "अगर तुम्हारे मियाँ देख लेते, तो क्या होता ?"

चाँदनी ने कहा—"कुछ नहीं। इसमें क्या हर्ज है ?" वे

कहने लगीं—"खुदा के लिए रहने दीजिये, वरना यह बदमाश और भी पीछे पड़ जायगा।"

इतने में वह फिर आया और उसने पहले से भी ज्यादा कोई बेहूदी बात कही। चाँदनी मारे गुस्से के कांपने लगी। उसकी आँखों से आँसू निकल पड़े। नैनीताल में हमने उसे सीप के हेंडिल का एक बढ़िया-सा छाता साढ़े सात रुपये में ले दिया था। उसने आव देखा न ताव, छाता लेकर गाड़ी से उतरी और पीछे से उस गुंडे के सिर पर एक हाथ जोर से मारा! उसने जो मुड़कर देखा, तो एक डाँट बताकर जो छाते मारने शुरू किये, तो एक गुल मच गया। लोगों ने समझा, इस शख्स ने न-जाने क्या बदमाशी की होगी। चारों तरफ हुल्लड़-सा मच गया। पास में एक अंगरेज़ मुसाफिर खड़ा था, उसने उसे पकड़ लिया। चाँदनी अपनी गाड़ी में चली गई, और वह गुंडा पुलिस के सुपुर्द कर दिया गया। हम चाँदनी के पास आये, जो इस जंग के बाद गुस्से से कांप रही थी। उसके ओठ सूख रहे थे। हमारे दोस्त की बीबी कोने में सहमी बैठी थीं। हमने चाँदनी की पीठ ठोंकी और कहा—"शाबाश, खूब किया।"

७

बरेली स्टेशन पर हमारे दोस्त हमारी बहादुर बीबी की तारीफ़—मगर ऐतराज के साथ—करते हुए विदा हुए। इतने में एक पुलिस सब-इंस्पेक्टर साहब आये, और उन्होंने हमारा

पता वगैरह लिखा। वे कहने लगे—"अगर आपको ऐतराज़ न हो, तो आपकी बीबी का नाम भी गवाहों में लिख लूँ, क्योंकि उस बदमाश के पास कोकेन भी बरामद हुई है?"

थोड़े ही दिन बाद चाँदनी के नाम बरेली के रेलवे-मजिस्ट्रेट की अदालत से समन आया कि फलाँ तारीख को आकर मुलज़िम को शिनाख्त करो और गवाही दो। चाँदनी इस अदालत की पेशी से चकराई। वह कहने लगी—"मैं तो न जाऊँगी।"

हमने कहा—"क्या तेरी शामत आई है? अगर समन से न जायगी, तो वारंट कट जायगा और पुलिस पकड़कर तुझे ले जायगी। फिर मुलज़िम के वकील तुझसे जिरह करके तेरी सारी शरारतों की इकट्ठी कसर निकाल लेंगे।"

समन तो लेना पड़ा, मगर चाँदनी सख्त परेशान थी। अगर हम चाहते, तो उसे इस झगड़े से निकाल सकते थे; मगर हमने सोचा कि कुछ तजरुबा होना अच्छा ही है, इसलिए हमने उससे कहा—"घबराओ नहीं, हम तुम्हारे साथ चलेंगे।"

रेल्वे-मजिस्ट्रेट एक डिप्टी-कलक्टर थे। जब हम ख़ुद अपनी बीवी को लेकर हाजिर हुए, तो उन्होंने अपने क़रीब कुर्सी दी। मुलजिम की शिनाख्त हुई। जब मैजिस्ट्रेट चाँदनी के बयान लेने लगे, तो हमने चुपके से उसके कान में कहा—"वकील तुझसे जिरह करेगा। अगर कहीं तूने ज़रा भी झूठ

कहा, तो समझ ले कि तुझपर झूठी गवाही (दरोग़हल्फी) का मुक़दमा चल जायगा और तुझे जेल की हवा खानी पड़ेगी।" यह सुनकर वह और भी बौखला गई।

जब उससे मुलज़िम के वकील ने जिरह की, तो वह और भी घबराई। उसे मजबूरन कबूल करना पड़ा कि उसने सज़ा के तौर पर मुलज़िम को कुनैन डालकर कड़ुवा पान दिया था। इत्तिफ़ाक़ से बरेली की घटना अभी ताज़ी ही थी। मैजिस्ट्रेट ने दिन और तारीख जो पूछी, तो मालूम हुआ कि जिस रोज़ा बरेली स्टेशन पर तमाम चीज़ें कड़वी हुई थीं, वही दिन बरेली स्टेशन पर चाँदनी की उपस्थिति का था। उस मामले की तहकीक़ात पुलिस पहले ही कर चुकी थी। तमाम कड़ुवी चीज़ों की डाक्टरी परीक्षा भी हो चुकी थी। परीक्षक ने बताया था कि सारी चीज़ें कुनैन से कड़ुवी की गई थीं। हर जगह तहक़ीकात से साबित हो चुका था कि कोई औरत थी। पानवाले ने कहा था कि मैंने एक औरत के हाथ पान बेचे थे। यही बात रोटी वाले ने कही थी। होटल वाले का बयान भी मौजूद था। मैजिस्ट्रेट ने इन सब बातों को मिलाकर देखा, तो मामला और ही नजर आया। इसके अलावा तहक़ीकात में लोगों ने जो बयान दिये थे, उनमें भी चाँदनी की हुलिया दर्ज थी। मैजिस्ट्रेट बेचारे बड़े नेक आदमी थे। उन्होंने कुछ हमारा लिहाज़ किया और कुछ हमारी बीवी का, जो इस वक्त बेतरह घबरा रही थी। उन्होंने एक तरफ तो वकील को बहुत से ऐसे सवाल करने से

रोका, जिनका जवाब देने के पहले ही शायद चाँदनी रो पड़ती और दूसरी तरफ इस कड़ुवाहट की बात को अप्रासंगिक कहकर बन्द कर दिया।

अदालत से छुट्टी मिली. तो उसकी जान-में-जान आई; लेकिन डबल फर्स्ट क्लास के किराये का परवाना जो उसके हाथ आया, तो फिर वही हालत हो गई। हमने कहा—"क्यों, इस परवाने को आधे दाम पर हमारे हाथ बेचोगी ?"

"जी, मुँह धो आइये,"—चाँदनी बोली—"उन्हीं आधे दामों से कुनैन खरीदी जायगी।"

अदालत में जो परेशानियाँ नजर आई थीं, वह सब दूर हो गईं। हमने कहा—"तू न-मालूम किस भूल में है। ताज्जुब नहीं कि अभी तेरी पेशी मुलजिम के तौर पर कुनैन वाले मुकदमे में हो।"

यह वह भी जानती थी कि मजिस्ट्रेट और सब-इन्पेक्टर रेलवे पुलिस कुनैन वाले मामले की खुद तहकीकात कर चुके थे, और दोनों यह जान गये थे कि तमाम चीजें उसी ने कड़ुवी की थीं। इसलिये वह मेरी बात सुनकर कुछ घबरा गई। शामको हम रेल्वे बँगले पर अपनी मुलजिम बीवी को लेकर गये और उनके सामने उसकी तरफ से हमने उसका जुर्म कबूल किया। उन्होंने आश्चर्य और दिलचस्पी से सारा किस्सा सुना और अन्त

में इतमीनान दिलाया कि कुनैन वाला मुकदमा दाखिल दफ्तर कर दिया जायगा। चाँदनी की कुनैन का इस्तेमाल इतना बढ़ गया था कि अगर कुछ दिन बाद इस शरारत से खुद उसका जी न भर गया होता, तो वह जरूर ही पुलिस में पकड़ी जाती।

छठवां परिच्छेद

हिन्दुस्तानी परदा

मैं द्वारपर पहुँचा और ड्योढ़ी में प्रवेश किया; पर भीतर जैसे ही पैर रखा कि चौंक पड़ा। एक जेन्टिलमैन आराम कुर्सी पर लेटे हुये हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे। उनकी रूपवती श्रीमतीजी भी समीप ही बैठी थीं। मैं शीघ्र ही 'अरे' कहकर लौटा, और वे महाशय गरजकर और हुक्के की नै सँभालकर 'लेना लेना बदमाश को पकड़ना' कहकर फाँद पड़े। मेरी शामत जो आई, तो मैं बौखलाकर सीधा भागा और वे महाशय नङ्गे पैर हुक्के की नै हाथ में थामे मेरे पीछे 'लेना' 'लेना' कहते दौड़े। गली की मोड़ पर मैं शीघ्र ही रुका कि कहीं लोग बदमाश समझ कर मुझे पकड़ न लें। आते ही उन महाशय ने मेरे ऊपर दो-तीन हुक्के की नै लगाई। 'सुनिये तो, सुनिये तो' मेरे मुँह से निकल रहा था, और वे मेरे ऊपर बरस रहे थे कि इतने में कई व्यक्ति बीच में पड़ गये।

"बदमाश ! पाजी ! लुच्चा ! दिन दहाड़े।"—काँपते हुये बोले।

ज़रा सुनिये तो, सुनिये तो"—मैंने कहा।

"ठहर जाइये। तनिक शान्ति से काम लीजिए। क्या मामला है?"—एक बड़े मियाँ बोले।

विनयपूर्वक मैंने कहा—"दुर्भाग्य से मैं बजाय बराबर वाले मकान के इनके मकान में चला गया, और इसके लिए मैं बड़ा ही लज्जित हूँ।"

इस पर वे महाशय बोले—"अबे बेइमान! बदमाश झूठा है। जान-बूझकर··"

"नहीं साहब, ऐसा हो ही जाता है। जाने दीजिए।"—बड़े मियाँ बोले।

"जाने दीजिए! मैं तो पुलिस में दे देता।"—महाशय ने कहा।

अस्तु, लोगों ने मामला रफै- दफै किया। मैं पिटा-पिटाया लज्जित खड़ा था और फिर असली जगह जाने का विचार स्थगित करके, गर्दन नीचे किये हुये, लौट आया। दिया जल चुके थे कि घर पहुँचा।

[४]

"आज प्रात:काल न-मालूम किस मनहूस का मुँह देखा था। कहीं तू तो सम्मुख नहीं आ गई थी?"—मैंने चाँदनी (अपनी पत्नी) से कहा।

चाँदनी ने कहा—"क्या हुआ था? मैंने कहा था न कि रात को तकियेके पास बैठकर दर्पण न देखो। अशुभ होता है। तुम

भूल गये और वह वहीं रखा रह गया, और प्रातःकाल कदाचित तुमने देख लिया।"

चाँदनीकी बात सुनकर मुझे हँसी आ गई; क्योंकि वास्तव में मैंने रातको दुर्भाग्यसे दर्पण देखकर वहीं रखा रहने दिया था।

चाँदनी ने विस्तृत समाचार पूछा, तो मैंने बताया कि किस प्रकार मैं आज एक स्थान में धोके से परदा-नशीन स्त्रीके घरमें घुस गया और फिर किस प्रकार पीटा गया।

बात आई-गई, हो गई। यह घटना लखनऊ की थी और उसके चार दिन उपरान्त हम वहाँसे लद गये।

वेटिंग-रूममें आरामकुर्सीपर लेटा हुआ मैं समाचार पढ़ रहा था कि तनिक बाहर निकला। देखा, तो एक बन्द गाड़ी आकर रुकी। लोगों ने परदे के लिए चादरें तानीं, और कोई बेगम साहिबा जनाना वेटिंग-रूममें उतरीं। मैं लौट आया और नियमानुसार समाचारपत्र पढ़ने लगा। खटपट की जो आवज़ आई, तो मैंने अखबार हटाकर देखा। एक साहब—प्रत्येक प्रकार से पूर्ण जेटिंलमैन—'उफ्फ् ओह' करके कुर्सी पर बैठ गये, और मेरी ओर देखने लगे। वह वही महाशय थे, जिन्होंने हुक़्क़े की नै से मेरी मरम्मत की थी। अपनी श्रीमतीजीको ज़नाना वेटिंग-रूममें उतरवाकर आ रहे थे।

"खुदाकी पनाह !"—कहकर अपनी टोपी उतारी, और मेरी ओर देखकर बोले—"जनाब, कहाँ तशरीफ़ ले जायँगे ?"

मैंने ध्यानसे देखा और बहुत प्रसन्न हुआ कि चलो अच्छा है कि उन्होंने मुझे पहचाना नहीं, और तब उनको बताया कि मैं आगरे जाऊँगा।

"अच्छा, आप भी आगरे तशरीफ़ ले जा रहे हैं।"—कह कर जो उन्होंने वार्तालापका ताँता पूरा, तो दुनिया भरकी बातें पूछकर फिर वही पुरानी बातें प्रारम्भ कीं, यात्राकी कठिनाई और स्त्रियोंके साथ इत्यादि विषयोंपर कहते कहते बोले—"क्या बताऊँ साहब, मैं तो परेशान हो जाता हूँ। यात्रामें स्त्रियोंका साथ वास्तवमें एक विपत्ति है। चार घन्टे तो स्त्रियोंको सवार कराने में गये।

मैं—"वह कैसे ?"

उन्होंने कहा—"अजी साहब ! स्त्रियोंके विषयमें, और फिर ससुरालका मामला, और तिसपर मेहमान ! भीतर न जा सकता था; क्योंकि अन्य रिस्तेदार स्त्रियाँ थीं। बाहरसे कहलवाता था कुछ, और भीतर से उत्तर आता था कुछ। खुदा-खुदा करके सामान बँधा, फिर भी कुछ चीज़ें जो बाहर रहनी थीं, अन्दर बँध गई और कुछ चीज़ें जो अन्दर बँधनी थीं, वे बाहर रह गईं। ड्यौढ़ीपर जब घन्टों शोर गुल मचाया गया, तब जाकर सवार होने की नौबत आई। यात्रामें स्त्रियोंका साथ होना वास्तवमें एक विपत्ति है—बवाल जान हैं। सामानको देखें या इन्हें ?"

अन्तिम वाक्य असग़र साहब ने कुछ परेशान होकर कहा; क्योंकि वे वास्तवमें कुछ बौखलाये हुए-से थे।

मतभेद प्रकट करते हुए मैंने कहा—"शायद; पर इसका कारण क्या है कि यात्रामें स्त्रियाँ बवाल जान होती हैं। आखिर वे आराम और चैनका कारण क्यों न हों, जिससे मार्ग की परेशानी ही दूर हो ?"

असगर साहब—"तोबा कीजिए। लाहौल बिलाक़ूवत ! परेशानी दूर हो ! यह कहिये, दुगुनी होती है।"

मैं (मुसकराकर)—"मालूम होता है, आपके साथ बहुतसी स्त्रियाँ हैं ?"

असगर—"बहुतसी तो नहीं, केवल मेरे घरमें मेरे साथ हैं।"

मैंने अत्यन्त सादगीसे पूछा—"घरमें से कौन साथ है ?"

असगर—"स्वयं मेरे ही घरमें से हैं।"

"कौन ?"—मैंने फिर हँसकर नटखटपनसे पूछा।

"खुद घर ही में से हैं।"—असगर साहबने फिर वही उत्तर दिया।

मैं—"क्या ख़ूब ! आपने तो कमाल ही कर दिया। आखिर घरमें से कौन हैं?—माँ, बीवी, बहन,नौकरानी। आखिर कौन हैं ? कदाचित् आप की श्रीमती जी होंगी।"

कुछ झेंपकर असगर साहेबने कहा—"जी हाँ, और आप की सवारियाँ ?"

मैं—"मैंने तो उन्हें कल ही बुक करा दिया।"

असगर साहब आश्चर्य-मुद्रा से मुझे देखने लगे। अभी की मुलाक़ात और गम्भीर वार्तालाप ! वे इस प्रकार देख रहे थे,

मानो उन्हें कुछ बुरा मालूम हुआ, और फिर बोले—"आप तो मज़ाक करते हैं।"

मैंने बड़ी गम्भीरतासे कहा—"मेरी समझमें मुझको आपसे हँसी करनेका अधिकार इतनी जल्दी प्राप्त नहीं हो सकता। मैं मज़ाक नहीं करता, वरन् ठीक बात कहता हूँ, और मुझे आश्चर्य है कि आपको मेरे कथनकी सत्यतामें क्यों सन्देह हो रहा है। यह देखिये, रसीद भी मौजूद है। मैंने अपनी दोनों सवारियोंको बुक करा दिया है।"

यह कहकर मैंने रसीद असग़र को दी, क्योंकि वास्तव में मैं मोटर-साइकिल और साइकिल दोनों को सवारी-गाड़ी से बुक करा चुका था।

असग़र कुछ झेंप-से गये और रसीदें लौटाकर कहने लगे—"शायद आप अकेले ही यात्रा कर रहे हैं?"

मैं—"जी नहीं, मैं अकेले यात्रा करने का अभ्यस्त नहीं।"

असग़र—"पर जनाना वेटिंग-रूम तो ख़ाली है। अच्छा, शायद वह डोली जो नल के सामने रखी है, उसमें वही हैं।" (यह बात उन्होंने पूर्ण विश्वास से कही)।

मैं—(हँसकर)—"जी नहीं।"

असग़र—"फिर कहाँ बिठाया है?"

मैं—"कहीं नहीं, बल्कि उन्होंने मुझे बिठाया है।"

मेरी बात को मज़ाक़ समझ असग़र ने अरुचि से कहा—"क्षमा कीजिए, मैं आपकी बात नहीं समझ सका।"

मैंने हँसकर कहा—"वे मुझे यहाँ बैठाकर टिकट लेने गई हैं।"

"अरे, यह क्या!"—असग़र बोले।

मैं—"साहब, कारण यह है कि सामान मेरे पास आवश्यकता से अधिक है। उसमें से कुछ तो मालगाड़ी से जायगा और कुछ सवारी-गाड़ी से। फिर उसमें से कुछ ऐसा है, जो साथ रहेगा, और कुछ ऐसा है, जो ब्रेक में दिया जायगा। मेरी तबीयत कुछ ख़राब थी, इस कारण बाध्य होकर वे बेचारी यहाँ मुझे आराम से बैठाकर टिकट लेने और सब सामान बुक कराने गई हैं। आध घंटे से अधिक हो गया है, और अभी तक नहीं आईं।"

असग़र साहब (आश्चर्य से)—"अरे, क्या अकेली गई हैं?"

मैंने अत्यन्त रूखे भाव से कहा—"जी नहीं, वरन् उनके साथ बुकिंग-क्लर्क और कुली भी गया है।"

असग़र साहब आँखें फाड़कर बोले—"अच्छा! तो क्या वे परदा बिलकुल नहीं करतीं?"

मैं—"क्यों नहीं, करती क्यों नहीं हैं? बहुत करती हैं।"

असग़र—"तो फिर यह कैसे?"

मैं—"यह कोई आवश्यक नहीं कि परदा किया जाय, तो दुनिया का कोई काम ही उसके कारण न किया जाय। मजबूरी है।"

असग़र—"हदीस शरीफ़ में आया है कि स्त्रियाँ अन्धों तक से कड़ा परदा करें—यहाँ तक कि उनकी ओर को देखें नहीं।"

मैं—"आया होगा। मुझे तो पता नहीं; पर भविष्य में मैं भी अवश्य ख़याल रखूँगा, और यथा-सम्भव पाबन्दी कराऊँगा। परन्तु मेरा तो विश्वास है कि मेरी स्त्री ख़ामखा बिना ज़रूरत अन्धों तक को भी नहीं देखती। हाँ, ज़रूरत पड़ने पर सबको देखती है। अब ताकीद कर दूँगा, पर यह बताइये......" इतना ही कह पाया था कि द्वार के सामने मेरी प्रबन्धक स्त्री तेज़ी से जाती दिखाई पड़ी।

मैंने आवाज़ दी, और वह आई।

मैंने पूछा—"कहो, क्या देर है?"

उसने कहा—"बस, रसोई बनवानी रह गई है। अभी आती हूँ।"—यह कहकर चली गई।।

"आप तो कहते थे कि परदा करती हैं। ये तो मुँह खोले घूम रही हैं!"—असग़र ने कहा।

मैं—"सिर से पैर तक तो दुखिया ने इस गर्मी में अपने को चादर से लपेट रखा है, और फिर भी आप आपत्ति करते हैं। तो आपका तात्पर्य यह है कि वह मुँह को भी बन्द कर लें और तेज़ी से इधर-उधर जाने, सामान बताने और उठवाने में बुर्क़ा से उलझकर गिरें, या कोई बंडल उड़वा दें। क्षमा कीजिए, मैं ऐसे परदे से बाज़ आया।"

असग़र साहब ने दूसरी आपत्ति की—"फिर मज़ा यह कि आप इनका नाम लेकर बुलाते हैं।"

मैं—"आख़िर फिर कैसे बुलाऊँ? आप ही कोई उपाय बतावें। मुझको तो यह अच्छा नहीं मालूम होता कि 'अरे देखना,' 'अजी सुनो तो' इत्यादि कहकर बुलाऊँ और स्टेशन पर बिना बात के बीसियों आदमियों को अपनी ओर आकर्षित करूँ।"

परन्तु वहाँ तो तीसरी आपत्ति भी थी—"आप तो पुरुषों का काम स्त्रियों से लेते हैं। यह सब काम जो आपकी बेगम साहिबा दौड़-दौड़कर करती फिरती हैं, वह वास्तव में आप के करने का था।"

मैं—"निस्सन्देह; पर मैंने निवेदन किया न कि मेरी तबीयत कुछ ख़राब है। गर्मी की ऋतु है, नहीं तो मैं अपनी श्रीमतीजी को कष्ट न देता। मैं तो अपनी इस अवस्था में भी उनको मना करता रहा; पर वे न मानीं कि कहीं मेरी तबीयत अधिक ख़राब न हो जाय। असग़र साहब, क्या कहूं कि गृहिणी भी एक देन है, और विशेषकर यात्रा में।

इतने में रेलगाड़ी की घंटी बजी और असग़र साहब बुरी तरह उठकर भागे। मैं उसी प्रकार बैठा रहा, क्योंकि गाड़ी बहुत देर तक ठहरती थी। थोड़ी देर में चाँदनी आई, और उसने चलने को कहा। गाड़ी में गया, तो सब सामान ढंग से रखा हुआ था और बिस्तर बिछा हुआ था।

मैंने चाँदनी से कहा—"दोस्त, खुदा तुम्हारा सुहाग बनाये रखे। बस, एक गिलास शर्बत और पिला दो।"—यह कहकर मैं आनन्द से लेट गया। चाँदनी ने कुली इत्यादि सब को निपटा दिये, और थोड़ी ही देर में मैं ठण्डे पानी से और अपनी गृहिणी से बातें करके अपना दिल ठण्डा कर रहा था।

उधर असग़र साहब का हाल सुनिये। रेल क्या आई कि विपत्तियों का दफ़्तर खुल गया। कहारों ने पालकी में उनकी बेगम साहबा को, या यों कहिये कि मूर्खता के बोझ को, उठाया और आगे बढ़े। असग़र ने सामान और कुलियों को देखा, तो एक कुली ग़ायब था। उधर पालकी निकली जाती थी। एक-दमसे उधर दौड़े कि फिर इधर आये, और दूसरे कुली से पूछा। उसने कहा—"साहब, अभी तो यहीं था। शायद आगे बढ़ गया होगा। उसको साथ लिया और तेज़ी से आगे बढ़े। देखा, तो उनका सामान लिये कुली भीड़के साथ फाटक से बाहर होने ही वाला था, ग़ज़ब ही तो हो गया। अन्धाधुन्ध उस ओरको लपके और उस हड़बोंगमें न मालूम किस-किससे टकराये। अन्ततो-गत्वा इस जल्दबाज़ी का नतीजा यह हुआ कि एक साहबसे, जो शायद इनसे भी आवश्यक काम पर जा रहे थे, ऐसी टक्कर हुई कि ये गिरते-गिरते बचे; पर सँभलने जो लगे, तो एक दही-बड़ेवालेका खोमचा सामने आया। फांदे तो दही-बड़ेवालेने हाथसे रोका। फलस्वरूप दही-बड़ेवाले के खोंमचे में पैर पड़ा और बुरी तरह गिरे। तड़पकर उठे कि दही-बड़ेवाले ने पकड़ा।

वहां सामान बाहर निकला जाता था। हाथ को एक झटका दिया और छुड़ाकर सीधे फाटककी ओर दौड़े। कुली बाहर निकल चुका था; पर नज़र अब भी आ रहा था। फाटकपर जो धक्कामुक्की होती है, उसे सब जानते हैं। वहां दब पिचकर कोशिश की कि बाहर निकलें कि दही-बड़ेवालेने पकड़ा। उससे हाथ छुड़ाने और उसे विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया; पर तोबा कीजिए! वह काहे को छोड़ता? देखता था कि हज़रत बाहर निकले जा रहे हैं। फिर काहे को हाथ आयँगे। उसे क्या मालूम था कि वे कहाँ जा रहे हैं। तात्पर्य यह कि दही-बड़ेवाले से छीना-झपटी करते हुए टिकट कलक्टर की छाती पर जा पहुँचे। उसने कहा—"टिकट?" पर वहाँ तो कुली निकला जा रहा था। बुरी तरह फांदकर और ज़ोर देकर निकल गये और तड़पकर कुली का हाथ जा पकड़ा। उधर टिकट-कलक्टर और एक सिपाही उस दही-बड़ेवाले के साथ उन पर टूट पड़े। जिस आदमी का वह कुली और सामान था, उसने कहा—"यह क्या जंगलीपन? हज़रत ख़ैर तो है?" बड़े लज्जित हुए; क्योंकि न तो कुली उनका था और न वह सामान। टिकट-कलक्टर को सूक्ष्म रूप से अपनी मुसीबत बताकर और टिकट दिखाकर बेतरह लौटे, और दही-बड़े वाले से तनिक रुकने को कहा। वहाँ से लौटकर आये तो दूसरा कुली भी ग़ायब था? हैरान होकर पुलिस के दफ्तर की ओर जा रहे थे कि किसी ने कहा—"साहब, ऐसा नहीं

हो सकता। दोनों कुली पालकी के पास होंगे।" दौड़कर पालकी के पास पहुँचे। वहाँ एक ही कुली मौजूद था। इतने में ख़याल आया कि दूसरे कुली ने पूछा था कि कौन दर्जे में सामान रखा जायगा। शीघ्र ही दौड़े हुए हमारी ओर आये, और कुली को हमारे डब्बे के पास खड़ा पाया। कुली को वहाँ पाकर और बिना हमारी बात सुने सीधे पालकी की ओर भागे।

उतरने वाले उतर चुके थे, और बैठने वाले बैठ चुके थे। असग़र साहब ने पालकी को ज़नाने दर्जे से लगाकर दो चादरों से परदे तनवाये और अपनी श्रीमती से उतरने को कहा।

दुर्भाग्य से एक गोरा टहलता हुआ उधर आ निकला। शायद ताज़ा ही विलायत से आया था। लखनऊ के लिए तो वह नवीन आगन्तुक था। उसने भला ये धन्धे काहे को देखे थे। न-मालूम उसने क्या समझा कि निकट आया, और उत्सुकता अथवा आश्चर्य से प्रेरित होकर उसने यह देखना चाहा कि तने हुए कपड़ों में क्या हो रहा है। एक ओर की चादर को हाथ से नीचा करके और ऊपर से सिर डालकर जो देखा, तो असग़र की श्रीमती जी तो बैठ ही गईं। चादर समेट कर असग़र साहब गोरे पर फट पड़े। भयंकर गर्जना करके उसपर आये कि हुल्लड़-सा हो गया। उनके साथ के दो-तीन और आदमियों ने मिलकर गोरे को वह आड़े हाथों लिया कि अगर एक दूसरा गोरा आकर बीच-बचाव न करता, तो शायद पूरा झगड़ा खड़ा हो गया होता। असग़र साहब बाद में कहते थे कि वह गोरा

बिलकुल बदमाश और झूठा था, और उसने जान-बूझकर भारतीय मुसलमानों की तौहीन करने की नीयत से वह हरक़त की थी।

ज़नाने दर्जे की सब खिड़कियाँ चढ़ाकर और पानी इत्यादि का प्रबन्ध करके असग़र साहब एक कुली और दही-बड़ेवाले के साथ हमारे यहाँ आये। मैं शर्बत पी रहा था। पहले तो कुली से वाद-विवाद हुआ, और फिर दही-बड़ेवाले का नम्बर आया। पहले तो दही-बड़े का ख़ोमचा फाँदने की असफलता के कारणों पर उन्होंने विस्तार रूप से प्रकाश डाला, और सब दोष दही-बड़े वाले पर रखा कि यदि वह अपना हाथ अकारण ही उनके पाँव में न डालता, तो वे उसे अवश्य लाँघ जाते। अस्तु, बड़ी झाँय-झाँय के उपरान्त दही-बड़े वाला पाँच रुपया लेकर टला। रेल चली और तनिक सन्तोष हुआ, तब विपत्तियों का पूरा विस्तार सुनने में आया। ध्यान से असग़र साहब ने अपने कपड़ों की ओर देखा, तो पतलून और मोजों पर जगह जगह दही और सोंठ की चटनी के धब्बे दृष्टिगोचर हुए. इसलिए रूमाल भिगोकर छुड़ाने की कोशिश करके उनको ख़ूब ही फैलाया।

तनिक विचार तो कीजिए। जितना सामान उनके पास था, उससे चौगुना हमारे पास था। यात्रा करने वाले दो मियाँ-बीवी हम थे। पर वे एक विपत्ति में ग्रसित थे, और हम आराम से थे। यदि उनकी श्रीमती जी विपत्ति का कारण थीं, तो हमारी

श्रीमती जी सुख और चैन का कारण। यदि वास्तव में वे मज़हब के पाबन्द थे और हम उससे मुक्त, तो क्या यह ठीक है कि यह मज़हब इस युग में रहन-सहन के लिए उपयुक्त नहीं, अथवा हमारा दावा कि हमारा मज़हब प्राकृतिक मज़हब है, ठीक है। तनिक इस विषय पर फिर सोचिये।

३

तीन-चार स्टेशन बाद असग़र ने उतरकर अपनी श्रीमती जी की ख़बर ली कि उनका क्या हाल है। वहाँ जाकर देखा, तो सब खिड़कियाँ, जिनको वे बन्द कर आये थे, खुली पाईं। शीघ्र ही उन्होंने उन्हें चढ़ाया। उनकी श्रीमती जी ने उनको यह दुखद समाचार सुनाया कि उनके चले जाने के उपरान्त काली अचकन पहने कोई व्यक्ति ज़नाने दर्जे में आया और एक कुली पर उनका एक ट्रंक दिन-दहाड़े रखवाकर चलता बना। उनकी श्रीमती जी बेचारी परदानशीन तथा अनुभवहीन स्त्री थीं। ट्रंक को जाते देख, स्वयं कहने या रोकने के बजाय, उन्होंने पास बैठी हुई एक स्त्री के कान में कुछ कहा; पर वह तीसरा दरजा न था। सब परदानशीन स्त्रियाँ थीं। उसने कहा—"फिर रोकती क्यों नहीं हो?" वह भला रोकतीं! वह ट्रंक लेकर चलता बना और गाड़ी भी चल दी। उस ट्रंक में बहुमूल्य कपड़ों के अतिरिक्त दो हज़ार के मूल्य की और भी सम्पत्ति थी।

दौड़-धूप करके शीघ्र ही पुलिस को सूचना दी और तार

दिलवाये। चाँदनी ने उनसे कहा—"क्षमा कीजिये, इसमें आपकी बेगम साहिबा की ग़लती है। पहले तो उन्हें उस आदमी को तुरन्त ही वहीं रोक देना चाहिए था, और यदि उनसे यह न हो सका, तो उनको ज़ंज़ीर खींचकर गाड़ी रोकनी थी। और न सही, तो कम-से-कम पहले स्टेशन पर ख़बर ही करतीं।"

असग़र ने व्यंग से कहा—"क्षमा कीजिए, उस आदमी का हाथ पकड़ लेतीं?"

चाँदनी—"आख़िर क्यों न पकड़ लेतीं? मैं होती, तो अपना ट्रंक कदापि इस प्रकार न ले जाने देती।"

असग़र—"अजी, एक ट्रंक के पीछे हमारे यहाँ की स्त्रियाँ न तो परदा तोड़ती हैं, और न मरदों से उलझती हैं।"—ये शब्द असग़र ने कुछ गौरवपूर्ण ध्वनि में कहे।

चाँदनी—"केवल इसी कारण उन्होंने उसके विषय में सूचना भी नहीं दी?"

असग़र—"निस्सन्देह, यह तो एक ट्रंक है। यदि लाखों की भी चीज़ होती, तो भी वह किसी मर्द से उसके विषय में बात न करती।"

मैंने कहा कि आश्चर्य है कि आपने अपने घर की स्त्रियों को इतना लाचार कर रखा है। मेरी समझ में तो आप जैसे उदार-विचार के व्यक्ति को ऐसे निकम्मे विचार शीघ्रातिशीघ्र छोड़ देना चाहिए। इस पर वे बोले—"जनाब, मैं ऐसी रोशनी

का क़ायल नहीं, जो मज़हब के विरुद्ध हो। यह रोशनी मुस्तफ़ा कमाल के शासन को ही मुबारिक हो।" ऐसी ही बातें होती रहीं कि एक स्टेश्शन पर असग़र ने देखा कि कोई साहब खड़े जनाने दर्जे की खिड़कियाँ खोल रहे हैं। बस, फिर क्या था। तुरन्त ही लपककर घटनास्थल पर पहुँचे।

"मैं खिड़कियाँ बन्द करता हूँ और आप हैं, जो खोल-खोल देते हैं।"

"अच्छा, यह आप हैं! मैं स्वयं परेशान हूँ, और बार-बार खोलता हूँ, और आप बन्द कर देते हैं! मारे गर्मी के स्त्रियों का बुरा हाल है, और आपको परदे की सूझी है। यदि ऐसा ही है, तो आप अपनी स्त्री को किसी और जगह बिठाइये, या फिर साथ लेकर ही क्यों चले थे?"

"मगर मैं आपको खिड़कियाँ न खोलने दूँगा। जितना अधिकार आपको है, उतना ही मुझे भी।" असग़र ने एक खिड़की बन्द करते हुए कहा।

"मैं अधिकार-वधिकार कुछ नहीं जानता और खोलूँगा। स्त्रियाँ न हुईं, जानवर हो गईं।"

"तो आप कम-से-कम मेरी ओरवाली खिड़की रहने दीजिए।

"मैं आपकी और अपनी कुछ नहीं जानता। मैं इस खिड़की को तो अवश्य खोलूँगा, क्योंकि यही तो मुख्य है।"—उस टर्रे और ज़िद्दी आदमी ने कहा।

"आप नहीं मानते, तो मैं स्टेशन मास्टर से कहता हूँ।"
—असग़र ने कहा।

"आप लाट साहब से कह दीजिए, जाइये।"—आवेश से वह अपरिचित व्यक्ति बोला।

स्टेशन मास्टर और गार्ड आये, और उस टर्रे और ज़िद्दी आदमी की जीत हुई। गर्मी भी इतनी विकट पड़ रही थी कि खिड़की का बन्द रखना असह्य था। लाचार होकर असग़र पेचताव खाकर रह गये, क्रोध अपनी श्रीमतीजी पर यह कहकर उतारा कि बुर्क़े के ऊपर एक और चादर ओढ़कर कोने में नाक लगाकर बैठ जाओ।

४

असग़र साहबकी विपत्ति की अभी वास्तवमें समाप्ति नहीं हुई थी, वरन् श्रीगणेश ही हुआ था। पग-पगपर उनके मज़हब और वर्तमान रहन-सहन का प्रदर्शन होता था।

गाड़ी चलते-चलते धीमी हुई और रुक गई। ज़नाने ड्योढ़े दर्जेके पहियोंके धुरे तेलकी कमी और गर्मीकी भयंकरताके कारण तप उठे थे, और आग लग जाने की आशंका थी। गाड़ी जङ्गलमें रुकी हुई थी, और उसके धुरे पर पानी छिड़का जा रहा था। स्त्रियों को जल्दी-जल्दी उतारा जा रहा था। असग़र साहब की घबराहट उपदेशप्रद थी। परदे के सम्पूर्ण ढङ्गों के साथ श्रीमतीजी को उतारना और सामान उतरवाना

एक विपत्ति थी। वहाँ कौन था, जो चादरें तानता और डोली लाता। उधर गार्ड 'उतरो, उतरो जल्दी करो' कह कर और भी रहे-सहे होश उड़ाये देता था। बाध्य होकर असग़रने अपनी श्रीमतीजीसे उतरने को कहा। प्लेटफ़ार्म तो था नहीं, मानो छत पर से उतरने का मज़मून पेश था। हमारी समझ में तो न आता था कि किस प्रकार कोई आँखें बन्द करके उतर सकता है, और वहाँ असग़र साहब की श्रीमतीजी से इस कार्य के करने की आशा की जा रही थी। वह स्त्री, जो डोली से एक पग रख कर गाड़ी के डब्बे में बैठने की अभ्यस्त हो, वह भला बुर्क़ा और बुर्क़े के ऊपर चादर ओढ़कर उस हैरानी और परेशानी में किस प्रकार उतर सकती है? काँपते हुए हाथों से टटोल कर ग़रीब ने खिड़की को पकड़ा। पैर नीचे करके टटोल रही थीं कि किस चीज़ पर और कहाँ पैर रखूँ कि बे-परदगी होने लगी, यानी हवा से चादर उड़कर कुछ भाग पोशाक का खुल गया। असग़र ज़ोर से चिल्लाये। ग़रीब ने घबरा कर सँभलना चाहा कि पैर कहीं-का-कहीं पड़ा। हाथ से खिड़की छूटी और धम से नीचे गिरीं। नीचे ट्रंक रखा गया था, जिस पर असग़र खड़े थे। ट्रंक का कोना कोल्हू में इस ज़ोर से लगा कि बेदम ही तो हो गईं; पर ज़बान से उफ़ तक न निकली। एक तो गर्मी की तेज़ी, फिर उस पर कपड़ों का बोझ और तिस पर वह चोट—बेचारी बेहोश हो गईं। जैसे-तैसे करके घबराहट और जल्दी में चाँदनी ने सहारा देकर उठवाया। किसी दूसरे मर्द की सहायता के असग़र इच्छुक न

थे, और चाँदनी ठहरी कमज़ोर; फलस्वरूप बेचारी को कंकरों पर मुर्दे की तरह घसीट कर ले चले।

जिस प्रकार बन पड़ा, हज़ार कठिनाइयों से एक ज़नाने तीसरे दर्जे में ग़रीब को रखा। अपने साथ बिठाने को हमने बहुत-कुछ कहा; पर ज़नाना और कोई दर्जा ख़ाली ही न था। चाँदनी सहानुभूति के ख़याल से उनकी श्रीमती की सेवा-शुश्रूषा के लिए साथ हो गई। जैसे-तैसे करके सामान अपने साथ किया, और गाड़ी चली।

चाँदनी ने वहीं गाड़ी की बेंच के पास श्रीमती असग़र को लेटा रहने दिया, क्योंकि और कहीं स्थान न था। तकिया लगा दिया और मुँह खोलकर हवा दी।

अगले स्टेशन पर असग़र साहब उतर कर जो आये, तो क्या देखते हैं कि ज़नाने दर्जे का द्वार खुला है, और सामने उनकी श्रीमती जी लेटी हैं, और चाँदनी उनके पास बैठी हवा दे रही है, और उन्होंने बरफ़ का पानी माँगा। देख कर असग़र साहब आपे से बाहर हो गये, और ज़ोर से चिल्ला कर बोले—"अरे यह क्या ग़ज़ब कर रही हैं? मुँह तो ढकिये। अरे, मुँह क्यों नहीं ढकतीं?"—यह कहकर एकदम लपक कर दर्जे में घुस आये। "यह क्या सितम है? ग़ज़ब है खुदा का!"—कह कर अपनी श्रीमती जी का मुँह ढँक दिया, और वक्रदृष्टि से क्रोध में चाँदनी से कहा--"यह आपसे किसने कहा था कि अपनी तरह

मेरी बीवी का भी मुँह खोल दें ? यह आप को ही मुबारिक हो। आप रहने दीजिए और जाइये।"

गई थी भले को और वहाँ हुआ बुरा। चाँदनी बेचारी चुप-चाप चली आई। मेरी तबीयत ख़राब थी, इस कारण उस यात्रा में उसकी हाजिर-जवाबी काम न करती थी। फिर भी कहने लगी—"कहिये तो फिर इनकी ख़बर ली जाय।" मैंने कहा—"नहीं, रहने दो।" इतने में असग़र साहब आये, और उसी जले-भुने लहजे में कहने लगे—"आपसे आखिर किसने कहा था कि आप मेरी बीवी का मुँह हर एक के देखने के लिये खोल दें।

चाँदनी—"मैं लज्जित हूँ, मगर यह तो···"

असग़र—जो हाँ, मगर-वगर को जाने दीजिए। आख़िर शर्म-हया भो तो कोई चीज़ है। आपकी भाँति स्त्रियों की शर्म-हया को ताक···"

जली तो चाँदनी पहले से ही बैठी थी। इतना सुनना था कि छतरी लेकर, जब तक मैंने रोका, तब तक दो-तीन असग़र साहब के ऊपर तड़ातड़ ठीक उसी भाँति लगाई, जिस प्रकार उन्होंने हुक्के के हाथ मेरे जड़े थे। असग़र साहबने बहुत-कुछ वार रोके; पर तीन-चार बुरी तरह पड़े। 'हैं हैं' कह के मैंने डाँट कर रोका।

"बदतमीज़ ! बदज़ुबान ! निकल जा यहाँ से।" कहकर वह क्रोध में ज़ंजीर की ओर लपकी, और कहती गई—"मैं अभी निकलवाती हूँ।"

"यह क्या वाहियात बात है ?"—कहकर मैंने हाथ पकड़कर घसीटा और पकड़ कर बिठाया। वह क्रोध से काँप रही थी और कह रही थी—"मुझे छोड़ दीजिए।"

मैंने डाँटकर बिठाया। असग़र साहब की विचित्र दशा थी। मैंने उनसे क्षमा माँगी, और थोड़ी देर में चाँदनी से भी कहा कि तुम भी माफ़ी माँगो। बड़ी कठिनाई से समझाने-बुझाने पर चाँदनी ने कहा—"यदि असग़र साहब अपने शब्द लौटा लें, तो मैं अपनी मूर्खता और उद्दण्डता पर लज्जित हूँ, और माफ़ी माँगती हूँ।"

"मुझको दुःख है कि क्रोध में मैं आपको न-मालूम क्या कह गया !"—ये शब्द मैंने असग़र साहब से कहलवाये और दोनों ने हाथ मिलाया; पर न तो चाँदनी का दिल साफ़ था और न असग़र साहब का, और शेष यात्रा में एक ओर असग़र मुँह फुलाये बैठे रहे, और उधर वह चुप बैठी रही।

मैंने चुपके से चाँदनी के कान में कहा—दोस्त, तुमने हमारा बदला ख़ूब लिया। इसी व्यक्ति ने उस रोज़ हुक्के की नैसे मेरी मरम्मत की थी।"

चाँदनी ने आश्चर्य से कहा—"अरे !"

तो मैंने कहा—"चुप। ख़बरदार जो बात निकाली। ये हज़रत मुझे पहचान ही न सके। अकारण लज्जित करने से कोई नतीजा नहीं।"

चाँदनी चुप हो गई। आगरे में हम दोनों उतरे, तो शोक-निवारणार्थ फिर हाथ मिलाये।

दुर्भाग्य से असग़र साहब की विपत्तियों का अभी अन्त न हुआ था। आठ सात रोज़ के बाद जब मैं असग़र साहब के घर दुबारा अपनी श्रीमतीजी की अशिष्टता पर क्षमा माँगने गया, तब मेरे आश्चर्य की सीमा न रही। असग़र का घर तो समवेदनागार बना हुआ था। मैं सन्नाटे में आ गया, जब मैंने सुना कि असग़र की श्रीमतीजी खो गईं!

आगरे के स्टेशन पर से वे उसी प्रकार उन्हें चादरें तानकर डोली में बिठाकर लाये। स्वयं तो ताँगे पर थे और डोली के साथ नौकर था। घर पर बजाय उनकी श्रीमती जी के एक वृद्धा परदानशीन स्त्री उतरी। इधर वह हैरान कि मैं कहाँ आगई, और उधर असग़र के घर वाले परेशान। वृद्धा कहती थी कि मेरा बेटा कहाँ है, जो डोली लेकर आया था, और असग़र कहते थे कि मेरी बीबी लाओ। दौड़कर स्टेशन पहुँचे। वहाँ से गाड़ी राजामण्डी के स्टेशन को जा चुकी थी। वहाँ पहुँचे, तो इतना ज़रूर पता चला कि गाड़ी चूँकि वहीं समाप्त होती है, इसलिए एक बुर्क़ापोश स्त्री के अतिरिक्त उसमें कोई नहीं पाया गया, और वह भी उतर कर एक आदमी के साथ चली गई। दोनों के पास टिकट आगरा सिटी से राजामण्डी के थे। दूसरा आदमी नौकर मालूम होता था, जो उनको किसी बन्द गाड़ी में बिठा ले गया।

असग़र का बुरा हाल था। पागलों की भाँति टकरा-टकरा कर उन्होंने सिर फोड़ लिया था। यदि घरवाले न होते, तो कोई आश्चर्य नहीं कि अपनी जान गँवा देते, क्योंकि उनको अपनी श्रीमती जी के प्रति प्रेम ही नहीं, वरन आसक्ति भी थी। उनकी शोचनीय दशा दयनीय थी, और उनको देखने से उपदेश मिलता था। वे बिलकुल पागल-से हो रहे थे।

उनका ट्रंक मिल गया था। कोई भले आदमी धोके में ले गये थे। भूल मालूम होने पर लौटा गये। ट्रंक आ गया; पर वहाँ तो ट्रंकवाली का रोना था। उनके घरवालों और उनसे सहानुभूति प्रकटकर शोक-मग्न मैं घर आया, और चाँदनी को सब समाचार सुनाया। उसे भी बेहद दुःख हुआ।

हम साल भर तक आगरे में रहे। उस समय तक तो उनकी बीवी मिली नहीं थी, और उनका क़िस्सा भी पुराना हो चुका था, कि हम दूसरी जगह चले गये।

सातवां परिच्छेद

गुमनाम पत्र

हमारी बीवी इस नौकरी से प्रसन्न थी कि बदली होती है, और नये-नये स्थानों में रहने का अवसर मिलता है। हम कई जगह की हवा खा चुके थे और फिर नई जगह की आशा थी। संयोग की बात या खुश किस्मती कि हमारी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा, जब हमें मालूम हुआ कि अब हमें हामिद के शहर में रहने का अवसर मिलेगा। हामिद अपने पुराने और पक्के दोस्त थे। हमने उन्हें फौरन तार दिया और हमारी बीवी ने तो सामान इत्यादि फौरन ही बाँधना शुरू कर दिया। हामिद का पत्र आया। वह पत्र क्या था, मानों किसी स्वागत-समिति के अध्यक्ष की ओर से मानपत्र था।

हम नये शहर में सीधे बीवी सहित हामिद के मेहमान हुये। उन्होंने हमारी इस प्रकार खातिर की, मानों वर्षों की दोस्ती का हक़ पेशगी ही में अदा कर दिया। हामिद ने एक नया मोटर लिया था। नया नया शौक़। हमें और हमारी बीवी को खूब सैर कराते और शहर के सभी प्रसिद्ध स्थानों को बारी-बारी से दिखाते। हामिद की माँ और बहन से मिलकर चाँदनी बहुत प्रसन्न हुई।

हम आठ दस दिन, हामिद के मेहमान रहे। फिर उसके बाद हमें शहर के कुछ बाहर एक छोटा सा बँगला उचित किराये पर मिल गया और हम उसमें चले गये।

हमारे और चाँदनी के जीवन में इन थोड़े ही दिनों में बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया था, और धीरे धीरे, प्रत्येक मंजिल पर हम और हमारा जीवन दोनों बदलते जाते थे। पहले मकानों में रहते थे, और शहर अच्छा लगता था। फिर बँगलों में रहने लगे, और बंगलों ही का ढङ्ग अख्तियार किया। पहले चाँदनी को हमारी सुसाइटियों, और मनोरंजनों से कोई सम्बन्ध न था, और वह सीधी सादी एक ग़रीब और लज्जालु लड़की थी। किन्तु अब यह कैसे संभव हो कि हम कहीं सैर, आराम या मनोरंजन के लिये जायँ, और चाँदनी हमारा साथ न दे। उसने इस परिवर्तन को प्रसन्नता-सहित स्वीकार किया था। पहले तो वह नाम मात्र के पर्दे में रहती थी और हम यार-दोस्तों के साथ सैर करते थे और अधिकतर उनमें ऐसे भी होते थे, जैसे हमारे पुराने दोस्त मास्टर गुलाब चन्द। किन्तु अब हमारे लिये यह असंभव था, कि हम किसी असभ्य सोसाइटी, या बातूनी दोस्त से मिल सकें या उसके साथ बैठ सकें। क्योंकि चाँदनी हमारे साथ ही रहना पसन्द करती थी। केवल इसीलिये क्लब से भी हमारी दिल-चस्पी जाती रही थी। क्योंकि घर पर अकेली बीबी घबड़ाया करती थी। हम कभी कभी चले जाते; किन्तु हमको दिलचस्पी

अधिक इसी में थी, कि शाम को अपने घर पर रहें या अकेली बीवी के साथ हवा खायें। चाँदनी इस वर्तमान जीवन को यदि पसन्द करती थी, तो केवल इसी कारण से कि वह प्रसन्न थी, कि हमारी पुरानी सोसाइटी छूट गई और हमारे दोस्तों और मिलने वालों की संख्या घट कर इस तरह सीमित होगई कि उसमें एतराज करने की कोई गुंजाइश ही न रह गई। हमारे दोस्तों में यहाँ वैसे तो बहुत थे, और सभी थे, किन्तु वास्तव में अब हमारे दोस्त भी दो प्रकार के थे। एक तो वे, जो केवल हमारे थे, और जिनसे हमारी मुलाक़ात बैठक तक ही सीमिति थी, और दूसरे वे जो हमारे और हमारी बीवी, दोनों के मिलने वाले थे। साफ़ बात है कि इस तरह के मिलने वालों की संख्या कम होगी और हामिद के अलावा दूसरा कोई भी न था। या फिर हामिद के एक और गहरे दोस्त थे, जिनका नाम रफीक था किन्तु चूँकि वे देहात में रहते थे, इसलिये वे केवल कभी कभी आते थे।

हामिद को शिकार की भी बड़ी बुरी लत थी, किन्तु जब से हम आये थे, अतवार को उनको पकड़ लेते थे और उनको अवसर न मिलता था। हामिद ने प्रति दिन कह-कह कर अन्त में एक दिन राज़ी ही कर लिया। चाँदनी ने चूँकि शिकार खेलते हुये कभी न देखा था, अतएव हमने भी लाचार होकर स्वीकार कर लिया। शिकार की पार्टी भी बहुत ही संक्षिप्त थी। हम, हमारी बीवी और हामिद, और एक बैरिस्टर साहब। बैरिस्टर साहब

का नाम हम यहाँ बताना नहीं चाहते। बहुत ही मुनासिब सूरत, शकल, और स्वभाव के जवान आदमी थे। पैंतीस वर्ष की उम्र होगी। विलायत से बीवी लाये थे, जो साल भर के भीतर ही मर गई। फिर दूसरी बार शादी न की। किसी दूसरी जगह के रहने वाले थे, किन्तु शुरू से यहीं रहते थे, और सदा से बिल्कुल अकेले रहने के अभ्यासी थे।

२

सबेरे चार बजे ही हामिद ने आकर खटखटाया। बैरिस्टर साहब से हमारी मुलाक़ात कई बार हो चुकी थी, किन्तु चाँदनी की और उनकी यह पहली ही मुलाक़ात थी। बड़ी जल्दी से हमने चाय तैयार करवाई और छुट्टी पाकर हामिद की मोटर में चल दिये। हामिद मोटर स्वयं चला रहे थे और आगे उनके पास हमारी बीवी बैठी थी, और हम और बैरिस्टर साहब पीछे बैठे थे।

बारह पन्द्रह मील पक्की सड़क का रास्ता तै करने के बाद कच्ची सड़क आई और फिर दो चार मील चलकर गड्ढे और ऊँची नीची ज़मीन से वास्ता पड़ा, यह कठिनाई भी आसानी से खतम होगई और झील आगई। हम लोग उतर पड़े और झील की ओर चले।

झील में मुर्गियाँ और बड़ी बत्तखें भरी पड़ी थीं। हमने चाँदनी को ऐसी जगह में बिठा दिया, जहाँ से वह तमाशा देख सके, और हम तीनों झील की ओर चले। हम लोग अलग

अलग होगये, और झील को तीन ओर से घेर लिया। हामिद ने पहले बन्दूक़ चलाई और फिर उड़ने पर बैरिस्टर साहब और हामिद ने बहुत से फ़ैर किये। हमने भी कोशिश की। हमने तो एक पर तक न मारा, किन्तु हामिद और बैरिस्टर साहब ने मिलकर ख़ूब शिकार किया।

यहां से छुट्टी पाकर अब हिरन के शिकार का विचार किया। थोड़ी ही देर बाद बैरिस्टर साहब हमसे, और चाँदनी से भी बहुत हिलमिल गये, और शिकार में बड़ा आनन्द आया। हामिद से और बैरिस्टर साहब से शिकार की पुरानी दोस्ती थी और दोनों पुराने शिकारी थे।

खुलासा यह कि हम लोग बारह बजे के लगभग लौटे। ख़ूब शिकार हुआ, और चाँदनी ने भी शिकार का ख़ूब आनन्द उठाया। चूँकि खाना तैयार ही था, हामिद और बैरिस्टर साहब ने भी हमारे ही यहां खाना खाया। खुलासा यह कि दिन आराम से कटा। बैरिस्टर साहब हमसे और चाँदनी से मिल-कर बहुत प्रसन्न दिखाई देते थे, और चाँदनी ने भी इनके सम्बन्ध में यह निश्चित फ़ैसला दिया था कि ये बहुत मुनासिब और अच्छे आदमी हैं, और सचमुच वे थे भी ऐसे ही।

× × ×

बैरिस्टर साहब हमारी बीवी से पहली बार मिले थे। किसी ने सच कहा है कि किसी से मिलो तो उसके सम्बन्ध में कोई राय स्थिर करने में शीघ्रता न करनी चाहिये। वे युरोप की एक

झलक देखे हुये थे। आम तौर से हमारे जो नौजवान विलायत जाते हैं, और जो मामूली हैसियत के होते हैं, वे वहां नीचे दर्जे की सोसाइटी में रहते हैं, और वहां की औरतों की तबीयत और उनके आगे बढ़े हुये विचारों को देखकर स्त्री-संसार के बारे में एक आम राय कायम कर लेते हैं; और अपने आपको स्त्रियों की आदतों का विशेष जानकार समझने लगते हैं। हमारे बैरिस्टर साहब का भी यही हाल था। हामिद ने जब उनसे हमारी बीबी के सम्बन्ध में घर लौटते समय चर्चा की, तब उन्होंने एक हँसी और ताने के ढङ्ग पर कहा,—"आपको उनसे इस भांति क्यों दिलचस्पी है?"

"इसलिये कि वे मेरे दोस्त की बीबी हैं।"

"या इसलिये कि वे एक दोस्त की खूबसूरत बीबी हैं।"

"लाहौल, विलाक़ूह, तुम भी कैसे आदमी हो।" हामिद ने कहा।

"मुझसे अधिक आपको नये ढङ्ग की प्रेम करने वाली औरतों का अनुभव नहीं है।"—बैरिस्टर साहब ने कहा।

"अच्छा हो, यदि आप कोई दूसरी चर्चा करें।"—हामिद ने गम्भीर होकर कहा।

"अजी जनाब, आप मुझसे।"

"मेहरबानी करके चुप हो जाओ। क़सम खुदा की, मैं एक शब्द नहीं सुन सकता।"—हामिद ने आवश्यकता से अधिक

गम्भीर होकर कहा। बात हुई, खतम होगई, और हामिद ने हमसे कभी उसकी चर्चा भी न की।

× × ×

इतवार का दिन था, और हमने चांदनी से कहा, कि आज तो दोस्त हलुवा खिलाओ। हमारी बीवी को हमारे ऐसे दोस्तों की आवभगत करने की चिन्ता रहती थी, जिनके घर औरतें न हों। वह ऐसे दोस्तों को अक्सर तरह तरह के खाने बना कर भिजवाती रहती थी। हमारी राय से हमारी बीवी बिलकुल सहमत हुई और कहा, कि हम आज दो-तीन तरह के हलुये और भुना हुआ गोश्त बनायेंगी, और बैरिस्टर साहब के यहाँ ज़रूर भेजेंगी।

हमने अपने मन में सोचा कि हम भी क्यों न अपनी बीवी का हाथ बँटाये? जब चाँदनी ने यह सुना तो यह निश्चय हुआ कि एक हम बनायें, और एक वह बनाये। हमने कहा कि मूँग की दाल का हलुवा तू बना और हम चने का बनायेंगे। विचार दो तरहके हलुये का था; किन्तु तीन तरह का निश्चय हुआ—अर्थात् सूजी का भी।

हमने अपने बँगले के बरामदे में बहुत जल्द ईंटों के चूल्हे बनाये और बहुत जल्द हलुये तैयार किये जाने लगे। गोस्त दूसरे चूल्हे पर रख दिया गया। हमारी बीवी, चूँकि समझदार अधिक थी, इसलिये वह विभिन्न डिब्बों पर, हर चीज़ जैसे नमक, और शकर, इत्यादि के लेबिल लगाकर रखती थी। नमक

भी इस सावधानी से बन्द करके रक्खा जाता था कि हुक्म था, कि चम्मच ही से डिब्बे से निकाल कर डाला जाय। बदक़िस्मती कहिये, या खुश क़िस्मती, कि जब घी में दोनों हलुये खूब भुने गये, और खुशबू निकलने लगी, तब शक्कर न डालकर, जो पिसी हुई थी, उसने खूब अच्छी तरह नमक डाला। जल्दी से तैयार करके हलुये उतारे गये, और बहुत ही बना चुना कर उनको केसर और केवड़े की खुशबू से तर कर प्लेटों में रखकर सोने के वर्क़ लगाये गये और उनपर बारीक-बारीक मेवे बिखेरे गये। खुश क़िस्मती से सूजी के हलुये में नमक नहीं डाला गया। इसको हम बना रहे थे। जब शक्कर इत्यादि डाल दी गई, तब वह भी उतारा गया। हम असल में उसको बहुत ही मुलायम बनाना चाहते थे, किन्तु मालूम हुआ कि वह बहुत कड़ा बन गया खैर, कुछ भी हो। उसको परात में जमा दिया गया। अब गोश्त का हाल सुनिये, उसमें नमक न डालकर बहुत ही बेफिक्री के साथ शक्कर डाली गई। हमने नमक भी चखकर देखा, किन्तु गरम गरम होने के कारण कुछ मालूम न हुआ, और हमने यह समझ कर कि ठीक है, उसको भी पास कर दिया। किन्तु हमारी बीबी ने केवल होशियारी वश नमक न डाला कि कहीं तेज़ न हो जाय। सबसे पहिले इन सभी चीज़ों में से थोड़ा थोड़ा हमारी बीवी ने बैरिस्टर साहब के लिये निकाला, और आदमी को भेजा, कि जल्दी जावो, जिससे खाने के वक्त चीज़ें पहुँच जायँ। अब हमारे सूजी के हलुये का हाल सुनिये, कि वह

बदनसीब इस तरह कड़ा होगया, कि हमारी अक्ल काम न करती थी। किसी प्रकार खाया ही न जाता था। और उसको तोड़ने के लिये पत्थर की आवश्यकता थी। दूसरे हलुये जब खाये गये, तब वे नमक के मारे ज़हर निकले, और भुने हुये गोश्त को जब खाया, तब वह बेहद मीठा। तात्पर्य यह कि सभी चीज़ें बर्बाद होगईं। हम चाँदनी को दोष देते थे और, वह हमें। अब सलाह यह हुई, कि इसको क्या किया जाय? नमकीन हलुये तो बिलकुल बेकार थे। विवश होकर मनोरंजन के लिये सब के यहां भेज दिये गये। गोश्त को हमने नमक से ठीक बना करके खा लिया।

यह कोई असाधारण बात न थी, कि मज़ाक में ऐसा हो जाय! किन्तु बैरिस्टर साहब न जाने किस ओर जा रहे थे, और न जाने कि उन्होंने क्या समझा। शाम को आये और हलुये के लिये कृतज्ञता प्रगट की, और हमारी मनोरंजक बीवी से बहुत सी बातें करते रहे। हामिद भी आये। मतलब शाम को काफी आनन्द रहा, और उसका खातमा मोटर की सैर के बाद हुआ।

३

दो-तीन महीने में हमारे बैरिस्टर साहब से ऐसे सम्बन्ध हो गये कि वैसे हामिद से भी न थे। बैरिस्टर साहब चाँदनी की प्रशंसा करते-करते मरे जाते थे, और अब हमारा उनसे हद से ज्यादा बिना बनावट के मेल जोल होता था। हम पर

और चाँदनी पर वे इस तरह कृपालु थे कि वे सैकड़ों नई चीज़ें हमारी बीवी को भेंट में दे चुके थे। और चाँदनी का यह हाल था कि वह दिन रात बैरिस्टर साहब की तारीफ किया करती थी। खुलासा यह कि बैरिस्टर साहब हमारे अच्छे दोस्तों में से थे।

× × ×

हम एक दिन जब कचहरी से आये, तब चाँदनी असाधारण रूप से प्रसन्न मालूम हुई। हमने कहा, क्या मामिला है, हमें भी बताओ, तो उसने एक पत्र हमारे सामने रख दिया। उसमें कुछ थोड़े प्रेम सम्बधी शेर लिखे हुये थे, और लिखा था, कि इसका जवाब यदि देना है तो फलां फलां जगह पर रख देना। हम आश्चर्य में थे, कि इलाही, यह कौन है। लिफाफे पर पते और मुहर को देखा। मालूम हुआ कि इसी जगह का है। हमारी बीवी का पता लिखा हुआ था। हमने बहुत कुछ सोचा, किन्तु कुछ समझ में न आया। चाँदनी भी पत्र के जवाब के रूप में बड़ी कठिनाई से सोच-विचार करके नीचे लिखा हुआ शेर लिख लाई और हमको दिखाया:—

एक लड़के ने अपने बुड्ढे बाप से यह कहा:—

तू सरापा नाज़ है, मैं नाज़ बरदारों में हूँ।

एक लड़के ने अपने बुड्ढे बाप से यह कहा:—

आंखों ही आंखों में ज़ालिम मुसुकुराना छोड़ दे।

एक लड़के ने अपने बुड्ढे बाप से यह कहा:—

यार की गलियों में क्योंकर यार जाना छोड़ दे।

साफ है कि हँसी के मारे हमारा क्या हाल हुआ होगा? किन्तु हमने अपनी चुलबुली बीवी की तबियत की तेज़ी की खूब तारीफ की।

खुलासा यह कि पत्र रख दिया गया। उसका जो जवाब आया तो उसमें और भी बढ़े-चढ़े शेर थे। चार पांच ही पत्र इस तरह आये गये थे, कि पत्र भेजने वाले अपने असली मतलब के बहुत क़रीब आगये, और इबारतों में प्रेम की कथा सुनाने लगे।

हमने बीवी से कहा कि मारो गोली, जाने दो, किन्तु वह कठिनाई से मानी। मगर वे दूसरे हज़रत भला क्यों मानते? उनके इस तरह लम्बे-चौड़े पत्र आने लगे, कि चाँदनी ने क ा, कि अब असंभव है कि इनके पत्रों का जवाब न दिया जाय। अत: उचित जवाब लिख दिया गया, जैसा कि एक औरत को लिखना चाहिये था।

हमने अब हामिद को इस रहस्य से सचेत किया। उसने जब पत्र देखे, तब सिर पकड़कर रह गया। उसने कहा कि ये हज़रत बैरिस्टर साहब हैं, और शिकार वाले दिन उनसे जो बातचीत हुई थी, उसकी फिर चर्चा की। हम सन्नाटे में आगये, और हमें शीघ्र मालूम हुआ कि कदाचित् इसी सबब से बैरिस्टर साहब ने हमारे यहां आना बन्द कर दिया है। चाँदनी को

एक दुःख सा हुआ कि जैसे उसका कुछ नुक़सान होगया हो। किन्तु वह थोड़ी देर में बोली, कि यदि आप दोनों आदमी चुप रहें, तो मैं वह तमाशा दिखाऊँ, कि आप लोग ज़िन्दगी भर याद करें। हमने कहा, वह क्या, तो उसने किसी बहुत बड़ी शरारत का उदाहरण देते हुये कहा, कि हम तुमको न बतायेंगी। उसके चेहरे पर शरारत नाच रही थी और वह हँस रही थी।

× × ×

उसने एक पत्र, इन गुमनाम पत्रों के लिखने वाले को उनके पत्र के जवाब में लिखा; कि चूँकि आप मुझसे अकेले में मिलने के अधिक इच्छुक हैं, अतः आप मुझसे पोलो के मैदान में मिलियेगा। किन्तु याद रखिये कि आप वहां इस प्रकार छिपे हुये हों, कि सड़क पर से दिखाई न पड़ें। अच्छा यह है कि सड़क से कुछ दूर पर जो पेड़ है, उस पर चढ़कर पत्तों में छिप जाइयेगा। मैं, अगर खुदा की मेहरबानी हुई, तो मग़रिब के नमाज के वक़्त पहुँचूँगी। दिन और तारिख तो नियत ही थी। हम झट नियत समय से पहले हामिद को लेकर बैरिस्टर साहब के यहां पहुँचे, और उनसे कहा, कि चलो मोटर पर हवा खा आयें। बैरिस्टर साहब तैयार न हुये। जब हमने कारण पूछा, तब कहने लगे कि आज मैं कहीं न जाऊँगा......। इस पर हम दोनों ने कहा, कि फिर हम भी आप ही के यहां बैठते हैं। बैरिस्टर साहब चकराये और कहने लगे, कि भाई वास्तव में बात यह है कि मुझे एक जगह एक मुकदमे के सम्बन्ध

में जाना है। हमने कहा, हम भी आपके साथ चलेंगे। किन्तु बैरिस्टर साहब ने विवश होकर कहा, "अफ़सोस है, मैं कुछ ऐसे काम से शहर में ही एक साहब से मिलने जा रहा हूँ, कि आप लोगों को बता नहीं सकता। मुझे माफ़ कीजियेगा।" जब हमने खूब छका लिया तब चले आये।

४

मोटर को तो हमने पोलो के मैदान से कुछ दूर छोड़ दिया, हम और हामिद और दो साहब और जिनको हम क्लब से पकड़ लाये थे, टहलते-टहलते पोलो के मैदान के उस पेड़ के पास पहुँचे। लापरवाही के साथ हम पेड़ के नीचे आये, ऊपर जब दृष्टि उठाकर देखते हैं तब बैरिस्टर साहब लटके हुये हैं। आश्चर्य से हमने बनावट के साथ चिल्लाकर बैरिस्टर साहब को पुकारा और साथी भी दौड़ कर आये। हमने और हामिद ने बैरिस्टर साहब से कहा कि क्यों जनाब, आप तो शहर में किसी साहब से मिलने जाने वाले थे। आखिर उसके खिलाफ यह क्या, कि पेड़ पर लटके हुये हैं। खुदा के लिये जल्द इस पहेली को हल कर दीजिये। बैरिस्टर साहब शर्म की मुसुकुराहट से काम ले रहे थे। कहने लगे कि भई! असल में बात यह है कि मैं आजकल तारों के परिवर्तन और उनकी गति पर विचार कर रहा हूँ। अतः एक विशेष तारे, शनि, का उदय होना देखने के लिये चढ़ा था। हम लोगों ने एक ज़ोर की हँसी हँसी और अलग-अलग रायें कायम की। बैरिस्टर साहब न

जाने किस कठिनाई से चढ़े होंगे। क्योंकि जूता पहने हुये थे। हम लोगों ने मदद देकर उतारा। अब गंभीरता और शान्ति से जब उनसे कारण पूछा, तब फिर वही कहने लगे, कि शनि का उदय होना देख रहा था। चाँदनी ने बैरिस्टर साहब को ऐसा शनि का तारा दिखाया, कि उनकी लोगों ने बोलती ही बन्द कर दी। यार-दोस्त, मिलने वाले, जिनको असली कारण का ज्ञान न था, सब यही कहते थे कि न जाने क्या मामिला होगा? क्लब में और कचहरी में, मतलब यह कि किसी भी जगह अगर कोई किसी से बहाना करे तो आपस में यह मुहाविरा चालू होगया, कि कहीं शनि देखने तो नहीं जा रहे हो। यहाँ तक कि बैरिस्टर साहब की नाकों में दम आ गया।

इसी प्रकार हमारी चाँदनी ने बैरिस्टर साहब को कई जगह दौड़ाया। एक बार लिख दिया कि पुराने क़िले के दरवाजे के सामने ठीक साढ़े पाँच बजे मोटर पर मिलिएगा, मैं टहलने आऊँगी। किन्तु मेहरबानी करके अकेले होइयेगा।" हम लोग चहल क़दमी के लिये निकल गये और ठीक सवा पाँच बजे वहाँ पहुँचे, बैरिस्टर साहब मौजूद थे। हम हामिद और एक साहब और थे, झट दौड़कर मोटर में बैठ गये और कहने लगे, भई खूब मिले। बैरिस्टर साहब ने घड़ी की ओर देखा, और कहा, भई तुम लोगों का क्या मंशा है?" हमने कहा, यही कि हवाखोरी करें और घर वापस चलें। बैरिस्टर साहब कहा कि मैं इतना कर सकता हूँ कि तुम लोगों को सीधा

तुम्हारे घर पहुँचा दूँ, और बस। क्योंकि मुझको किसी दूसरी जगह जाना है। हमने कहा—नहीं साहब, माफ कीजिए, हम लोग उतरे जाते हैं। यह कह कर हम लोग उतरकर एक पुल पर बैठ गये। अब बैरिस्टर साहब बड़े चकराये कि हम लोग यहाँ से टलते हीं न थे। वे यह चाहते थे, कि हम लोगों को मोटर पर लाद कर कहीं फेंक कर फिर लौट आयें। दूसरी बार आये, और हमें इस बात पर राज़ी करने लगे, कि चलो घर पहुँचा दें। किन्तु हम भला क्यों मानने वाले थे, वहीं बैठे बैठे छः बजा दिये। बैरिस्टर साहब लाचार होकर चले गये। हम किस प्रकार बतायें कि बैरिस्टर साहब ने इस आकस्मिक भेंट की पत्र द्वारा चाँदनी से किस तरह चर्चा की।

मतलब यह कि चाँदनी ने बैरिस्टर साहब से बहुत बहुत कवायद कराई। कभी रात को स्टेशन पर दौड़ाया, तो कभी मीलों पैदल चलाया। कभी शिकार के लिये तैयार किया, तो कभी ऐसी गड़बड़ी कर दी कि स्वयं न जा सकी, और बैरिस्टर साहब ने नाश्ते का प्रबन्ध किया जिसे यार दोस्तों ने उड़ाया।

× × ×

बहुत जल्द इस झूठे पत्र-व्यवहार से मन भर गया, और हमारी समझ में ही न आता था, कि आखिर बेकार इस प्रकार बैरिस्टर साहब को दौड़ाने से क्या फायदा? कोई विशेष मनोरञ्जन न होता था। किन्तु चाँदनी का इन मामिलों में हम सभी लोगों से अधिक दिमाग़ काम करता था। हामिद के एक दोस्त सब इन्सपेक्टर पुलिस थे, जो सिविल लाइन के थाने में दूसरे

दर्जे के अफसर थे। इनसे हमसे केवल मामूली जान-पहचान थी। मेरी बीवी ने हामिद साहब से कह कर इनसे मिलने की इच्छा प्रगट की, और इनको एक दिन चाय पीने के लिये बुलाया। इनको इस भेद की बात को बता कर हमारी चुलबुली बीवी ने जो तजवीज सामने रक्खी, वह सब को बहुत पसन्द आई। बैरिस्टर साहब के सभी पत्र चाँदनी ने उनको दे दिये !

× × ×

इतवार का दिन था, बैरिस्टर साहब अपने बँगले में नाश्ता इत्यादि से छुट्टी पाकर बैठे हुये थे। एक इक्का आकर रुका, और उस पर से एक पुलिस सब-इन्सपेक्टर दो कानिसटेबुलों के साथ उतरा। बैरिस्टर साहब को सूचना दी गई और वे बाहर आये। सब-इन्पेक्टर साहब से बैरिस्टर साहब की बिलकुल जान पहचान न थी। बैरिस्टर साहब से सब-इन्सपेक्टर साहब ने कहा कि मैं अकेले में कुछ निवेदन करना चाहता हूँ। बैरिस्टर साहब अपने मिलने के कमरे में सब-इन्पेक्टर साहब को ले गये और कहा, 'फरमाइये, क्या हुक्म है ?" इन्सपेक्टर साहब ने ढङ्ग से अपनी जेब से पुलिस की तलाशी का वारन्ट निकाल कर सामने रक्खा, और कहा कि मैं आप के घर की तलाशी लेने आया हूँ, जिसकी इजाज़त दी जाये। बैरिस्टर साहब मामूली आदमी नहीं थे। तुनुक कर बोले, यह क्या ? सब इन्सपेक्टर साहब ने हमारा नाम लेकर कहा, कि उन्होंने आपके और अपनी बीवी के सम्बन्ध में कुछ जवाहिरातों की चोरी के

बारे में पुलिस में रिपोर्ट लिखाई है और ये पत्र दाखिल किये हैं, जिनको वे बताते हैं, कि आपके हैं, और मुझको अब मुकदमे की जाँच-पड़ताल के लिये तलाशी लेनी है। क्योंकि उनका बयान है कि आपके यहाँ उनकी बीवी के पत्र निकलेंगे।

"किन्तु ये मेरे पत्र नहीं हैं।"—बैरिस्टर साहब ने झूठ बोलते हुये कहा—यह झूठा इलज़ाम लगाना है।"

"मैं लाचार हूँ। तलाशी के बाद स्वयं मालूम हो जायगा। क्या आप अपनी कोई लिखावट पेश कर सकते हैं?" थानेदार-साहब ने कहा।

बैरिस्टर साहब, हालाँ कि क़ानून दाँ थे, किन्तु कहने लगे, "यह मेरा अपमान है। मैं हरगिज़ इस तरह अपनी लिखावट दिखाने को तैयार नहीं हूँ।"

"माफ कीजियेगा। मैं लाचार हूँ। और घर की तलाशी में जनाब की लिखावट भी मुझको कहीं न कहीं मिल जायगी, जिसे मैं स्वयं अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुये ले लूँगा।"

"मैं शायद तलाशी भी इस तरह न दे सकूँ।" बैरिस्टर-साहब ने कहा।

"माफ कीजियेगा। आप क़ानून दाँ हैं, और मुझे आशा नहीं कि आप झगड़े को अधिक तूल देंगे। आपको मालूम है कि पुलिस अफसर को उसकी अफसरी के कर्त्तव्यों को अदा करने से रोकना जुर्म है। मैं आशा करता हूँ, कि आप मुझको तलाशी लेने में मदद देंगे और अपने बयान लिखा देंगे।"

"मैं सुपरिन्टेंडेन्ट पुलिस को लिखता हूँ।" बैरिस्टर-साहब ने कहा।

"मैं इस बीच में अपने कर्त्तव्यों को पूरा करने की कोशिश करता हूँ।" यह कह कर सिपाही को पुकारा।

"आप अच्छी तरह समझ लीजिये, कि मेरी तौहीन हो रही है, और आपको जब तक पुलिस सुपरिन्टेंडेन्ट का जवाब न आ जाय, क़ानूनन रुकना पड़ेगा।" बैरिस्टर साहब ने कहा।

"मैं माफ़ी चाहता हूँ कि मैं रुक नहीं सकता और अच्छा होता कि आप इस मामिले को तूल न देते।"

इतने में मोटर की आवाज़ आई, और हामिद साहब आये। सीधे कमरे में घुसे चले आये, और इन्सपेक्टर साहब और बैरिस्टर साहब को बात-चीत करते हुये पाया। सब इन्सपेक्टर साहब ने हामिद से कहा, "यह बहुत अच्छा हुआ कि आप आ गये। मेहरबानी करके बैरिस्टर साहब को समझा दीजिये।"

"आखिर क्या मामिला है?" हामिद ने पूछा।

"आप स्वयं बैरिस्टर साहब से पूछ लीलिये। मैं अलग बैठ जाता हूँ।" यह कह कर वे बाहर आ गये, और बारामदे में बैठ गये।

हामिद ने बनावट के साथ आश्चर्य से बैरिस्टर साहब को देखा, जिनका विचित्र ही हाल था, और कुछ पूछने ही वाले थे, कि थानेदार साहब फिर कमरे में घुस आये और हामिद से कहा, कि ज़रा मेरी बात सुन लीजिये। पहले मैं आपको सारा

हाल बता दूं। बैरिस्टर साहब का बस न था कि वे सब-इन्सपेक्टर साहब को इससे रोकते। सब-इन्सपेक्टर साहब ने हामिद को दूर पर कुछ अलग ले जाकर सब हाल बताया और पत्र दिखाये। बैरिस्टर साहब यह सारी बनावटी कार्रवाई देख रहे थे। इसके बाद इन्सपेक्टर साहब फिर कमरे से बाहर चले आये।

हामिद का दिल तो चाहता था कि इस समय बैरिस्टर साहब से उनकी शिकार वाले दिन की बेवकूफी का बदला लेकर उनको झुक कर सलाम करें, किन्तु इस प्रकार खेल बिगड़ जाता। उसने बैरिस्टर साहब के चेहरे और मौक़े को देखते हुये कहा कि अब क्या करना चाहिये।

"कोई तदबीर तुम निकालो और इसको खतम करो।" कुछ देर तक चुप रहने के बाद बैरिस्टर साहब ने कहा।

हामिद इन्सपेक्टर साहब के पास आये और फिर बैरिस्टर साहब के पास जाकर कहा, कि वे कहते हैं कि मैं बिना उन पत्रों के लिये हुये किसी प्रकार नहीं जा सकता। 'हामिद ने बहुत कुछ मानवी सहानुभूति और मुरौवत का परिचय दिया था और सब इन्सपेक्टर साहब को स्वयं भी सहानुभूति थी, किन्तु वे लाचार थे। क्योंकि यह मामिला स्वयं अफसर अव्वल अर्थात् थाने के बड़े इन्सपेक्टर के हाथ में था। बैरिस्टर साहब ने दूसरी राय यह दी थी, कि भाई! नज़राना देकर उनको टाल दो। अब इन्सपेक्टर साहब भी आ गये, और हामिद ने बैरिस्टर साहब के सामने उनसे सिफारिश की और कहा कि शहर के एक बड़े

प्रतिष्ठित आदमी की इज्जत का मामिला है। आप इसमें नरमी और रिआयत से काम लीजिये और कह दीजियेगा कि तलाशी में कोई चीज़ नहीं पाई गई।

"वाह जनाब, आप मुझे फँसाना चाहते हैं। यदि ये पत्र बैरिस्टर साहब के लिखे हुये हैं तो वे पत्र यहाँ न निकले यह असंभव है और हर आदमी मेरे ऊपर शक करेगा और मैं कहीं का न रहूँगा।"

"माफ कीजियेगा। हम आपकी जो कुछ भी रुपये-पैसे से सेवा संभव हो, करने को तैयार हूँ।"

"हामिद साहब, मुझे बड़ा दुख है कि आप मुझको इस तरह अपमानित करते हैं। मेरे काबू में होता तो मैं बिना कुछ लिये दिये आपकी और बैरिस्टर साहब की खिदमत करता। किन्तु यह मामिला तो थाने के बड़े अफसर से सम्बन्ध रखता है।"

"अच्छा, यह बताइये कि वे कुछ ले-देकर मामिले को खतम कर देंगे," हामिद ने पूछा।

"मैं कह नहीं सकता। यह आप स्वयं उनसे पूछें, तो अच्छा है।"

"अच्छा आप केवल इतना बतादें, कि वे मुकद्दमों में लेते हैं।" हामिद ने पूछा।

"हाँ वे अवश्य लेते हैं, किन्तु मैं कह नहीं सकता कि इस मामिले में उनकी क्या राय है ?" सब इन्पेक्टर साहब ने कहा।

"बस तो यदि मानवी सहानुभूति आप में कुछ भी है, तो

इस मामिले को तै करा दीजिये।" हामिद ने कहा।

"मैं वादा नहीं करता। किन्तु हाँ, उनसे पूरी कोशिश करूँगा। मानें, या न मानें, इसका मैं ज़िम्मेदार नहीं। किन्तु आपको वे तमाम पत्र और लिखावट का नमूना अवश्य देना पड़ेगा।"

"हम अभी दे देंगे। किन्तु आप मदद करने का वादा करें। जो रक़म भी आप इस मामिले में तै करा देंगे, वह हम उनकी भेंट कर देंगे।"

अतः मामिला तै हो गया। बैरिस्टर साहब पत्र लाने के लिये उठे, तो इन्सपेक्टर साहब भी उनके साथ उठे और कहा, कि जनाब, कोई पत्र नष्ट न हो, मेरे सामने निकालिये। विवश होकर बैरिस्टर साहब को सभी पत्र और अपनी लिखावट का नमूना देना पड़ा।

सब इन्सपेक्टर साहब ने इन चीज़ों को कब्जे में करके संक्षेप से बैरिस्टर साहब के तहक़ीक़ाती बयान लिये; जिसमें बैरिस्टर साहब ने हर बात से इन्कार किया।

चलते समय तक सब इन्सपेक्टर साहब से पक्का वादा ही नहीं कराया गया, बल्कि उनके साथ थाने पर गए और मामिला इस तरह तय हुआ कि पाँच सौ रुपये बैरिस्टर साहब नज़र दें। हामिद लौट कर आये, और सब इन्सपेक्टर साहब की सिफारिश और कोशिशों का हाल बता कर के कहा, कि बड़ा दारोगा तो दो हज़ार से किसी तरह कम नहीं करता था।

"सचमुच सब इन्सपेक्टर साहब बड़े अच्छे आदमी मालूम होते हैं। किन्तु भई, आज उन्होंने वह काम किया कि ज़िन्दगी भर तक एहसानमन्द रहूँगा। मैं बहुत शीघ्र ही उनको एक दावत दूंगा—हामिद ने कहा।

"अवश्य देना चाहिये। सचमुच इन्होंने मेरी इज्ज़त बचा ली।" बैरिस्टर साहब ने कहा—भई हामिद माफ करना! तुमने देख लिया न कि तुम्हारे दोस्त की बीबी कैसी हैं।"

"मैं उनको अच्छी तरह जातना हूं। किन्तु सच बताना कि क्या पत्रों ही तक दोस्ती सीमित रही, या········।"

"यह मुझसे आप न कहलवाइये।" बैरिस्टर साहब ने कहा, यह तो केवल संयोग था, कि शायद मेरा कोई पत्र पकड़ लिया गया। किन्तु मैं तुमसे आज कहे देता हूँ, कि वह औरत अब उनके पास न रहेगी।"

"क्यों?"

"इसलिये कि वह अब मेरी हो चुकी।"

बैरिस्टर साहब ने बहुत जल्द पाँच सौ रुपये इन्सपेक्टर साहब की सेवा में भेज दिये।

× × ×

इस घटना को पन्द्रह-बीस दिन हो चुके थे, और बैरिस्टर साहब से हमारा बिलकुल मिलना जुलना बन्द था। हामिद के यहाँ आज बड़े ठाट-बाट का डिनर था, और मज़ा यह, कि

चाँदनी और हम दोनों बुलाये गये थे। वास्तव में यह डिनर हामिद के दोस्त सब इन्सपेक्टर साहब की आवभगत में था। हम और चाँदनी, शाम होते ही हामिद के यहाँ जा पहुँचे। वह तो ज़नानखाने में हामिद की माँ, और बहनों को दावत के इन्तजाम में हाथ बँटाने चली गई, और हम और हामिद बाहर गप्पें उड़ा रहे थे।

× × ×

बैरिस्टर साहब भी आये, और हमको देखकर अधिक आश्चर्य में पड़े। हम उनसे बड़ी अच्छी तरह मिले, और मज़ा तो तब आया जब कि चाँदनी भी आगई। कमरे में केवल हम और चाँदनी और हामिद थे। चाँदनी ने बैरिस्टर साहब से हाथ मिलाया, और उनकी तबीयत का हाल पूछा और उनसे कई दिनों से भेंट न होने की शिकायत की। बैरिस्टर साहब का विचित्र हाल था, और उनकी बुद्धि काम न करती थी, कि इलाही यह क्या माजरा है। खैर कुछ भी हो, किन्तु वे भी मुनासिब बातें करते रहे। हमारी बीबी इस समय प्रसन्नता और बातों का खज़ाना बन रही थी, और उसका सारा ध्यान बैरिस्टर साहब की ओर था। किन्तु बैरिस्टर साहब का कुछ विचित्र ही हाल था। थोड़ी ही देर में चाँदनी घर में चली गई। हम दो एक मेहमानों से बातें करते हुये बाहर चले गये। बैरिस्टर साहब ने आश्चर्य से हामिद से हमारी और चाँदनी की मौजूदगी, और फिर इस प्रकार के अच्छे बरताव का कारण पूछा। हामिद ने

कहा कि तुमको दावत के बाद स्वयं ही मालूम हो जायगा। बैरिस्टर साहब बहुत ही प्रसन्न थे और हामिद से उन्होंने इस विचित्र मामिले को सुलझाने की बहुत कोशिश की, किन्तु हामिद ने न बताया, न बताया !

५

दावत वह ठाट-बाट की थी, कि बहुत दिनों से ऐसी दावत खाने को कौन कहे, देखने को भी न मिली होगी। लगभग चालिस मेहमान थे, और मिलने जुलने वालों, यार दोस्तों, और प्रेमियों में से ऐसा कोई न था, जो मौजूद न हो। तरह-तरह के अंगरेज़ी और हिन्दुस्तानी खाने थे। और वे भी इस तरह ज्यादा कि समझ में न आता था, कि क्या खाऊँ और क्या न खाऊँ? दावत बड़े आनन्द के साथ खतम हुई। और दावत खतम हो जाने पर हामिद ने सबसे पहले चाँदनी के स्वास्थ्य के नाम पर एक एक प्याला पीने की सलाह दी। इस परक़हक़हा लगा और लोग उसकी असलियत समझने से लाचार रहे। हामिद ने कहा कि अच्छा, आप लोग इस पर इतना आश्चर्य करते हैं तो जाने दीजिये, और मेरे निवेदन पर इस दावत के लिये कृतज्ञता प्रगट कीजिये। इस पर कई साहब हँसने लगे, और हामिद को धन्यवाद देने लगे कि सचमुच हम कृतज्ञ हैं कि आपने ऐसी ठाट-बाट की दावत दी। हामिद ने फौरन कहा कि हज़रत, आप लोग मुझ ग़रीब के लिये कृतज्ञता क्यों प्रगट

करते हैं ? आप लोग वास्तव में बैरिस्टर साहब को धन्यवाद दें। लोग हँसने लगे और बैरिस्टर साहब की ओर आकर्षित हुये। दस-पाँच को पहले ही से हामिद ने सिखा रक्खा था। उन्होंने बैरिस्टर साहब को इतना धन्यवाद दिया, कि बैरिस्टर साहब भी आश्चर्य में पड़ गये। इतने में एक मुंसिफ साहब ज़ोर से चिल्ला कर बोले, कि भई आखिर यह कौन सी पहेली है, जिससे आधे लोग तो परिचित मालूम होते हैं, और पूरा आनन्द उठा रहे हैं, और बाकी बेवकूफ बने हुये हैं।

इस पर हामिद ने सबको शान्त करके असली किस्सा सुनाया। शनि सितारे को देखने के लिये बैरिस्टर साहब जब पेड़ पर चढ़े थे, तब किसी की समझ में न आता था कि क्या मामिला है। अतः हामिद ने हमारी बीबी का वह पत्र पढ़ कर सुनाया, और सुनने वालों से कहा, कि अब बताइये, कि बैरिस्टर साहब क्यों न शनि का उदय होना देखते ? बैरिस्टर साहब का विचित्र हाल था, कि काटो तो बदन में खून नहीं। इस पूरे किस्से को खतम करने के बाद सब इन्पेक्टर साहब की कोशिशों का हाल सुनाया और पांच सौ रुपये वसूल होने की चर्चा करके कहा, कि जनाब, पाँच सौ रुपये में से अस्सी रुपये ग्यारह आने दावत में खर्च हुये। चार सौ बीस रुपये पाँच आने यह हाजिर हैं, जो बैरिस्टर साहब को लौटाये जाते हैं और आप सब लोग हृदय से बैरिस्टर साहब को धन्यवाद दीजिये।"

इस पर तो वह मज़ा आया, कि शायद ऐसा कभी न आया

था। जिनको पहले ही से बता दिया गया था, उन लोगों ने बैरिस्टर साहब को धन्यवाद देते देते नाक में दम कर दिया। बैरिस्टर साहब शीघ्र ही भाग गये और किसी तरह न रुके। बड़ी देर तक इसी घटना पर आपस में बातें होती रहीं, और सभी दूसरे किस्से भी कहे गये। इस दावत में बहुत से लोगों को हमारी बीवी की ओर से विचार बदलने पड़े। खुलासा यह कि दावत बड़े ज़ोर की रही।

× × ×

अफसोस, कि बैरिस्टर साहब इस स्थान से इस तरह नाराज़ हुये, कि अपनी जमी-जमाई प्रेक्टिस को छोड़ कर इस घटना के बाद ही अपने देश चले गये और फिर डेढ़ साल तक तो हम वहाँ रहे, किन्तु तब तक तो वे आये नहीं।

आठवां परिच्छेद

दोस्त की बेवकूफी

हमारे पुराने और लँगोटिया दोस्त दो-तीन ही थे, जिनमें से एक तो हामिद थे, जिनके शहर में हम रह चुके थे, और एक कामिल थे। क़िस्मत की ख़ूबी कि अब उनका साथ हुआ। हम नहीं कह सकते कि हमें उनसे कितनी मुहब्बत थी, और जब हम उनके शहर में आये, तब उन्होंने हामिद से भी अधिक हमारी और चाँदनी की आवभगत की। हामिद की तरह ये भी रईस के लड़के थे। किन्तु उनके पिता जीवित थे। हामिद में, और इनमें यदि कोई अन्तर था, तो केवल यह कि हामिद को सैर और शिकार से प्रेम था, और वह अपनी जायदाद का स्वयं प्रबन्ध करता था, और यदि एल० एल० बी० में फेल न हो जाता तो शायद वकालत करता। किन्तु विचार अवश्य था कि फिर इम्तहान दें। लेकिन कामिल ने एन्ट्रेन्स पास कर के ही पढ़ना छोड़ दिया था, और उनको अपनी जायदाद के काम इत्यादि से कोई दिलचस्पी नहीं थी, किन्तु हमारे सम्बन्ध दोनों से एक समान थे। जिस तरह हामिद हमारे और हमारी बीवी के लिये एक आवश्यक चीज थे, उसी तरह कामिल भी थे।

जब से हम आये थे, हमें और चाँदनी दोनों को इनके बिना आनन्द ही न आता था। हम क्लब में जाया करते थे और कामिल हमारी चाँदनी को अपनी बहनों के साथ मोटर में बैठा कर हवा खिलाने ले जाते थे। कभी अपनी बहनों को बैठा कर हमारे यहाँ आते, और चाँदनी साथ ही जाती, और कभी चाँदनी को घर ले जाते और वहाँ अपनी बहनों को भी साथ में ले लेते।

२

किसी ने सच कहा है कि आदमी की परख उसके साथ व्यवहार करने से मालूम होती है। कुछ दिनों बाद मालूम हुआ, कि हामिद के स्वभाव में बुरी बातें और आवारगी है। हमें यह सुनकर दुख अवश्य हुआ, किन्तु हमने कभी उसको प्रकट न किया। वास्तव में हमें कभी कुछ ख्याल भी न हुआ। और हमने कभी चाँदनी से यह भी न पूछा कि तू कहाँ जा रही है।

कामिल के बारे में हमने जो बात सुनी थी, इसमें इस बात से तरक्की हुई कि अधिक दिन नहीं बीते थे, कि एक दिन चाँदनी ने कामिल की चर्चा केवल बातों ही बातों में कहा, कि कामिल साहब कुछ अच्छे आदमी नहीं मालूम होते। मुझे उनके साथ हवा खोरी के लिये जाना ठीक नहीं मालूम होता है।

हमने इस बात को सामने रख कर उनकी चाल चलन पर

विचार करते हुये चाँदनी का समर्थन किया, किन्तु यह अवश्य पूछा, कि तुमने उनके चाल-चलन के बारे में किससे सुना।"

"वे मुझसे आवश्यकता से अधिक मनोरञ्जन करने लगे हैं, और ज्यादा हिलने मिलने की कोशिश भी करने लगे हैं, जो मुझको पसन्द नहीं।"

हमने कहा—"तुमसे हामिद से भी अधिक मिलना-जुलना था। क्यों, वे तुमसे मनोरञ्जन नहीं करते थे ?"

"हामिद भाई सा आदमी मिलना तो दुनिया में मुश्किल है। सब कुछ था, किन्तु वे अकेले में मेरी ओर आँख उठाकर देखना पाप समझते थे। उनके मिलने जुलने और कामिल साहब के मिलने जुलने में अधिक अन्तर है। "हमने पूछा कि आखिर वह क्या अन्तर है ?"

चाँदनी ने कहा "मेरी समझ में नहीं आता। किन्तु ऐसा अन्तर है, कि मेरी तबीयत उनकी ओर से उदास रहती है।"

हमने कहा कि तुमको इस बात का अनुभव आज हुआ होगा। किन्तु मुझको कदाचित कुछ पहले ही से सन्देह है कि वे मेरे कारण तुमसे नहीं मिलते, बल्कि सच बात तो यह है कि तुम्हारे कारण मुझसे मिलते हैं। मैं स्वयं इस विचार में हूं कि तुम्हारा उनसे मिलना-जुलना कम हो जाय तो अच्छा है।"

चाँदनी के सन्देह की पुष्टि हुई, और वह आश्चर्य में पड़कर बोली, "खुदा की कसम मैं उनको कभी ऐसा न समझती थी।"

"वे वास्तव में बदतमीज़ और आवारा हैं, और तुम्हारा उनसे मिलना जुलना किसी तरह ठीक नहीं।"

यह सुनकर चाँदनी क्रोध से नाच उठी और कहने लगी, —"माफ कीजिये। उनकी आवारगी शहर की गन्दी गलियों ही तक सीमित रह सकती है। मेरा वे क्या बिगाड़ सकते हैं ?"

"तू सच कहती है।" हमने दिल में प्रसन्न होकर कहा— "किन्तु बुरे आदमी से दूर ही रहना चाहिये।"

"वे दिन भूल गये। जब कहते थे, कि बुरी संगति में उठने बैठने से तुम्हें नुकसान न पहुँचेगा।" चाँदनी ने पुरानी बातों को याद दिलाया। हमने कहा, "तो तुम जानो हम तुमको रोकते थोड़े ही हैं।"

"तुम मना कर दो, तो मैं हरगिज़ उनसे न मिलूँ।" उसकी आँखें चमकने लगीं और उसने हाथ उठा कर कहा–"ठीक कर दूंगी।"

"इससे क्या मतलब ?" हमने पूछा।

"यदि वे सचमुच कुछ भी आवारा हैं तो तुम मुझसे पहले ही की तरह मिलने दो। यदि कभी ज़रा भी ग़लत रास्ते पर पैर रखेंगे, तो वह मुँहकी खायेंगे कि ज़िन्दगी भर न भूलेंगे।"

हम चुप हो गये। हम जानते थे कि यह खैरख्वाही बिलकुल थोड़े सिद्धान्तों पर कायम है। किन्तु हम चाँदनी की मुहब्बत और सच्चाई का श्रेष्ठ मूल्य इसी प्रकार चुकाना अच्छा समझते थे कि साधारण सिद्धान्तों से अलग रहते हुये बिलकुल

निराश न हों। खुदा जाने, इङ्गलिस्तान के विख्यात कवि 'मिल्टन' ने अपने सुप्रसिद्ध नाटक 'कोमिस' में किस किस जगह की भाषाओं का प्रयोग किया है, कि उसको पढ़ने से हमारी तो जान तक सदा के लिये पवित्र बन गई। इसका कारण कदाचित यह है कि इस सुन्दर कवि का सा चाल चलन कदाचित ही किसी को मिला हो। उसकी नेक चलनी की दमक उसकी कविता के शब्द शब्द से प्रकट है। हमारे कानों में इस समय वे शब्द गूँज रहे थे, जो उस नाटक में एक भाई ने दूसरे भाई से बहन के खो जाने पर कहे थे।" हमारी बहन हर प्रकार की मुसीबतों से सुरक्षित है। क्योंकि संपूर्ण अन्धकार की अपवित्रता उसकी आबरू और परहेज़गारी के प्रकाश के सामने कोई चीज़ नहीं। उसके पास परहेजगारी की ढाल है, जो वह चीज़ है कि यदि उसकी आबरू की निगाह शैतान के ऊपर पड़ जाये, तो वह फरिश्ता बन जाय, और यदि गुस्से के साथ वही पत्थर पर पड़े तो वह फट जाये, और यदि फौलाद पर पड़े, तो मोम होजाये, इत्यादि, इत्यादि।" दुर्भाग्य या सौभाग्य से, यही हमारा मज़हब था और इस समय भी है। हम जानते थे, कि चाँदनी और हम वास्तव में एक जान और दो शरीर हैं। हमारी बुद्धि में हीं यह बात आनी ग़ैरमुमकिन थी, कि फिर भी हमें दुनियादारी बरतनी चाहिये और उन सिद्धान्तों से परहेज़ करना चाहिये, जो प्रत्येक अवस्था में उचित हैं। हमारा ईमान सदा से यही है, कि हम दोनों के ईमान नष्ट होने से पहले स्वयं हमें उसका

आभास मिल जायगा, वास्तव में यही विचार था, जिससे हमारे विश्वास में मज़बूती पैदा न थी।

२

जिसका हमें सन्देह था वही सामने आया। हम पहले ही यह समझे हुये थे कि कामिल कोई न कोई बेवकूफी अवश्य करेंगे। उन्होंने हँसी ही हँसी में एक दिन अकेले में चाँदनी को गोद में लेकर मोटर पर बैठा दिया और जब देखा कि चाँदनी ने धैर्य से काम लिया, तब रास्ते में बेहूदी बातें भी कीं। वास्तव में वे इस योग्य ही न थे कि उनसे किसी दोस्त की बीवी मिले। वास्तव में हमें इस मामिले को यहीं रोक देना चाहिये था। किन्तु हमने भूल की। और प्रचलित सिद्धान्त से अलग हटकर दूसरा रास्ता पकड़ा। इसका कारण हम बता ही चुके हैं। किन्तु एक कारण सामने आया। क्योंकि अब चाँदनी दाँत पीस रही थी, कि मजा चखा दूँगी और हम भी चाहते थे कि कुछ स्वयं उसे और कुछ मियाँ कामिल को अनुभव प्राप्त हो। हमें अब मालूम होता है कि हम खतरनाक जुआ खेल रहे थे।

"कल दोपहर को जब तुम कचहरी में रहोगे, तब उन्होंने आने को कहा है।" सिर हिलाकर वह बोली। और फिर मुसुकराने लगी। फिर देखता क्या हूँ कि उसकी आँखों ने शरारत प्रगट की और वह कुछ सोच चुकी थी।

"तू क्या करेगी, हमें बता तो सही।" हमने पूछा।

"देखा जायगा। किन्तु तुम यहाँ कचहरी से डेढ़ बजे

अवश्य पहुँच जाना। आधे दिन की छुट्टी ही सही। स्वयं ही उन्होंने आने को कहा है। मैंने कोई जवाब नहीं दिया। किन्तु इतना जानती हूँ कि वे ज़रूर आयेंगे।"

× × × ×

हमारे दोस्त कामिल ठीक एक बजे हमारे मकान पर पहुँचे। वे आकर मिलने के कमरे में बैठे। हमारी चुलबुली बीवी जान-बूझकर बीस मिनट आने ही में लगा दिये। वह सिर में एक रूमाल इस तरह बाँध कर आई कि जैसे सिर दर्द है, और मुँह भी वैसा ही बना लिया। कामिल ने सलाम-बन्दगी के बाद उठकर हाथ मिलाया और तबीयत का हाल पूछा। मालूम हुआ कि सिर में दर्द है तो कहने लगे कि लाइये मैं सिर दबा दूँ।" कहा ही नहीं बल्कि उठ कर सिर दबाने की अधिक उत्सुकता प्रकट की। चाँदनी की जान सुलग उठी और यह हरकत उसको बहुत बुरी मालुम हुई। किन्तु उसने प्रकट न होने दिया और धन्यवाद देकर के कहा कि आप तकलीफ न करें। अन्त में कामिल साहब ने वह काम कर डाला जिसके लिये वे आये थे। बातों ही बातों में चाँदनी का हाथ अपने हाथ में लेकर बोले; क्या कहूं बिना आपके साथ के मेरा जी ही नहीं लगता। चाँदनी ने अपना हाथ तो खुजाने के बहाने से छुड़ा लिया और फिर बहुत ही सरलता के साथ कहा, मिलने जुलने से आपस में लगाव हो ही जाता है! मुझको स्वयं आप की प्रशंसित अच्छी आदतें बड़ी प्रिय लगती हैं।

इतना कहना था कि हामिद साहब ने अधिक स्पष्ट होकर कहा,—"मुझे आपसे बहुत ज्यादा प्रेम है।"

चाँदनी, चूँकि इन खुराफातों की प्रतीक्षा कर रही थी, अतः उसको इस पर कुछ आश्चर्य न हुआ। उसने बहुत ही साधारण ढङ्ग से कहा—"बहुत ही कम दिल हैं, जिनमें इस तरह के भाव होंगे। सचमुच वह दिल ही क्या है, जिसमें खुदा की मुहब्बत न हो बाप की मुहब्बत न हो या बहनों की मुहब्बत न हो और या दोस्त की मुहब्बत न हो। वास्तव में मुहब्बत और प्रेम में पद के मुताबिक सभी का हिस्सा है।"

कामिल बेवकूफी के मैदान में इस तरह और आगे बढ़े—"आप भूलती हैं। इस दिल में आपकी मुहब्बत के अलावा और किसी की मुहब्बत नहीं है।

न जाने क्या गलतफ़हमी हुई कि नौकर की आवाज को सुनकर, "मैं अभी हाजिर हुई" कह कर बाहर आई, और बहुत ही बनावट के साथ घबड़ाकर कमरे में गई और रहस्य भरे स्वर में कामिल से कहा, "वे आ गये। जल्दी कीजिये। गुसुलखाने में।" उसने यह पार्ट इस तरह घबड़ाहट और जल्दी के साथ किया, कि जैसे ही उसने कामिल का हाथ पकड़ कर गुसुलखाने का दरवाजा बताया, वे बिना कुछ सोचे-समझे उसमें घुस गये और उसने दरवाजा बाहर से बन्द कर दिया।

वास्तव में देखा जाये तो कामिल को छिपने की आवश्यकता

न थी और न उसका ऐसा विचार ही रहा होगा। लेकिन चूँकि दिल में चोर था, अतः उसी बौखलाहट में बन्द हो गये।

हम कमरे में आये। मोटर बाहर देख ही चुके थे। अपनी चुलबुली बीवी को मुसकराती हुई पाया। हमने कोट उतार कर पूछा कि हमारे दोस्त कहाँ हैं?

चाँदनी ने मुसुकुरा कर कहा, "टापे में।" और गुसलखाने की ओर इशारा किया। और हमारा हाथ पकड़ कर अपने साथ लिया। हम दोनों दबे पाँव मिलने वाले कमरे से होकर गुसुल-खाने के पास पहुँचे। चाँदनी ने धीरे से गुसलखाने के दरवाज़े पर उँगुली मारी और दबी आवाज से कामिल को पुकारा। उन्होंने जवाब दिया, तो उनसे कहा कि 'मैंने कह दिया है कि आप की माता जी ने शोफर को मोटर लेकर मुझे लेने भेजा है। किन्तु मोटर बिगड़ जाने के कारण वह चला गया और अभी तक लौटकर नहीं आया।' कामिल ने इस बहाने को पसन्द किया। फिर हमारे समय से पहले चले आने का कारण पूछा। जिसका जवाब चाँदनी ने दिया, कि "मेरे सिर दर्द के कारण चले आये।" इसके बाद उन्होंने कुछ बेवकूफी से भरी बातें बकनी शुरू कीं तो वह गुसुलखाने में कष्ट पाने के लिये माफी माँगने लगी, जिसका जवाब उन्होंने यह दिया कि "हमको इसी में आराम है।" हम दोनों हँसते हुये आये, अब हम यह सोच रहे थे कि इनको भला कब तक बन्द कर के रक्खा जायगा?

३

चांदनी ने व्योरेवार कामिल की बेवकूफियों की चर्चा की। तीसरे पहर तक बातें होती रहीं। चाय तैयार हुई तो चाँदनी ने चाय की एक प्याली कामिल साहब को गुसुलखाने में पहुँचाई। उन्होंने धन्यवाद का जब पुल बाँध दिया, और बेवकूफी की बातें शुरू कीं, तब उसने एक कागज़ और पेन्सिल देकर कहा, कि "अपने शोफर को लिख दीजिये कि आपके दोस्त को हवा खोरी के लिये ले जाय। मैंने कह दिया है कि मैं आज कहीं न जाऊँगी।" साफ बात है कि कामिल साहब ने उससे कैसा मतलब लगाया होगा।

आध घन्टे बाद शोफर आगया और हम और चाँदनी कामिल को गुसुलखाने में बन्द छोड़ कर उनके मोटर में हवा खाने चल दिये। शाम को जब लौट कर आये, तब सीधे गुसुल-खाने के पास पहुँचे। कामिल को चाँदनी ने लक्ष्य करके कहा, "माफ कीजियेगा। मैं आपको इस कैदखाने में छोड़ कर जाने के लिये विवश हुई। क्योंकि मुझे विवश हो जाना पड़ा।"

कामिल ने कहा, "कुछ मुज़ायक़ा नहीं। किन्तु अब मेरा जी घबड़ा उठा है। दोपहर से बन्द हूँ। अच्छा, सच बताइयेगा कि आपको आज की हवाखोरी में अधिक आनन्द आया या मेरे साथ अधिक आनन्द आता है।"

चाँदनी ने शरारत की ग़रज से किन्तु बहुत ही ईमानदारी के साथ कहा, "खुदा जानता है।" और यह कह कर कहा कि

में दरवाज़ा खोले देती हूँ। आप धीरे से निकल जाइयेगा। आप की मोटर इस ओर खड़ी हुई है।"

"अच्छा अच्छा, मगर यह तो बताइये कि मैं कल दोपहर में आऊँ?" कामिल ने पूछा।

वह बोली—"कल शाम को आइयेगा। मैं आपको बहन से वादा कर चुकी हूँ।"

हमने कमरे से देखा कि कामिल जल्दी से गुसुलखाने में से निकले। हम कमरे ही कमरे से निकल कर पहले ही से मोटर के पास जाकर खड़े होगये। हमें देख कर वे कुछ झिझक से उठे, किन्तु फौरन बोले, "वाह, तुम इधर हो। मैं तो तुमको उधर से देख कर आ रहा हूँ।"

हमने भी चाँदनी को आवाज़ देकर बुलाया कि देखो, कामिल तुम्हारी तबीयत का हाल पूछते हैं।' नये सिरे से चाँदनी से और उनसे सलाम बन्दगी हुई और तबीयत का हाल चाल पूछा गया। कठिनाई से हमने हँसी को रोका। हम गुसल खाने में हाथ धोने के बहाने से गये, और चाय की प्याली कमरे में लाये और चाँदनी को दिखा कर कहा, आखिर यह प्याली वहाँ कैसे पहुँची?' इसका जवाब उसने यह दिया, कि यह प्याली तो वहाँ कई दिन से रक्खी हुई है। और गवाही में कामिल साहब को भी पेश किया कि ये तो प्रति दिन आते हैं और देखते ही होंगे। इन हजरत ने भी शीघ्र ही झूठी गवाही दे दी। हमने चाय की ताजी पत्तियों का चूरा और चाय की दस

बीस बूँदे दोनों को दिखा कर कहा, 'क्या खूब ? चोरों के गवाह गिरहकट ! यह तो आज की मालूम होती है।' कामिल कुछ सिटपिटा से गये और हमने देखा, कि उनका चेहरा .फक़ सा हो गया।

चाँदनी ने क़िस्से को इस तरह खतम किया कि आपको क्या ? जिसका जी चाहे गुसुलखाने में पीये, और जिसका जी चाहे मेज़ पर पीये।'

थोड़ी देर बाद कामिल चले गये। किन्तु इस याद की प्याली की चर्चा के समाप्त हो जाने से उन्हें जिस तरह इत-मीनान हुआ वह देखने के योग्य था।

× × ×

दूसरे दिन हम शाम को क्लब से आये और कपड़े इत्यादि उतार कर चाँदनी की प्रतीक्षा करने लगे जो कामिल की बहन से मिलने गई थी। हमने बहुत कुछ मना किया था कि अब तू इस तरह न जा। किन्तु वह कहती थी कि अब तुम रहने दो।

इतने में मोटर की आवाज़ सुनाई पड़ी, जो सीधी कमरे के सामने आकर रुकी। हमने देखा कि चाँदनी हमारे या कामिल के मोटर का दरवाजा खोलने का इन्तज़ार न करके स्वयं झट दरवाज़ा खोल करके तेज़ी से उतर पड़ी। कामिल ने मोटर का इंजिन चलता हुआ रखा था। उन्होंने उसको मोड़ा, और हमें ज़ोर से पुकार कर 'गुडनाइट' कहा। और मोटर यह गई, वह गई।

चाँदनी कमरे में आई और हम पूँछने ही वाले थे कि कोई नई बात तो नहीं हुई कि उसका चेहरा गुस्से से लाल देखा। आंखों में आंसू थे। हम समझ गये और हमने ध्यान से चेहरे को देखकर एक ज़ोर का क़हक़हा लगाया और कहा, कि अच्छा हुआ। तेरी शरारतों की यही सज़ा है। यह कहकर हमने छेड़ने के लिये कन्धा हिलाकर पूछा,—"क्यों दोस्त, फिर जाओगे?"

"हां जाऊँगी"—यह कह कर चांदनी ने हमारा हाथ झटक दिया—"हमें बहुत ज्यादा ग़ुस्सा आ रहा है।"

हमने फिर हँसकर कहा—हम कहते थे न कि शरारतें छोड़ दो।"—यह कहकर फिर कन्धा हिलाकर कहा,—"कुछ बताओ तो दोस्त आखिर क्या हुआ?"

दाँत पीसकर और मुट्ठी बांधकर उसने जल कर कहा, "जब तक इस कमीने से मैं बदला न लूँगी मुझे चैन न पड़ेगा। मैं हरगिज़ उससे मिलना न छोड़ूँगी।"

हमने कहा,—"बताओ दोस्त, आज कैसी कटी?"

"हट जाओ। उसने तुनुक कर कहा 'हम नहीं बताती।"

"अच्छा हम किसी से न कहेंगे। तुम हमारे कान में चुपके से कह दो।"—यह कहकर हमने अपना कान उसके मुँह के पास कर दिया।

चाँदनी का गुस्सा रफूचक्कर होगया। और उसे हँसी

आगई। किन्तु उसने कहा, "हम नहीं बताती। जब हम अपने दुश्मन से बदला ले लेंगी, तब बतायेंगी।"

"तुम्हें बताना पड़ेगा!" यह कहकर हमने बहुत कुछ खींचा, और घसीटा, किन्तु वह बराबर यही कहती रही कि हम नहीं बताती।"

हमने कहा—"दोस्त तुम बताओ या न बताओ हम तो समझ ही गये हैं।"

४

अच्छा होता, अब भी हम मामिले को यहीं रोक देते। किन्तु बीवी की मुहब्बत से हम विवश थे। वह कहती रही कि तुम देखना मैं कैसा बदला लेती हूँ।

दूसरे दिन कामिल नहीं आये। तीसरे दिन जब आये तब हम भी क्लब न गये और मोटर की सैर की। अब कुछ ऐसा संयोग होता कि जब शाम को कामिल आते तब किसी न किसी कारण से चाँदनी का और इनका मोटर में साथ न होता। कोई न कोई कारण अवश्य ही सामने आजाता। हमसे बिलकुल पहले ही की भांति मिल जुल रहे थे।

चाँदनी शान्त थी और उनसे किसी प्रकार......की शरारत न करती थी। किन्तु वह प्रतीक्षा में थी कि अब कामिल साहब फिर कुछ शरारत करें तो बदला लूँ।

हालांकि अब कामिल को चाँदनी के साथ अकेले में मिलने का बिलकुल मौका न मिलता था, किन्तु उन्होंने इतना कहने

का मौका सरलता से ढूँढ़ लिया कि क्या मैं कल दोपहर में आऊँ ?"

चाँदनी ने कुछ न कहा। उन्होंने फिर घवड़ाये हुये स्वर में कहा और जब उसने फिर जवाब न दिया तो फिर कहा। विवश होकर चाँदनी ने कहा, कि मोटर पर न आइयेगा। प्रसन्न होकर कहा, उन्होंने कहा कि मैं एक वजे आऊँगा। यह बातें करके वे शीघ्र ही चले गये। यद्यपि हमने उनको रोका, किन्तु वे न रुके।

चाँदनी ने हमसे कहा कि तुम कल डेढ़ बजे कचहरी से ज़रूर घर आ जाना। हमने कहा कि हम तेरी वेवकूफियों में कहाँ तक शामिल हुआ करें ? तू उनको गुसुलखाने में बन्द करेगी, और हमारा इस प्रकार की वेकार बातों में बिलकुल मन नहीं लगता।" किन्तु हमें विवश हो करके पक्का वादा करना पड़ा।

दूसरे दिन हम कचहरी ज़रा पहले चले गये। अब चाँदनी की ज़रा कारस्तानी सुनिये। हमारे चले जाने के बाद न जाने कहाँ से उसने एक ज़बर्दस्त गधा पकड़वा मँगाया। उसके कान में कील से एक छेद किया गया और उसमें एक लम्बा सा तार बाँध कर गधे को गुसुल खाने में ले जा कर इस तरह खड़ा किया कि वह चौकी और दीवार के बीच में फँस गया। इस तरह खड़ा करके गुसुलखाने की मोरी में से उस तार को निकाला, जो गधे के तार में बँधा था, और तार के सिरे को एक कील गाड़ कर

उसमें इस तरह मज़बूती के साथ बाँध दिया, कि यदि गधा ज़रा भी हिले-डुले तो उसको बेहद कष्ट हो।

कामिल अपने वादे के मुताबिक एक बजे हमारे मकान पर पहुँचे। वे पैदल ही आये थे। और मुख्य दरवाज़े से न आके बँगले के हाते की कच्ची दीवाल को फाँदकर इस तरह आये, कि नौकर इत्यादि कोई उनको आता हुआ न देख सके। वे सीधे मिलने वाले कमरे में घुस गये। उन्होंने कमरा खाली पाया, और वे वहाँ बैठ गये।

किसी ने सच कहा है कि 'नींद न आये तो रेशम के गद्दों पर, और आये तो फाँसी के तख्ते पर।" किसी-किसी समय ऐसे बेमौके नींद आती है, कि आश्चर्य होता है। यही हाल चाँदनी का हुआ। उसको मालूम था कि कामिल आते होंगे, और उनकी प्रतीक्षा और उनकी कारस्तानीं के विचार में डूबी हुई भीतर वाले सोने के कमरे के पास वाले सोफे पर तकिया लगा कर लेट गई। लेटे ही लेटे उसको नींद आ गई, और वह सो गई।

सहसा कुछ आहट से उसकी जब आँख खुली, तब उसने अपने मुँह के पास कामिल का मुँह पाया। वे उस पर झुके हुये थे, लाचारी की दशा में उसके मुँह से एक चीख निकल पड़ी, और वह तड़प कर उठी। कामिल कुछ घबड़ा गये। चाँदनी ने बड़ी कठिनाई से अपने को सँभालते हुये कहा, "चलिये मिलने वाले कमरे में चलिये। मैं अभी आती हूँ।"

"किन्तु सुनिये तो"—यह कहकर चाँदनी की ओर बढ़े।

चाँदनी ने बड़े पौरुप और साहस से काम लिया। वह इस तरह घबड़ा गई थी, कि सभी शरारतें भूल गईं, और हाथ-पैर फूल उठे थे। अकेले कमरे में जहाँ कभी कोई घर का नौकर तक भी कभी न जा सकता हो, वह एक आवारा और बदचलन आदमी के साथ थी, जिसको उसने अपनी शरारत का शिकार बनाने के लिये आने की स्वयं इजाज़त दी थी। उसने कहा, 'मैं मुँह धोकर अभी हाजिर हुई।" यह कह कर वह तेज़ी से पर्दा उठा कर निकल गई। उसका कलेजा 'धक-धक' हो रहा था, कि कामिल रुक गये, और उसके पीछे न गये।

चाँदनी ने मुँह धोया। वह तौलिया से हाथ पोंछ रही थी; किन्तु उसका शरीर काँप रहा था। और अब तक दिल काबू में न आया था, और वह हद से ज्यादा परेशान थी।

उसने एक गिलास ठण्डा पानी पिया, जिससे उसका उछलता हुआ दिल रुका। वह मन में अपनी कमज़ोरी पर हँसी, और उसने कहा, कि वह नालायक मेरा क्या बिगाड़ सकता है? वह अब बिलकुल ठीक थी, और बिना किसी डर या परेशानी के मिलने वाले कमरे में पहुँची। उसने कमरे के चारों ओर देखा, सभी दरवाज़े खुले हुये न हो कर बन्द थे। क्योंकि कामिल ने सभी दरवाज़े मज़बूती के साथ बन्द कर दिये थे। यह देख कर उसका पौरुष और साहस फिर छूटता हुआ मालूम हुआ। न जाने वह क्यों इस तरह घबड़ा रही थी। उसने घड़ी की ओर देखा

तो डेढ़ बजने में आठ मिनट बाकी थे। उसको अब इस कमरे में कामिल के साथ डर लग रहा था। वह कुछ ठिठकी कि कामिल ने मुसकुरा कर कहा—

'आइये।' ये शब्द इस समय उसके कानों में हथौड़े की चोट की तरह लगे; जिसकी धमक उसके दिल तक पहुँची और साथ ही उसे कमजोरी भी मालूम हुई। किन्तु उसने अपने दिल को फिर मज़बूत बनाया, और एक कुर्सी घसीट कर अलग बैठ गई। कामिल ने सन्नाटे को भंग किया और बातें करते-करते वे धीरे धीरे खिसक खिसक कर उसकी कुर्सी की ओर बढ़ने लगे। इस समय चाँदनी की विचित्र हालत थी। वह उस जानवर की तरह थी, जो शेर को देख कर ऐसा अधीर हो उठता है कि खाने को भी छोड़ देता है और यह देखता हुआ भी कि शेर आ रहा है, अपनी जगह से हिल-डुल नहीं सकता। वह चुपचाप थी और उससे कुछ जवाब ही न बन पड़ता था। दिल बुरी तरह धड़क रहा था और ओठ बिलकुल सूखे हुये थे। जब कामिल बिलकुल क़रीब आ गये, तब न जाने किस कोशिश के साथ उसने कहा;—"पानी देने की मेहरबानी कीजियेगा।" और सुराही की ओर हाथ उठा दिया। कमिल ने पानी दिया। पानी पीकर कामिल को गिलास लौटा दिया। कामिल ने देखा, कि चाँदनी के हाथ काँप रहे हैं; जिसका कदाचित उन्होंने ग़लत अर्थ लगाया, और गिलास को मेज़ पर रख कर कुर्सी के सामने आकर खड़े हुये। चाँदनी मूर्ति

की तरह चुप थी और उन्होंने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। चाँदनी की उस समय जो हालत हुई होगी उसका अनुमान करना कठिन नहीं। हाथ वर्फ की तरह ठंडे थे। कामिल ने और आगे पग बढ़ाया और अब वे कुर्सी के सामने घुटनों के बल इस तरह खड़े होगये, कि उठने का रास्ता बन्द हो गया। उसने सोचा कि चिल्लाकर भाग जाऊँ। किन्तु वहां तो अब ताक़त ही गिरफ्तार थी। कामिल के कामों की प्रगति अब इस प्रकार धीमी होगई थी कि सहसा कोई बात सामने ही न आ रही थी जो बिजली की तरह गिरकर इस खामोशी को तोड़ती, और तबीयत को आवेग में लाकर शक्ति पैदा करती, जो कि लगभग नष्ट हो चुकी थी। ऐसे मौक़े पर यदि किसी चीज़ के गिरने का धमाका भी होता है, तो तबीयत में धड़कन पैदा हो जाती है और आदमी ऐसी खामोशी से कि मानो उस पर किसी ने जादू कर दिया है, छुट्टी पा जाता है।

इधर तो यह मामिला उपस्थित था और उधर हम पन्द्रह मिनट से अधिक एक बेकार आदमी से गप्पों में बरबाद कर चुके थे। हमारे पहुँचने का समय बीत चुका था। वास्तव में इसी कारण से चाँदनी की रही-सही हिम्मत का भी खातमा हो गया था।

कामिल ने अब और साहस किया और चाँदनी का दूसरा हाथ भी अपने हाथ में ले लिया। वे धीरे धीरे दबी जबान से कांपते हुये स्वर में बेहूदी बातें बक रहे थे। उनको कदाचित्

नहीं मालूम था कि उनकी बेहूदी बातें उसके कानों में निरर्थक शब्दों की तरह पड़ रही थीं। क्योंकि वास्तव में बड़ां आंखों की शक्ति को छोड़कर सभी शक्तियाँ नष्ट हो चुकी थीं। उसे ऐसा मालूम हो रहा था, जैसे कि कोई बहुत बड़ा स्वप्न देख रही हो। कामिल ने दोनों हाथ धीरे धीरे अपनी ओर किये और उनको अपने ओठों और आंखों से लगाया। चाँदनी के चेहरे पर इस समय बेहोशी के चिन्ह थे, और उसको यह मालूम हो रहा था कि कामिल उससे बहुत दूर बैठा हुआ यह सब कुछ कर रहा है। उस पर बेहोशी की अवस्था दिखाई दे रही थी। इसके बाद कामिल ने चाहा कि इस मंजिल में एक क़दम और बढ़ायें। चाँदनी का हाथ धीरे से छोड़ दिया, जो निर्जीव हाथ की तरह गिर गया। अपना दाहिना हाथ धीरे से चाँदनी के कन्धे पर रक्खा ही था कि हमने बराबर वाले कमरे में पहुँच कर आवाज़ दी, "गुल चाँदनी।"

हमारी आवाज़ क्या थी कि दोनों पर बिजली गिरी। चाँदनी के हृदय में उसने एक नये जीवन का सा काम किया। उसकी लाचारी की अवस्था जाती रही। उसने अपने को असलियत के इस तरह नज़दीक पाया कि जोर से हाथ झटक दिया, और उठकर खड़ी होगई। आश्चर्य है कि वह चिल्लाई नहीं। उसने धीमी किन्तु कांपती हुई आवाज़ में कामिल से कहा'—"गुसुलखाने में, गुसुलखाने में।" यह कहकर उसने कामिल का हाथ पकड़कर खींचा, कामिल के स्वयं होश उड़

चुके थे। लपक कर उसने दरवाज़ा खोल दिया। कामिल तीर की तरह गुसुलखाने में घुस गये और चाँदनी ने झट जंजीर चढ़ा दी।

हम इस खड़बड़ को सुनकर धीरे से मैदान साफ पाकर मिलने वाले कमरे में पहुँचे। चाँदनी कामिल को गुसुलखाने में बन्द करके लौट रही थी। हमने देखा कि चेहरा कागज़ की तरह सफेद और उजड़ा हुआ है और सूरत परीशानी की तस्वीर बनी है। देखते ही हमारी ओर तीर की तरह आई, और लिपट गई। शरीर कांप रहा था। ज़ोर से उसने हमें दबाया, कि हाथ ढीले पड़ गये। गरदन लटक गई। हमने जब अलग किया, तब शरीर में ताक़त ही न थी। आँखें बन्द थीं और साँस बड़ी तेज़ी से चल रही थी। हालाँकि, जाड़े का मौसम था किन्तु सारा चेहरा पसीने से तर था। हमने उससे इस बेहोशी की हालत में सोफे पर लिटाया। नाड़ी देखी तो बहुत धीरे धीरे चल रही थी। हमने जल्दी से पूरा हाल संक्षेप में एक कागज़ पर लिख कर नौकर को डाक्टर साहब के पास दौड़ाया।

साधारण बेहोशी थी, डाक्टर साहब की एक ही खूराक़ के बाद चाँदनी बिलकुल अच्छी हो गई। डाक्टर साहब चले गये थे, और थोड़ी ही देर में बातें करते करते उसका चेहरा शरारत और अपनी सफलता पर चमकने लगा। वह लेटे लेटे धीरे धीरे हँस हँस कर जो कुछ हुआ था, अब सुना रही थी। हमें अपनी बेवकूफी का अनुभव हुआ और उसको अपनी

शरारतों को सोचकर कँप कँपी सी आ गई। क़िस्मत थी कि आज वह न जाने किस मुसीबत से बच गई। लोगों को चाहिये कि वे इस घटना से नसीहत लें और माडरेट ढङ्ग से काम लें।

घन्टे भर के बाद चाँदनी की तेज़ी और फुरती, शरारत के साथ सब उसी प्रकार लौट आई। वह सीधे हमें गुसलखाने के पास ले गई। उसने दरवाजे पर उँगुली मारी, और भीतर से कामिल साहब बोले "कहिये, खैरियत तो है।"

"खुदा को धन्यवाद है, सब खैरियत से बीता।"–चाँदनी ने हँस कर कहा—"माफ कीजियेगा। मुझको बड़ी देर लगी।"

"यहाँ एक गधा है।" कामिल ने हँसकर कहा।

"खुदा के लिये इतनी आजिज़ी से काम न लीजिये।" चाँदनी ने शरारत की गरज़ से हँसते हुये कहा। हम स्वयं इस वाक्य पर कठिनाई के साथ अपनी हँसी को रोक सके।

कामिल बोले, "आप मज़ाक कर रही हैं, और यहाँ सच-मुच एक गधा भी खड़ा है।

"क्या आप सचमुच सच कह रहे हैं? चाँदनी ने बनकर कहा–खैर माफ कीजियेगा। घुस गया होगा। किन्तु उसको अभी तो रहने दीजिये।"

"बेचारा बहुत सीधा है, और दीवार से सटा हुआ एक ओर खड़ा है।"

"अभी हाजिर हुई।" यह कहकर चाँदनी और हम चले

आये। हमने कहा-यह गधा कहाँ से आया? तब उसने यह बताया कि खास तौर पर उसे मंगाया है।

शाम तक इसी तरह कामिल बन्द रहे, और किसी ने खबर तक न ली। मगरिब के बाद चांदनी ने गुसुलखाने के पास जाकर कहा-माफ कीजिएगा। आज मुझको मौका ही नहीं मिला। क्योंकि वे क्लब भी नहीं गये।"

"किन्तु अब तो किसी न किसी तरह खोल दीजिए।" कामिल ने घबड़ा कर कहा, क्योंकि घन्टों से गिरफ्तारी के मजे लूट रहे थे। इसका जवाब जब चाँदनी ने दिया, तब कामिल सुनकर प्रसन्न ही तो हो गये। उसने कहा यदि आप आज रात में घर न जायँ, तो क्या कुछ नुकसान है? अधिक से अधिक रात के दस बजे तक आपको यहाँ तकलीफ उठानी पड़ेगी। फिर मैं खोल दूँगी, और आप चुपके से बराबर वाले कमरे में आलमारी से पीछे पर्दे की आड़ में छिप जाइयेगा।

काँपती हुई आवाज में कामिल ने कहा, बहुत अच्छा, आप जाइये। मैं समझ गया।"

जाड़े का दिन था। रात का खाना खाने के बाद चाँदनी ने बहुत ज्यादा चाय बनाई। हमने उससे कहा कि तूने हमारे दोस्त को न तो चाय दी और न रात के खाने ही की चिन्ता की। इसका जवाब उसने मुसकुराते हुये यह दिया, कि यह चाय वास्तव में उन्हीं के लिये बन रही है। मिठाई, टोस्ट, मक्खन, अण्डे, कुछ मेवे, और चाय, यह सब चीजें उसने

एक बरतन में सजाई । चायदान भर कर चाय, और दूधदान भी मलाईदार दूध से भरा हुआ था। ये सभी चीजें उसने गुसुलखाने में भेजवा दीं। कामिल भूखे तो थे ही, सब साफ कर गये। इसके बाद फिर किसी ने कामिल साहब की खबर न ली। क्योंकि हमने जब कहा कि उनको सरदी लग रही होगी, तब उसने कहा कि अपने मेहमान के आराम का मुझे तुमसे अधिक ख्याल है। इसका इन्तज़ाम पहले ही हो चुका था।

६

रात के ढाई बजे घड़ी के अलार्म ने हमें जगा दिया। चाँदनी से हमने पूछा—"घड़ी में यह अलार्म तुमने लगाया था?"

"हां।"

"यह क्यों? बेकार नींद खराब हुई।"

वह मुसकुराती हुई उठकर खड़ी हुई। और बोली "असली तमाशा तो ढ़ाई बजे ही शुरू होने वाला था। चलो।" यह कह कर उसने अपना कोट पहना और शाल ओढ़ी, चलो उठो। देख क्या रहे हो?' उसने हमारा हाथ पकड़ कर घसीटा।

"तुम पागल हो। हम बेकार परीशान न होंगे। हम सोते हैं"—हमने कहा।

किन्तु उसने लिहाफ इत्यादि खींच लिया, और हमें खींच कर खड़ा कर दिया कि "तुम चलो तो, देखो क्या होता है?' बाहर निकल कर एक नौकर को जगाया और गुसुलखाने की मोरी के पास उसे बैठाकर कहा कि धीरे धीरे इस तार को खींचो, जो गधे के कान में बँधा हुआ था।

हम तो यही समझते थे कि कामिल साहब को केवल गधे का रात का साथी बना कर छोड़ दिया जायगा, किन्तु यहाँ हमने यह क़िस्सा देखा—

नौकर ने तार को ढील-ढीलकर जब खींचा तब बस, फिर ग़ज़ब ही होगया। गधे के ताज़े चोट में जब दर्द हुआ, तब पहले तो उसने भीतर उछल-कूद की और फिर ज़ोर से चिल्लाया। तार बराबर रह-रहकर ढील-ढीलकर खींचा जा रहा था, और जब गधे को अधिक तकलीफ हुई, तार अधिक ढीला भी हो गया, तब उसने गुसुलखाने में पैतरे बदलने शुरू किये, और लातें चलाकर बुरी तरह से चिल्लाना शुरू किया। खुलासा यह कि गुसुलखाने में वह धमा चौकड़ी मची कि सभी चीज़ों के गिरने और उलट-पुलट होने की आवाज़ सुनाई दे रही थी, और मालूम हो रहा था कि अँधेरे में गुसुलखाने में कामिल साहब और गधे में खूब छन रही थी। नौकर को सचेत करके कह दिया कि यह कार्रवाई सबेरे तक होती रहे। यह कहकर हम दोनों कमरे में लौट आये। हमारी तबीयत इस समय न जाने क्यों इन सभी मामिलों पर विचार करके उदास और दुखी हो गई, और हमें यह हरकत बहुत ही बुरी मालूम हुई। क्योंकि कुछ भी सही किन्तु एक औरत के लिये यह हरकत आवश्यकता से भी अधिक बुरी थी और हम चुप थे।

चाँदनी ने हमारी हालत का अनुभव कर लिया, और वह लड़ने के लिये तैयार होगई। उसने जल कह करा, "क्या

उन्होंने कमीनी हरक़त नहीं की ? क्या उन्होंने हमें और तुम्हें अपमानित करने की बेहद कोशिश नहीं की ? क्या उन्होंने मेरे जीवन को समाप्त कर देने की कोशिश नहीं की ? क्या उन्होंने पुरानी दोस्ती, और पुराने सम्बन्ध को स्वयं पहले ठोकर नहीं लगाई ? मेरे दिल में उनके लिये तनिक भी दया नहीं है। मेरा बस चले तो मैं ऐसे लोगों को जीता हुआ ज़मीन के अन्दर गड़वा दूँ।

× × ×

गधे के शोर और हंगामे ने सोने न दिया। वह रह रहकर ऐसी दोहाई देता था कि खुदा की पनाह। सवेरा हुआ और चाँदनी ने कहा, कि "अब तुम मानों गधे की आवाज़ सुनकर उठे हो, और नौकर को साथ में लेकर यदि सच्ची बात का का पता न लगाओ, तो बेजा है। यह तो केवल संयोग की बात है कि रात को उन्हें खोलने का मौक़ा न मिला।" हमने जाने से इन्कार किया, तो फिर उसने वही जली कटी बातें सुनानी आरंम्भ की कि जो आदमी ऐसी कमीनी हरक़तें करें, उसे ऐसी ही परीशानी मिलनी चाहिये। खुलासा यह कि उसने हमें लाचार कर दिया। हम एक नौकर के साथ लालटेन लेकर पहुँचे। क्या बतायें कि हमारी हिम्मत न पड़ती थी कि चाँदनी आई, और उसने फिर क्रोध भरी आंखों से देखा और स्वयं दरवाज़े की जंजीर खोल कर तेज़ी से लौट आई। हमने कुछ पेशो-पेश के बाद दरवाजा खोल कर लालटेन के प्रकाश से भीतर

देखा। जो दृश्य आँखों के सामने था, वह सबक सीखने के योग्य था। खुदा हर एक आदमी को इस परीशानी और मुसीबत से बचाये। हमारे और नौकर दोनों के मुँह से "अरे" निकला। नौकर आश्चर्य में था। बहुत ही मक्कारी के साथ हमने कहा, "कामिल यह क्या मामिला, कामिल यह क्या मामिला?" कामिल भला इसका क्या जवाब देते? विचित्र दृश्य सामने था। गधा गुसुलखाने के बीच में खड़ा था। सभी चीज़ें उलटी-पुलटी पड़ी थीं। जगह जगह लीद पड़ी हुई थी, और दुर्गन्ध के मारे दिमाग़ उड़ा जा रहा था। कामिल फर्श की एक बड़ी दरी में लिपटे हुये एक कोने में सिर झुका कर बैठे हुये थे।

हम उल्टे पाँव कमरे में लौट आए। हमारी तबीयत बहुत दुखी हो रही थी और हमने बड़े अफसोस के साथ कामिल की हालत चाँदनी से बताई। किन्तु स्त्री के दिल में कदाचित् उसकी इज्ज़त और आबरू पर हमला करने वाले के लिये दया नहीं पैदा होती। उसने फिर चिड़चिड़ा कर कामिल की सज़ा को उनकी ओर से उनका हक़ बताया। हम सिर पकड़ कर एक कुर्सी पर बैठे हुये इस मुसीबत पर विचार कर रहे थे। हालाँकि कामिल ने हमारे साथ बुरा व्यवहार किया था, और वे सचमुच दया के योग्य न थे, किन्तु फिर भी वास्तव में हमारा ही क़ुसूर था, जो हमने इतनी ढिलाई की। हम चाहते तो यह दिन ही न आता। हम उठे और हमने जाकर कामिल से कहा, "माफ करना। किन्तु ग़लती तुम्हारी भी थी, जो तुम

इस शरीर के चक्कर में पड़े ।" कामिल कुछ न बोले, और हम लौट आए।

दूसरे गुसुलखाने में हम ने जल्दी से गरम पानी, और साफ कपड़े पहुँचवाये और कामिल को वहाँ भेजवाया । दूसरे आदमी को उनके घर मोटर लेने के लिये भेजा। कामिल नहा धो कर गुसुलखाने से सीधे उधर से उधर ही अपने घर चले गये।

× × ×

अफसोस, कि यह भेद प्रकट हो गया। नौकरों ने इस बात को न जाने कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया। विवश होकर ख़ास-ख़ास दोस्तों को पूरा क़िस्सा ठीक ठीक शुरू से लेकर अन्त तक बताना पड़ा और धीरे धीरे यह क़िस्सा सबको मालूम ही हो गया, जिसके कारण कामिल का सोसाइटी में वह काला मुँह हुआ, कि किसी से मिलने लायक़ न रहे। वे हमारे हमेशा के लिए ग़ैर हो गये और हमसे उनसे फिर कोई सम्बन्ध न रहा। यहाँ हम उन बातों की चर्चा नहीं करना चाहते, जो कि बाद में सामने आईं। इतना कह देना ही काफी है, कि कामिल ने चाँदनी से भयानक बदला लेने की कोशिश की, और विवश होकर हमको छुट्टी लेकर वह जगह छोड़ देनी पड़ी।

इस अनुभव से हमें मालूम हुआ, कि हमारा और हमारी बीवी का सिद्धान्त ग़लत था। शरारत और आज़ादी की अवश्य कोई सीमा होनी चाहिये।..............और

आज़ादी की इस सीमा को प्रत्येक मनुष्य अपनी आवश्यकता के अनुसार नियत कर सकता है।

चाँदनी ने शरारत को फिर कभी इस प्रकार का सूझ नहीं दिया। एक दोस्त की बीवी और शरारत का यह परिणाम निकला!

नवां परिच्छेद

आबरू की फिलासफी

एक औरत तो वह है, जो अपने शौहर की वफ़ादार बीवी है, और कोई आदमी ज़बर्दस्ती उसकी इज्ज़त लूटता है, और वह फिर उस बेइज्ज़ती की ज़िन्दगी से मौत को अच्छा समझती है; किन्तु बच जाती है। पर दूसरी औरत वह है, जो दिल से अपने शौहर की जगह पर किसी दूसरे को चाहती है। किन्तु बन्द और क़ैद रहने के कारण अपने उद्देश्य में सफल नहीं होती और इस प्रकार यद्यपि उसका दिल पवित्र नहीं, किन्तु शरीर पवित्र है।

सवाल यह है, कि इन दोनों का दर्जा इज्ज़त और बेइज्ज़ती में क्या बराबर है? क्या यह सच बात है, कि उक्त औरत इस प्रकार लाज और इज्जत को खो बैठने के बाद अपने शौहर के काम की नहीं रहती? इसका जवाब है, कि हाँ। बदक़िस्मती से यह सच बात है कि औरत फिर शौहर के काम की नहीं रहती। क्योंकि आबरू ही एक ऐसा जौहर है, जो एक बार चाहे किसी भी प्रकार नष्ट हो जाय, यह असंभव है कि फिर वह किसी प्रकार प्राप्त हो सके।

यह तो दुनिया के अधिकांश विद्वान का फैसला है; किन्तु इस्लाम की फिलासफ़ी क्या कहती है? पीड़ितों का इसलाम के अतिरिक्त और कोई मददगार नहीं। इस्लाम का फैसला है, कि ऐसी औरत को चमड़े के कोड़े से मारना तो बहुत बड़ी बात है धुनी हुई रूई से भी नहीं मारा जा सकता। वह पवित्र है। और इज़्जत वाली है, और अपने शौहर और खुदा के सामने निडर होकर स्पष्टतया अपनी बेगुनाही का दावा कर सकती है। वह बिना आँख झपकाये हुये अपने शौहर से आँख मिला सकती है। ज़ालिम को क़ानून सजा देगा और नहीं तो खुदा।

१

आगरे से गये हुये काफी दिन होगये थे कि हम और चाँदनी इलाहाबाद से आगरे जा रहे थे। क़िस्मत की ख़ूबी, कि आज फिर लगभग दो साल के बाद अशग़र साहब का सफर में साथ हुआ। घर से तो चाँदनी शरारतों का पूरा प्रोग्राम तैयार करके चली थी, किन्तु यहाँ दूसरा ही मामिला सामने आ गया।

पहला सवाल जो हम दोनों ने अशगर साहब से पूछा, वह उनकी बीवी के सम्बन्ध में था। वे अब तक ला पता थीं। बल्कि अशगर साहब अपनी दूसरी शादी के सम्बन्ध में लखनऊ जाकर लौट रहे थे। वास्तव में संसार भी बड़ा विचित्र है। उनकी हालत ऐसी थी कि कोई यह नहीं कह सकता था कि अशगर कभी दूसरी शादी करेंगे। किन्तु बात यह है कि दुनिया की

चहल पहल और यार दोस्तों की धूम धाम और खुश मज़ाकी में दुनिया के सभी दुख अपने आप दूर हो जाते हैं। यही हाल अशगर का भी था। किन्तु फिर भी इस चर्चा ने उनके ग़म को ऐसा ताजा बना दिया कि उनकी आँखों से टप-टप आँसू गिरने लगे, और मज़ा यह कि चाँदनी भी सिर्फ उनकी ही हालत देख कर रो रही थी। बात हुई और खतम हो गई और थोड़ी ही देर बाद हम भी भूल गये। वास्तव में हमें और चाँदनी दोनों को अशगर साहब से एक स्वाभाविक सहानुभूति हो गई थी, जिसको प्रगट करने का मौक़ा सालभर हुआ हमको आगरे में मिल चुका था।

टूँडले के स्टेशन पर चाँदनी तो गाड़ी में बैठी हुई थी और हम और अशगर बाहर खड़े थे।

"ज़रा इस बच्चे को तो देखिये।"—अशग़र ने एक बच्चे की ओर इशारा करके कहा।

वह कोई डेढ़ या पौने दो साल का बच्चा मालूम होता था। नया नया चलना सीखा था और बेतरह हँसी का गोल गप्पा बना हुआ डगमगाता चला आ रहा था। ख़ूब गोरा लाल, सफेद और तन्दुरुस्त था। केवल एक कुर्ता पहने हुये था। पीछे उसका ग़रीब देहाती बाप हँसता हुआ आता था। वह भागता हुआ अशगर के क़रीब आकर डगमगाया कि अशगर ने उसे दोनों हाथों से उठाकर अपने मुँह के सामने किया। बच्चे ने ध्यान से अशगर को देखते देखते उनके मुँह पर हाथ मार दिया कि

देखने वालों का हँसी के मारे बुरा हाल हो गया। अशगर ने हँसते हुये छोड़ दिया और वह फिर डगमगाता इधर-उधर दौड़ने लगा। बार बार गिरता और फिर हँस कर दौड़ता फिरता था।

चाँदनी ने कहा 'स चमुच यह बड़ा प्यारा बच्चा है।' फिर अशगर साहब से कहा, 'अशगर साहब इस बच्चे की आँखें और माथा तो बिलकुल आप ही जैसा है। मैं बड़े ध्यान से देख रही थी।'

अशगर साहब हँसने लगे और बच्चे को देख रहे थे, कि इतने में उसने फिर उसी ओर रुख किया और उसका बाप उसके पीछे लपका तो वह आकर अशगर साहब की टाँगों से चिपट गया और हँसी के मारे उसका बुरा हाल हो गया। अशगर साहब ने फिर उठा लिया और उसी तरह देखने लगे।

हमने ध्यान से देखा और कहा—'सचमुच अशगर साहब इसकी आँखें और माथा तो बिलकुल आपही से मिलता है। बल्कि नाक और मुँह की बनावट भी कुछ आपसे मिलती है।'

अशगर साहब ने हँसकर कहा "आप दोनों भी विचित्र आदमी हैं। यह सब बातें और फिर वह भी उसके बाप के सामने जो आश्चर्य नहीं, कि अक्षर अक्षर सुन रहा हो। किन्तु बात यह है कि आज तक ऐसा प्यारा बच्चा मैंने कभी नहीं देखा।"

चाँदनी ने झाँक कर उस आदमी की ओर देखा और कहा, आप भी कैसी बातें करते हैं। यह बच्चा उसका कभी नहीं हो सकता।"

अशग़र ने उससे पूछा, "क्यों भाई, यह तुम्हारा बच्चा है ?

"जी हाँ, मेरा ही समझिये।" उस आदमी ने कहा।

"तुम्हारे किसी रिश्तेदार का होगा।"—अशग़र ने कहा।

"जी हाँ।"

"तुम कौन हो, और कहाँ जा रहे हो ?"

"मैं सिकन्दरा जा रहा हूँ, और मैं यहाँ कपड़े का काम करता हूँ।"

अशग़र को यह बच्चा ऐसा अच्छा मालूम हो रहा था कि उनका बस न था कि उसे ले लें और उसे आँखों ही आँखों में जैसे छिपाये जाते थे। उन्होंने अपने रूमाल में मिठाई लेकर उस आदमी को दी, कि यह बच्चे के लिये है। उसने कहा, वाह साहब, यह आपने क्यों तकलीफ की ?' यह कह कर वह हाथ में मिठाई लेने लगा कि इतने में रेल ने सीटी दी और चलने को हुई और अशग़र ने रूमाल दे दिया कि उसकी माँ को दे दो। वह किसी बरतन में रख लेगी।

"मैं आपका रूमाल अगले स्टेशन पर दे जाऊँगा।" यह कह कर वह बच्चे को गोद में लेकर ज़नाने डिब्बे के पास गया और रूमाल और मिठाई देकर झट से अपने डिब्बे में बैठ गया, और गाड़ी चल दी।

२

रूमाल का कुछ ख़याल भी न था, कि दूसरे स्टेशन पर वह आया, जिसका नाम हुसेनबख़्श था। अशग़र को उसने एक सफ़ेद अँगूठी देकर कहा, कि "देखिये यह शायद आपकी है; जो रूमाल में लिपटी हुई नीचे पड़ी थी। आपका रूमाल ज़रा [illegible] तो अभी लाता हूँ।" अशग़र आराम से तकिया लगाये बैठे हुये थे। उन्होंने ला-परवाही से अँगूठी ली। हुसेनबख़्श रूमाल लेने चला गया। अँगूठी को देखते ही अशग़र साहब उछल से पड़े, और उन्होंने कहा, "अरे"। वे हक्का-बक्का हो गये और उनके हाथ से अँगूठी छूट कर गिर पड़ी। हमने और चाँदनी ने आश्चर्य-चकित होकर अशग़र को देखा; जिनकी हालत ही विचित्र थी। उन्होंने अँगूठी उठाई। "ख़ैरियत तो है" हमने और चाँदनी ने पूछा, और यह कहते हुये चाँदनी ने अशग़र साहब के हाथ से अँगूठी को लेकर देखा।

यह एक प्लाटीन की क़लई की बहुत ही हलकी और नक्श की हुई अँगूठी थी और उस पर ईरानी अक्षरों में बड़ी ख़ूबसूरती के साथ कुछ इबारत खुदी हुई थी। ध्यान से पढ़ा तो बहुत ख़ूब-सूरती के साथ उस पर शब्द "मासूमा" खुदा हुआ था।

"यह कैसी अँगूठी है?" चाँदनी ने पूछा।

अशग़र साहब ने कहा, "मेरी खोई हुई बीबी का नाम······ ············। वे यही अँगूठी पहने हुई थीं।

हम दोनों हक्का-बक्का बन गये और एक दूसरे को देखने लगे। हमारे कान में धीरे से चांदनी ने कहा, "कहीं यह बच्चा सचमुच इन्हीं का तो नहीं है। ज़रा पूछो तो। कहीं खून का जोश तो नहीं था जो बच्चे की ओर स्वभावतः खींचे जा रहा था।"

हमने अशग़र साहब से धीरे से पूछा, 'तो मालूम हुआ कि जब वे गुम हुईं तो डेढ़ दो माह का हमल था। मामिला साफ था और हमने अशग़र से कहा, "मेरा दृढ़ विश्वास है, कि आप की खोई हुई बीवी अपने बच्चे सहित इस गाड़ी में मौजूद हैं।"

अशग़र साहब विचित्र चक्कर में थे, और उनकी बुद्धि काम न करती थी। वे चुप थे कि चाँदनी ने पूछा, "क्या आपके रूमाल पर कोई ऐसा निशान था, जिसे आपकी बीवी पहचान सकतीं ?" अशग़र ने चौंक कर कहा, "आप सच कहती हैं; सच कहती हैं। रूमाल मैंने मुद्दतों के बाद निकाला है। उस पर उन्हीं के हाथ का अंगरेज़ी का A अक्षर कढ़ा हुआ है।

हमने कहा, "निश्चय अब तो बिलकुल साफ है। उन्होंने आपका रूमाल पहचान लिया, और पता लगाने के लिये यह अँगूठी भेजी है। वह बच्चा निश्चय आपका है और बीवी भी आपकी मौजूद हैं। मुबारक हो।"

अशग़र की इस समय विचित्र हालत थी। वे सिर लटकाये हुये बैठे थे। दूसरा स्टेशन जमुनाब्रिज का आया। अशग़र को हमने रोका कि कहीं कोई असाधारण घटना न हो जाय !

चाँदनी ने वहाँ जाकर देखा, तो झट पहचान लिया। उसके हाथ में रूमाल था और आँखों से आँसुओं की झड़ी लगी हुई थी। हुसेनबख्श अब सब माजरा समझ गया, और वह चुप-चाप यह सब कुछ देख रहा था।

× × ×

आगरे फोर्ट पर पहुँच कर चाँदनी ने जल्दी से मासूमा को उतार दिया। बुरके की तो कोई बात ही नहीं, उसके पास गाढ़े की एक छोटी चादर के अलावा दूसरी कोई बड़ी चादर न थी। उसको तो बन्द गाड़ी में बिठाया। चूँकि किसी को कुछ मालूम न था, अतः असगर ने हम दोनों से कहा कि आप मेरे साथ चलें। क्योंकि आप लोगों के अलावा यहाँ दूसरा कोई गवाह ही नहीं है।

३

"मैं इस तरह नहीं उतरूँगी।"-मासूमा ने रोते हुये चाँदनी से कहा-मैं नहीं उतरूँगी जब तक कि आप यह न मालूम करलें कि वे मुझ ज़लील से मिलना भी चाहते हैं या नहीं।" यह कह कर उसने गाड़ी से उतरने से इन्कार कर दिया।

चाँदनी ने आश्चर्य से कहा, "आखिर यह क्यों ?"

"मैं कह चुकी, मैं हरगिज न उतरूँगी और लौट जाऊँगी। चाहे कुछ भी हो।"—उसी तरह रोती हुई उस पीड़िता ने कहा।

चाँदनी ने संदिग्ध होकर कहा,—"हुसेन बख्श......।"

"वे मेरे सगे भाई के बराबर हैं, बल्कि उससे भी बढ़कर।"

प्रसन्न होकर चाँदनी ने कहा,—"आखिर फिर क्या मामिला है ?"

"आप जाकर वस पूछ आयें—मासूमा ने कहा—मैं आप को कुछ नहीं बता सकती !"

× × ×

यद्यपि असली क़िस्सा हमें बाद में मालूम हुआ। किन्तु इस मौके पर हम मासूमा की बीती हुई सुना कर पाठकों से निवेदन करते हैं, कि वे इन घटनाओं को ध्यान से पढ़ें और उनसे शिक्षा ग्रहण करें। हम इसको किस्से के रूप में वहाँ से आरम्भ करते हैं, जहाँ से वह खो गई थी। क्रम के लिये पाठक पिछले परिच्छेद को देखें।

४

हम कह चुके, कि आगरे के सीटी स्टेशन पर जब हम उतरे तो चलते समय असग़र से रुखसत हुये थे।

किन्तु उनकी बीवी को देखने चाँदनी न गई। क्योंकि सफर के बीच में एक बार जब उसकी तबीयत का हाल पूछने के लिये चाँदनी ने जाने का विचार किया था, तब अशगर साहब ने कह दिया था कि आप तकलीफ न करें। मैं स्वयं आपकी ओर से उसकी तबीयत का हाल पूँछ लूँगा।

बेचारी मासूमा अपने शौहर का इन्तज़ार कर रही थी। बुरके में से भीड़ भाड़ में उसने यह भी न देखा कि अशगर साहब आये और डोली मँगवाकर नौकर को हिदायत भी कर

गये कि उतरवालो। मैं सामान देखता हूँ। डोली आकर लगी, और चादरें तानी गईं। वह आगे बढ़ी कि एक बड़ी बीबी ने कहा, "बेटी यह तो मेरी है। मेरा लड़का लाया है।" क्योंकि मासूमा बुरक़े में से रात के समय न तो अशग़र को देखा था, और न इस भीड़ में नौकर को पहचान सकती थी। उस ने यही समझा कि बड़ी बीबी सच कहती हैं। अतः वे बैठ कर चली भी गईं। अशगर ने नौकर को जब डोली ले जाते हुये देखा तब उन्होंने भी ज़नाना डिब्बे की ओर देखने की फिर आवश्यकता न समझी। क्योंकि सामान सब मरदाने डिब्बे में था।

खुदा लाचार औरतों को बदमाशों के पंजों से बचाये। और खास कर ऐसी बेगुनाहों को जैसी मासूमा थी। एक लोफर न जाने कहाँ से आ रहा था। उसने कदाचित इस बेगुनाह को अपने शिकार के लिये ताड़ लिया था। वह ज़नाने डिब्बे के पास आया और उसने मासूमा से कहा, मियाँ ने कहा है; आप अगले स्टेशन पर उतरें। क्योंकि न यहाँ कोई बन्द गाड़ी है, और न डोली। मासूमा सोचने भी न पाई थी कि गाड़ी चल पड़ी। उसने भी समझा कि घर का नौकर है, इससे कहलवा दिया होगा, और स्वयं भी अगले स्टेशन पर उतरेंगे। वह बेफिक्री के साथ बैठ गई। राजा मण्डी के स्टेशन पर गाड़ी जाकर रुकी, और वह आदमी मासूमा के पास आया और कहा, "उतरिये। यह कोई डोला इत्यादि नहीं है। मियाँ सामान लेकर वह जा रहे हैं। जल्दी उतरिये, उसको भला भीड़ में बुरका और चादर

से क्या दिखाई देता ? वह उतर आई और उसके पीछे-पीछे चली आई। राजामण्डी स्टेशन पर भीड़ तो अधिक होती नहीं है। फाटक के पास पहुँच कर मासूमा ने अशगर को न देखा तो फिर भी उसको आश्चर्य न हुआ। क्योंकि वह यह जानती थी, कि बाहर खड़े होंगे। वह बाहर आई तो उस आदमी ने दूर ही से पुकार कर कहा, "मियाँ इधर आइये, यह गाड़ी मौजूद है।' मासूमा ने समझा, 'अशगर को नौकर बुला रहा है।' वह उसमें बैठ गई, और खिड़की का दरवाजा बन्द कर लिया। इतने में उस आदमी ने कहा, "भाई! तुम गाड़ी ज़रा बढ़ा कर पुल के पास ले चलो। वह देखो कुली तो उधर जारहे हैं। मासूमा ने इन बातों पर ध्यान न दिया और गाड़ी चल पड़ी और वह भी बड़ी तेजी के साथ। मासूमा ने समझा कि कुलियों के पास पहुँच कर गाड़ी रोक दी जायगी, किन्तु वहां तो गाड़ी बेतहाशा जा रही थी, वह बिलकुल न घबराई। किन्तु यह सोचती थी, आखिर किससे और कैसे पूछूँ कि सामान क्यों नहीं है। क्योंकि न तो वह नौकर से बात कर सकती थी, और न कोचवान से; और न खिड़की खोल कर सड़क पर चलने वाले किसी आदमी को पुकार सकती थी। यह सब क्यों? केवल इसलिये कि जिस परिस्थिति में उसका पालन पोषण हुआ था, उसके मज़हब में यह सब मना था। वह चाहती भी तो सम्भव न था, क्योंकि वह इस क़दर तबीयत की कमज़ोर और सीधी थी, कि उससे यह सब होना असंभव था।

× × ×

अब मासूमा को न जाने क्यों सन्देह हो रहा था। क्योंकि गाड़ी बाज़ार से न जाकर सुनसान रास्ते से जा रही थी और उसके अनुमान के मुताबिक अब तक गाड़ी को घर पहुँच जाना चाहिये था। उसने सब बातों पर एक साथ ही विचार किया, और झाँक कर जब बाहर देखा, तब उसका कलेजा बैठ गया। उसने परीशान होकर खिड़की पर हाथ मारना शुरू किया और जब गाड़ी न रुकी तब वह खिड़की को ज़ोर से हिलाने लगी। गाड़ी सहसा रुकी। खिड़की खोली, और वही आदमी यह कह कर भीतर गया, कि यदि तनिक भी चिल्लाई तो मार डालूँगा।" उसने खिड़की बन्द कर ली और फिर गाड़ी चल पड़ी। खुदा की पनाह, इस बेचारी मासूमा का उस समय क्या हाल हुआ होगा। किसी क़लम में ताक़त नहीं, कि उसकी ठीक ठीक हालत का वर्णन कर सके। वह जीवित थी; किन्तु मुर्दे से भी बदतर। वह डर कर कोने में सरक गई।

वह शरीफ़ और सीधे-सादे स्वभाव की बेगुनाह औरत, जिसने कभी किसी अजनबी से बात तक न की हो, भला क्योंकर किसी जंगली ज़ालिम की धमकियों और ज्यादतियों को बर्दास्त कर सकती थी। अधिकाधिक भय से उसके मुँह से एक चीख निकली और वह बेहोश हो गई।

५

मासूमा को जब होश आया तब उसने अपने आपको एक ज़लील बिस्तर पर पड़ा पाया। चारों ओर अँधेरा छाया हुआ

था। क्योंकि उस जगह जेल की तरह अँधेरा था। हवा में नमी और बदबू थी, और भारी मालूम होती थी। हाथ को हाथ न सूझता था और वह यही सोच रही थी कि मैं जीवित हूँ, या मर गई हूँ। भय का एक संसार सा था, और सन्नाटा छाया हुआ था, और मासूमा का दिल बैठा जा रहा था कि सहसा एक ओर से कुछ खटका सा हुआ। वह डर गई कि अँधेरे में उसने ऐसी आहट सुनी कि जैसे कोई साँप की तरह आ रहा है। 'जालिम आ पहुँचा', उसने अपने दिल में कहा, 'हाय मासूमा, तेरा यहाँ अब कोई मदद-गार नहीं।''

इतने में एक दियासलाई जली और उसने उस भयानक चेहरे को देखा। इसके बाद कड़वे तेल का एक चिराग़ जलाया। मासूमा ने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई तो उसको मालूम हुआ कि वह शायद किसी तहखाने में है।

वह ज़ालिम चारपाई के पास आकर एक तख्त पर बैठ गया। मासूमा सिकुड़ कर अलग हो गई। उसने मासूमा को कुछ मिठाई और दूध दिया, और अफसोस कि उसने उसको मार-मार कर खिलाया।

× × ×

चींटी तक अपनी रक्षा के लिये हद से अधिक कोशिश करती है, और मासूमा ने भी अपने को उस जालिम से बचाने के लिये सिर-तोड़ कोशिश की। अपनी उम्र में पहली बार उसने अजनबी से बात की। और वह भी इस तरह कि हाथ जोड़ कर

कहा, "खुदा के लिये मेरे ऊपर दया करो और मुझे मेरे घर पहुँचा दो।" किन्तु तोबा कीजिये ! निर्दय ने क्रोध में आ कर उसका गला ऐसा रगड़-रगड़ कर घोंटा कि वह घायल मुर्गे की भाँति तड़पने लगी। उसने अपनी जान बचाने की आखिरी कोशिश की। फिर हाथ पैर ढीले हो गये, और वह बेहोश हो गई............।

जब वह होश में आई, कि फिर उसके मुँह से चीख निकली और वह बेहोश हो गई। इसी तरह वह कई बार होश में आकर बेहोश हुई।

× × ×

न जाने वह कितनी देर तक बेहोशी की दशा में पड़ी रही, कि उसकी आँखें खुलीं, और उसको मालूम हुआ, कि अब दिन है। उसके हाथ-पैरों में बिलकुल जान न थी, और वह बड़ी देर तक उसी तरह पड़ी रही। चारों ओर वह अँधेरे में देख रही थी। थोड़ी देर बाद उसको दिखाई देने लगा। वह एक तहखाने में थी, जिसके बीच में तीन खम्भे खड़े थे। बड़ी देर तक वह उसी तरह पड़ी रही। फिर अन्त में उठी और उठते ही सब से पहले उसने चारपाई की पायताने की रस्सी खोल कर एक फन्दा बनाया, कि वह अपनी घृणित ज़िन्दगी का जल्द से जल्द खातमा करे। उस बेचारी को यह भी न मालूम था कि इस तरह जान देना कठिन नहीं, बल्कि असंभव है। जैसे ही फन्दा कड़ा होता था, हाथ अपने आप ढीला हो जाता था। जब हर प्रकार

से उसको इसमें असफलता हुई, तब उसने एक पत्थल लेकर बहुत-बहुत अपना सिर फोड़ा। किन्तु इस तरह भी वह अपने को मार न सकती थी। वह मरने के लिये तड़प रही थी। किन्तु भला मौत कहाँ? अन्त में थक कर सिर पकड़ कर बैठ गई। थोड़ी देर बाद उठी और उस तहखाने का कोना-कोना देखा। दरवाज़ा उसका क्या था; मानों लोहे का तख़्ता था, जो रंग से भरपूर रंगा हुआ था। उसने देखा कि जब दरवाज़ा नहीं खुलता, तब फिर हार और थक कर चारपाई पर आकर पड़ रही और अपनी लाचारी पर बिलख-बिलख कर रोना शुरू किया। रोते-रोते सो गई।

न जाने वह कितनी देर तक सोई कि उसने एक दुःख स्वप्न देखा। उसने देखा कि अशग़र सामने रशीदा खड़ा है। वह दौड़ी। उसने घृणा से कहा, "तू अब किस मुँह से मेरे पास आती है।" वह रुक गई, और उसने गिड़-गिड़ा कर अपने प्यारे शौहर के पैर पकड़ लिये कि उसने झटका देकर पैर छुड़ा लिया और वह जाग उठी। आँख जब खुलीं, तब वही सन्नाटा था। वह पगली सी उठ कर सिर धुनने लगी, और पागल होकर उसने अपना सिर दीवानों की तरह दौड़ कर दीवाल से टकरा दिया। वह बेहोश तो न हो सकी; किन्तु बेजान होकर ज़मीन पर गिर पड़ी। वह उसी अवस्था में बड़ी देर तक पड़ी रही।

× × ×

सन्नाटा उसी तरह छाया हुआ था; और वह उसी तरह

चुपचाप निर्जीव-सी पड़ी थी। उसको पहले तो कुछ सन्देह सा हुआ, किन्तु फिर उसने जब कान लगा कर सुना, तब विश्वास सा हो गया, कि कोई आदमी दीवार की.........आधी से अधिक ऊँचाई के पास कुछ खोद रहा है। धमक अधिक ज़ोरदार होती जाती थी, और वह उसी ओर देख रही थी कि इतने में कुछ मिट्टी सी उस जगह से गिरी। उसका दिल धड़कने लगा, और वह ठिठक कर दीवार से लग कर गिरती हुई मिट्टी और ईटों को देखने लगी। ईंटे गिरनी बन्द हो गईं और थोड़ी देर बाद धमाके की आवाज़ कम होकर बन्द हो गई और पहले ही की भाँति सन्नाटा छा गया। जब काफी देर हो गई, तब वह उठी। उसको डर लग रहा था कि कहीं वह ज़ालिम फिर न आ पहुँचे। उसने उठ कर ध्यान से दीवाल को देखा, जहाँ से ईंटे और मिट्टी गिरी थी। "आश्चर्य क्या, कि मैं उसी ओर से निकल सकूँ।" यह विचार उसके दिल में आया। उसने पलँग को घसीट कर दीवाल के पास लगाया। किन्तु वह जगह ऊँची थी, जहाँ से ईटें गिरी थीं। उसने इधर-उधर देखा और पलँग को हटा कर उसकी जगह बड़ी कठिनाई से तख्ते को खींच कर लाई। तख्ते के ऊपर उसने चारपाई के सिरहाने के दो पाये रक्खे और उस पर खड़ी होकर जहाँ से ईंटें गिरी थीं, उस स्थान का उसने निरीक्षण किया। हाथ से उसने मिट्टी और ईंटें हटानी शुरू कीं, और इस काम में कोई कठिनाई उसके सामने न आई। क्योंकि वह जगह अभी ताज़ी ही खोदी गई थी। थोड़ी ही देर

में उसने एक बड़ा सूराख कर लिया। अब केवल मिट्टी ही मिट्टी थी, जिसे उसने हाथ से हटा हटा कर गिराना शुरू किया। किन्तु ज्यों-ज्यों वह मिट्टी हटाती जाती थी, ऊपर से मिट्टी और खिसकती आती थी। मिट्टी हटाने में उसका हाथ टीन के किसी सन्दूक से लगा, जिसको उसने पकड़ कर खींचा। उसके साथ ही बहुत सी मिट्टी खिसक आई। सन्दूक छोटा सा था, किन्तु काफी वज़नी था। उसने उसको हिला कर देखा, तो मालूम हुआ, कि शायद उसमें रुपया-पैसा है। उसमें ताला लगा हुआ था। उसने तेजी से मिट्टी हटानी शुरू की और थोड़ी ही देर में उसकी आखों को दिन का प्रकाश दिखाई पड़ा। उसने और मिट्टी हटाई और झाँक कर देखा, तो उसको आसमान की जगह पर टूटी-हुई दीवाल दिखाई पड़ी और सामने कुछ ईंटें, और कूड़ा पड़ा था। उसने जल्दी से सूराख को बड़ा किया, और जब काफी बड़ा हो गया, तब वह उसमें लेट कर ऊपर निकल आई। उसने देखा कि मैं एक छोटे से पुराने किन्तु ईंटों और चूने से बने हुये गुफा में हूँ। यह एक तङ्ग जगह थी। अब वह यह सोच रही थी कि इस सन्दूक को क्या करूँ? यदि उसी जगह छोड़ती थी, तो उसको पूरा विश्वास था, कि वह ज़ालिम आकर ले लेगा। और यदि साथ लिये जाती तो उसका दिल इसके लिये तैयार न होता। क्योंकि उसको पूरा विश्वास था कि हो न हो इसमें रुपया है जिसे कोई कंजूस इस जगह गाड़ कर के उसके छुटकारे का कारण बना है। उसने कुछ सोचा और अन्त में चोर और

अपराधी बनना स्वीकार किया। किन्तु यह मंज़ूर न किया कि यदि इसमें कुछ रुपया पैसा और माल हो तो वह उस ज़ालिम के हाथ लगे, जिसने उसको ज़िन्दगी से निराश कर दिया था। जब उसने यह निश्चय कर लिया तब उसने डरती डरती कि कोई देख न ले उस संकीर्ण गुफा के बाहर झाँक कर देखा। उसने देखा कि मैं एक पुराने ज़माने के क़ब्रिस्तान में हूं, जहां दूर तक टूटी हुई पुरानी क़ब्रें फैली हुई हैं। सूरज डूब चुका था और शाम हो गई थी।

९

जब कुछ अँधेरा सा होगया, और उस जगह उसको डर मालूम होने लगा तब वह उस गुफा से निकली। वह कुछ डर सी गई। क्योंकि वह बड़ी पुरानी क़ब्र में से निकली थी, जो ऊपर से ज्यों की त्यों थी। चारों ओर टूटी और पुरानी क़ब्रें दिखाई दे रही थीं और विचित्र भयानक दृश्य था। किन्तु यह सब उस स्थान से अधिक डरावना न था, जहां इसको उस ज़ालिम से दूसरी बार भेंट होजाने का डर था। वास्तव में वह उस ज़ालिम का डर ही था, जो उसको इस धुँधले अँधेरे के समय क़ब्रिस्तान में अज्ञात दिशा की ओर लिये जा रहा था। नहीं तो वह डर कर बेहोश हो गई होती। बहुत दूर तक सन्नाटा छाया हुआ था, और एक आदमी भी दिखाई न पड़ता था। वह अब कुछ निडर सी थी। क्योंकि मौत की इच्छुक

थी। वह तेज़ी से इस जगह से दूर होना चाहती थी। इस कारण से नहीं कि वह मुर्दों के रहने की जगह में थी, बल्कि वहां वह भयानक और अंधकार-पूर्ण तहखाना था। वह उसी तरह तेज़ी से चलने लगी। उसकी आंखें किसी खास चीज़ को खोज रही थीं, और उसकी खुशी की कोई सीमा न रही, जब उसने एक बड़े कुँये की चबूतरी देखी। वह तेज़ी से दौड़ कर वहां पहुँची। वह पुराने ज़माने का न जाने किस समय का बना हुआ एक बड़ा कुँआ था। उसने झांक कर कुँये के भीतर उन्न में पहली बार देखा, और भीतर के अंधकार को देखकर उसका दिल कांप उठा। मरना कोई सरल बात नहीं है, और फिर उसके लिये जो जवान और तन्दुरुस्त हो। उसने अपने आपको विचित्र पेशोपेश में पाया। उसको अपनी जवानी का ख्याल आया और साथ ही असग़र का ख्याल आया। बस, मन मसोस कर रह गई। वह कोशिश करके उससे अवश्य मिल सकती थी। किन्तु यह कैसे हो सकता था ? नहीं नहीं अब मैं कभी असग़र को मुँह न दिखाऊँगी। तो फिर आखिर क्या होगा ? संसार उसके लिये अँधेरे के समान होगया।

उसके लिये मरना ही अच्छा है, और यह निश्चय करके उसने उस सन्दूक़ को कुँयें में फेंक दिया। उसके गिरने की लौटी हुई आवाज़ अभी गायब भी न हुई थी कि सामने से कोई आदमी अँधेरे में आता हुआ मालूम हुआ। वह डर सी गई और उसने इस प्रकार रोती-पीटती अपने को कुँयें में डाल दिया।

एक धमाका हुआ और वह पानी के भीतर तक चली गई कि उसको पानी ने ऊपर फेंका। उसके हाथ-पैर उसके कपड़े में उलझ गये थे। उसने बेबसी की हालत में ज़ोर से चिल्लाकर हाथ-पैर मारे। क्योंकि उसको वास्तव में अब मालूम हुआ, कि मरना कैसा होता है। किन्तु उसकी चीख को पानी के रेले ने शान्त कर दिया, और वह थोड़ी देर की कशमकश के बाद एक बेहोशी की अवस्था में डूब गई।

७

जब उसकी आँख खुली तब उसने अपने को हुसेनबख्श के घर में चारपाई पर पड़ी हुई पाया और सेवा के लिये उसकी बहन थी। उसे वहां हर तरह से आराम मिला। हुसेनबख्श जब से यह आई थीं धीरे से घर में आता और उसी तरह चला जाता। सवा सात महीने के बाद उसको बच्चा पैदा हुआ।

हुसेनबख्श ने उस समय से लेकर अब तक उसको अच्छी तरह रक्खा। वह जानता था कि वह क़िस्मत की सताई हुई है और पीड़िता है। क्योंकि वह सदा दुखी और उदास रहती थी और उसकी बहन हर तरह से उसके ग़म को दूर करने की असफल कोशिश कर चुकी थी। लेकिन फिर भी हुसेनबख्श को पूरी आशा थी कि कभी न कभी तो उसके मन का दुख जाता रहेगा। और तब यह मेरी औरत बन कर रहेगी। वह अपनी बहन के द्वारा कई बार उसकी मंशा मालूम कर चुका था

और हर बार मासूमा को अपने रास्ते पर दृढ़ पाया था कि वह इसी प्रकार ज़िन्दगी बितायेगी। वह जानती थी कि हुसेन-बख्श के दिल की हालत क्या है? वह नौकरों की तरह उसकी सेवा करता था, और मासूमा को भी उससे मुहब्बत हो गई थी, जिसको भाई की मुहब्बत कहते हैं। उसका मुँह उसको "भाई भाई", कहते सूखता था और वह उससे हद से ज्यादा सहानुभूति रखती थी। क्योंकि उसने अपनी जान खतरे में डालकर उसको कुयें में से निकाला था।

खुलासा यह कि वह इस समय तक हुसेनबख्श के यहाँ थी और इस समय वह हुसेनबख्श के साथ रेल में उसके कुछ रिश्तेदारों से मिल कर आ रही थी। क्योंकि हुसेनबख्श उसको घर में बिलकुल अकेली छोड़कर कहीं बाहर न जा सकता था कि सौभाग्य से अशगर और हम मिल गए।

८

अशगर कमरे में गये। उन्होंने देखा, कि मासूमा ग़म की तस्वीर बनी हुई ज़मीन पर बैठी है। वह एक तरह के रङ्गीन कपड़े का पायजामा पहने हुये थी और एक गन्दा सा सफेद चद्दर। पैर में जूता तक न था। उसकी आँखों से आँसुओं का एक तूफान सा जारी था। जैसे ही उसने अपनी आँखें पोंछकर अशगर की ओर देखा, तो अशगर के दिल पर एक चोट लगी, और वे व्याकुल होकर उसकी ओर झुके क्योंकि वास्तव में अशग़र की मुहब्बत मासूमा से इश्क का सम्बन्ध रखती थी।

"खबरदार मुझे हाथ न लगाना। अलग, अलग" मासूमा ने बड़ी गम्भीरता से कहा। अशगर एक साथ ही इस एक असाधारण वर्ताव को देखकर हैरान से हो गये। क्योंकि वे तो यह समझते थे, कि वह मुझे देखते ही लपट कर बेहोश हो जायगी। उसके मुँह से एक साथ ही निकला, "मासूमा", और यह कह कर वह फिर बढ़ा, कि मासूमा ने हाथ उठाकर कहा, "अलग, अलग, खबरदार, मुझे हाथ न लगाना।"

अशगर ने आश्चर्य में आकर कहा, "यह क्यों ?"

मासूमा ने ठंडी साँस लेकर अशगर की ओर विचित्र ढङ्ग से देखा। और कहा, "अफसोस, मैं तुम्हें मुँह दिखाने के लायक नहीं और यह केवल संयोग था कि......।"

"नहीं तो"—अशगर ने कहा।

"मैं उम्र भर तुम्हें मुँह न दिखाती—मासूमा ने कहा—"यह बच्चा तुम्हारा है। तुम इसे ले लो, और मेरा पूरा किस्सा सुन लो। इसके बाद यह निश्चय करना, कि मैं तुम्हारे काम की हूँ या नहीं।?"

अशगर को सचमुच सन्देह होने लगा। और उसने रुकते-रुकते कहा, "किन्तु मुझ से तो कहा गया है, कि हुसेनबख्स, हुसेन बख्श, हुसेनबख्श......।"

"वे मेरे सगे भाई के बराबर हैं"—मासूमा ने कहा।

कुछ प्रसन्न होकर असगर ने कहा,—"तो फिर क्या ?"

"पहले मेरा किस्सा सुन लो"—मासूमा ने कहा—"जल्दी न करो।"

यह कह कर उसने दिल को हिला देने वाली अपनी कहानी को रो-रोकर सुनानी आरंभ कीऔर ठीक ठीक आरंभ से लेकर अंत तक ज्यों का त्यों किस्सा सुना दिया।

असग़र के ऊपर कमज़ोरी ने अपना प्रभाव डाला और और वह आँखें नीची किये हुये सोच रहा था। उसके दिल का मुहब्बत का जोश उड़ गया था। 'मेरे मालिक मुझ पर रहम करो'। यह कह कर मासूमा उठकर आई, और उसने असग़र के पैर पकड़ लिये। अशगर बिलकुल हिले-डुले न, कि उसने कहा, "मुझको दासी की तरह एक कोने में पड़ी रहने देना और मैं शेष घृणित जिन्दगी तुम्हारे क़दमों में ही बिता दूँगी। तुम कोई दूसरी शादी कर लेना।"

इसी तरह गिड़-गिड़ाकर न जाने क्या कहती रही, कि असग़र ने ध्यान से फिर मासूमा को देखा। और कुछ सोचकर पूछा, "तुमने मुझको कोई खत भी नहीं लिखा, यदि चाहती तो खत लिख सकती थीं।"

"यदि मैं चाहती तो तहखाने से निकलने के बाद कुयें में न गिर कर तुम्हारे पास आने की कोशिश भी कर सकती थी और आश्चर्य नहीं कि इसमें सफल भी हो जाती। और फिर यदि चाहती तो तुम से अपनी जिल्लत को छिपा भी सकती थी, और

झूठ भी बोल सकती थी।" मासूमा ने रोती हुई कहा। इस वाक्य ने अशगर पर विचित्र ही प्रभाव डाला। क्या यह सच बात न थी कि यदि वह उससे कुछ न कहती, तो उसको उसकी ज़िल्लत का पता भी न लगता। खुदाकी कुदरत कि अशगर ऐसे मनुष्य की पुरानी फिलासफी पर इसलाम की आबरू की फिलासफी ने अपना प्रभाव डाला और उसने कुछ विचार कर के कहा, "मासूमा !" वह चुप होगया और फिर बोला, "तुम्हारा इसमें कुछ भी कुसूर नहीं। वास्तव में मुझको आज नहीं; बल्कि अभी यह मालूम हुआ कि वास्तव में पवित्र, और बेगुनाह वह है कि जिसका दिल सभी बुराइयों से बचा हुआ है, चाहे उसका शरीर गन्दा ही क्यों न हो ? लेकिन जिसका शरीर पवित्र है, किन्तु हृदय और आत्मा पवित्र नहीं है, वह वास्तव में किसी भी तरह पवित्र नहीं है। तेरे ऊपर यदि किसी नीच व्यक्ति ने मैला डाल दिया तो तुमने उसको अपना गला घोंट कर और कुँयें में गिर करके धो डाला और अब तक धो रही है। यदि तू चाहती तो इसमें सन्देह नहीं, कि मुझको अपनी मुसीबत का पता ही न लगता और वह वास्तव में बहुत ही बुरा होता। किन्तु चूँकि तू पाक और साफ है, और बे गुनाह और सच्ची है, अतः तुमने सच सच बात कही। मैं ऐसी बीवी के बिना कभी भी जीवित नहीं रह सकता।"

कठिनाई से बात खतम हो पाई थी, कि मासूमा के मुँह से खुशी की एक चीख निकली और वह वहीं अशगर के कदमों में

वेहोश होकर गिर पड़ी। अशगर ने अपनी आबरूदार और सच्ची बीवी को उठा कर अपने गले से लगाया।

× × × ×

हम अलग कमरे में बैठे थे, और सोचते थे, कि चाँदनी भीतर ज़नानखाने में गई है, कि वह आँखों से आँसू पोंछती हुई आई। हमने कहा, 'अरे' यह तुझे क्या हुआ, तो उसने अपनी चोरी का किस्सा सुनाया, कि वह किस तरह बेइमानी के साथ दरवाजे के एक सूराख से मियाँ बीवी की मुलाकात देख और सुन रही थी। हमने उसकी कमज़ोरी और चोरी पर उसको बहुत कुछ बुरा भला कहा; किन्तु अब तो वह सुन आई थी; और खुदा को इसी तरह मंजूर था, कि यह किस्सा पूरा होकर नसीहत का कारण बने।

९

बेचारा हुसेनबख्श अब भी प्रसन्न था, और वास्तव में उसको सच्ची प्रसन्नता हुई होगी। क्योंकि वह अच्छे स्वभाव का था। मासूमा ने उसको उसकी सेवा का यह पुरस्कार दिया, कि वह जिस तरह उसको भाई कहती आई थी, उसी तरह उसको अब भी भाई समझेगी और उस सन्दूक का पता बता दिया, जो अब तक उसी कुँए में पड़ा था, जिसमें उसने मसूमा को अपनी जान पर खेल कर निकाला था। इस सन्दूक को को मासूमा अब तक एक अमानत समझती थी, किन्तु अब

उसको इस तरह पड़ा रहने देना मालूम हुआ। उस सन्दूक में साढ़े चार हज़ार मूल्य की बादशाही मोहरें निकलीं; जो हुसेन बक्श की मुहब्बत और सेवा का सर्वोत्कृष्ट भेंट थी।

बुरा समय किसी पर कह कर नहीं आता। संसार के झगड़े में कमज़ोर और बेबस होना कोई तारीफ के लायक गुण नहीं है। प्रत्येक मजहब की सभ्यता ने शरम, और हया, और पर्दे की कोई न कोई सीमा नियत कर दी है और इसमें अतिशयोक्ति करना सम्भव है, कि किसी तरह लाभकर हो, किन्तु खतरनाक अवश्य है। ऐसी बेबस औरतें वास्तव में न तो शौहर की खिदमत कर सकती हैं और न मजहब और जातिकी। क्या आवश्यकता के समय मासूमा की सी ही औरतें पर्दे से निकल कर तलवार चलायेंगी? क्या हम ऐसी ही औरतों के बल-बूते पर आजादी लेंगे? क्या ऐसी ही औरतें टर्की में रहती हैं; जिन्होंने समय पड़ने पर मर्दों से कहा, कि जाओ, तुम लड़ाई के मैदान में जाओ, और शेष कामों को हम सँभालती हैं और समय पड़ने पर तुम हमें बुला लेना। हम तुम्हारे साथ साथ दुश्मनों की गोलियों का सामना भी करेंगी। इन औरतों ने जो कहा वह किया। यदि ध्यान से देखा जाय तो हमारी गुलामी का सब से बड़ा यही रहस्य है।

॥ समाप्त ॥

छात्र-हितकारी पुस्तकमाला

के प्रकाशन

सदाचार एवं जीवन सुधार सम्बन्धी पुस्तकें

क्रम	पुस्तक	लेखक	मूल्य
(१)	ब्रह्मचर्य ही जीवन है	[स्वामी शिवानन्द]	१)
(२)	सफलता की कुंजी	[स्वामी रामतीर्थ]	।)
(३)	ईश्वरीय बोध	[रामकृष्ण परमहंस]	।।।)
(४)	मनुष्य जीवन की उपयोगिता	[केदारनाथ गुप्त]	।।=)
(५)	धर्म पथ	[महात्मागांधी]	।।।)
(६)	भाग्य-निर्माण	[ठा० कल्याणसिंह शेखावत]	१।।।)
(७)	वेदान्त धर्म	[स्वामी विवेकानन्द]	१।)
(८)	अहिंसाव्रत	[म० गांधी]	।।।)
(९)	भिक्षु के पत्र	[आनंद कौसल्यायन]	।।।)

स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सम्बन्धी

क्रम	पुस्तक	लेखक	मूल्य
(१)	हम सौ वर्ष कैसे जीवें	[केदारनाथ गुप्त]	१)
(२)	मनुष्य शरीर की श्रेष्ठता	[देवीप्रसाद खत्री]	।=)
(३)	स्वास्थ्य और व्यायाम	[ठा० केशवकुमार]	१।।)
(४)	स्वास्थ्य और जलचिकित्सा	[केदारनाथ गुप्त]	१।।)
(५)	दूधही अमृत है	[हनुमान प्रसाद गोयल]	१।।)
(६)	आदर्श भोजन	[डा० लक्ष्मीनारायण चौधरी]	।।।)
(७)	फल उनके गुण तथा उपयोग	[केशवकुमार ठाकुर]	१।)

काव्य

क्रम	पुस्तक	लेखक	मूल्य
(१)	कवितावली रामायण	[गोस्वामी तुलसीदास]	१।।)
(२)	मदिरा	[तेजनारायण काक]	१)

(३) अपराजिता	[अंचल]	२)
(४) कुसुम कुंज	[ठा० गुरुभक्त सिंह 'भक्त']	१=)
(५) युगारंभ	[गणेश पाण्डेय]	१।।)

समालोचना व निबंध

(१) गुप्तजी की काव्यधारा	['गिरीश']	२।)
(२) कविप्रसाद की काव्य साधना	[रामनाथ 'सुमन']	२।।)
(३) काव्य-कलना	[गंगाप्रसाद पांडेय]	१)
(४) साहित्य सर्जना	[इलाचंद्र जोशी]	१)
(५) राजस्थानी साहित्य की रूपरेखा	(मोतीलाल मेनारिया)	२।।)
(६) निबन्धिनी	[गंगाप्रसाद पांडेय]	१)

यात्रा, खोज व आविष्कार सम्बन्धी

(१) वैज्ञानिक कहानियां	[म० टाल्स्टाय]	।)
(२) पृथ्वी के अन्वेषण की कथायें	[जगपति चतुर्वेदी]	१)
(३) मेरी तिब्बत यात्रा	[राहुल सांकृत्यायन]	१।।)
(४) विज्ञान के महारथी	[जगपति चतुर्वेदी]	१।)

नाटक और प्रहसन

(१) भग्नावशेष	[कुमार हृदय]	।।=)
(२) मुद्रिका	[सद्गुरुशरण अवस्थी]	।।=)
(३) हजामत	[ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल']	१।)
(४) पढ़ो और हँसो	[अ० जहूरबख्श]	।।)

कहानी एवं जीवन-चित्रण

(१) वीरों की सच्ची कहानियां	[अ० जहूरबख्श]	।।=)
(२) आहुतियां	[गणेश पांडेय]	१)
(३) जगमगाते हीरे	[विद्याभास्कर सुकुल]	।।।)
(४) बौद्ध कहानियां	[व्यथित हृदय]	१)
(५) पौराणिक महापुरुष	[केदारथ नाथ गुप्त]	।।।)

(६) पुण्य स्मृतियां	[गांधीजी]	।।।)
(७) बुद्ध और उनके अनुचर	[आनन्द कौसल्यायन]	१)
(८) गांधीजी	[प्रभुदयाल विद्यार्थी]	।।)
(९) भारत के दशरत्न	[केदारनाथ गुप्त]	।।)
(१०) महापुरुषों की जीवन झांकी	[प्रभुदयाल विद्यार्थी]	।।=)

गल्प व उपन्यास

(१) वीर राजपूत	[नाथ माधव]	१)
(२) एकान्त वास	[गणेश पांडेय]	।।।)
(३) पतिता की साधना	[पं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी]	२)
(४) अवध की नवाबी	[चंडीचरण सेन]	२)
(५) मझली रानी	[रामकृष्ण वर्मा]	२
(६) सोने की ढाल	[राहुल सांकृत्यायन]	२।।)
(७) जादू का मुल्क	[,,]	२।।)
(८) रत्नहार	[ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल']	१।।)
(९) कोलतार	[मिर्जा अज़ीमबेग चगताई]	२)
१०) शरीर बीबी	[,,]	२)

स्त्रियोपयोगी

(१) स्त्री और सौन्दर्य	[ज्योतिर्मयी ठाकुर]	३)
(२) महिलाओं की पोथी	[रामबली त्रिपाठी]	१।।)
(३) पाक विज्ञान	[ज्योतिर्मयी ठाकुर]	३)

राजनैतिक

(१) जागृतिका सन्देश	[स्वामी विवेकानन्द]	१)
(२) साम्यवाद ही क्यों ?	[राहुल सांकृत्यायन]	।।)
(३) क्या करें ?	[राहुल सांकृत्यायन]	१)